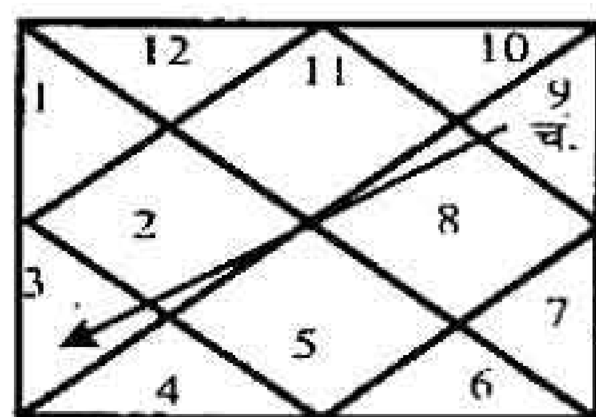
सम्पूर्ण नाश करने में सक्षम होगा। जातक की गिनती समाज के अग्रगण्य व्यक्ति में होगी।

5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को एक से अधिक वाहन एवं मकान दिलायेगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि जातक को करोड़पति बनायेगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु राजसुख में बाधक है। जातक को सरकारी कर्मचारी परेशान करेंगे।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक को उच्च महत्वाकांक्षी बनायेगा। जातक कीर्तिवान् होगा।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में



कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां एकादश स्थान में धनु (सम) राशि में होगा। चंद्रमा अपने घर से छठे स्थान पर होकर 'षडाष्टक योग' बनायेगा। जातक विद्यावान होगा तथा मंत्र-यंत्र-तंत्र विद्या का जानकार होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि पंचम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।

निशानी–लोमेश संहिता अ. 6/श्लोक 2 के अनुसार ऐसे जातक के पास बहुत धन होगा। जातक कीर्तिवान् होगा, गुणवान व साहसी होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति एकादश स्थान (धनु राशि) में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को दिन के 12 से 10 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति एकादश स्थान में होने से जातक का व्यवसाय में लाभ होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह धनुराशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टियां धन स्थान (मीन राशि) पंचम स्थान (मिथुन राशि) एवं षष्टम् स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलत: जातक धनवान होगा। ऋण-रोग

व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक सम्पन्नता पुत्र जन्म के बाद बढ़ेगी। ऐसे जातक की संतति भी धनवान होगी।

3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध जातक को बड़े भाई का सुख देगा। जातक उत्तम संतति का पिता होगा।

4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म कुंभलग्न में है। **'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न के के चंद्र+बृहस्पति की युति एकादश स्थान में धनु राशि के अंतर्गत होगी। यह युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा उसकी दृष्टि पराक्रम स्थान, पंचम भाव एवं सप्तम भाव पर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा तथा प्रथम संतति के बाद जातक का दूसरा भाग्योदय होगा। जातक को व्यापार व्यवसाय से लाभ होगा। जातक के परिजन व मित्र जातक के सहायक रहेंगे। जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा।

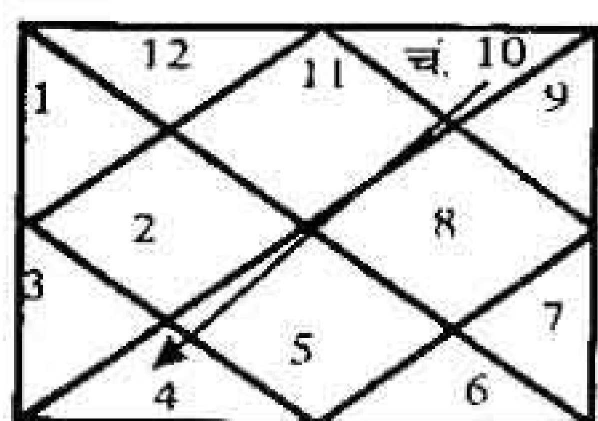
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को बड़ा उद्योगपति बनायेगा।

6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि जातक को व्यापार एवं परिश्रम का लाभ दिलायेगा।

7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु व्यापार में नुकसान एवं बड़े भाई की हानि करायेगा।

8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु व्यापार में उतार-चढ़ाव लाता रहेगा।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में



कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां द्वादश स्थान में मकर (सम) राशि में है। चंद्रमा की इस स्थिति से **'हर्ष नामक विपरीत राजयोग'** बना रहा है। ऐसा जातक धनवान, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त, सम्पन्न व्यक्ति होता है। **'लोमेश संहिता'** अध्याय 6/श्लोक 3 के अनुसार ऐसा जातक सदैव बीमार रहता है तथा मनीषियों से द्वेष रखता है। जातक को माता का सुख नहीं मिलेगा। जातक को देश-परदेश की यात्रा से लाभ होगा।

दृष्टि—द्वादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि अपने ही घर छठे स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलत: जातक गुप्त शत्रुओं से परेशान रहेगा।

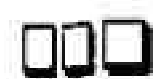
निशानी—जातक को डाईबीटिज की बीमारी, गुप्त रोग होंगे।

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा अनिष्ट फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

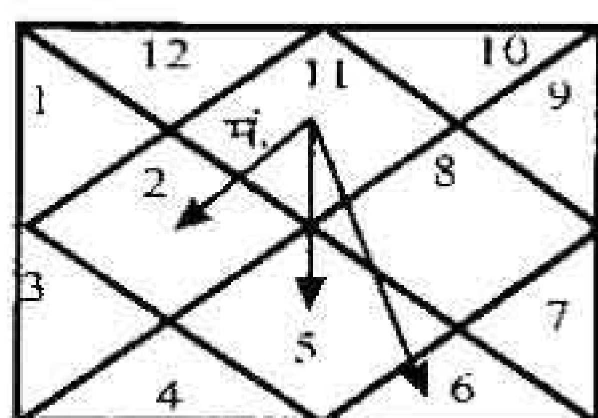
1. **चंद्र+सूर्य—'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वादश स्थान (मकर राशि) में होने के कारण जातक का जन्म कृष्ण अमावस्या को प्रात: 10 से 8 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति द्वादश स्थान में नेत्रपीड़ा एवं व्यर्थ की यात्राएं देगी।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। मकर में मंगल उच्च का होगा। यहां चंद्रमा षष्टेश होकर द्वादश में होने से **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्टम् स्थान (कर्क राशि) एवं सप्तम स्थान (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: ऐसा जातक धनी होगा। ऋण-रोग एवं शत्रुओं का सम्पूर्ण नाश करने में सक्षम होगा पर जातक का आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध **'संतानहीन योग'** एवं **'सरल नामक विपरीत राजयोग'** करायेगा। ऐसा जातक धनी होगा। ऐश्वर्य सम्पन्न होगा। पर उसे संतान की चिंता रहेगी।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म कुंभलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में चंद्र+बृहस्पति की यह युति द्वादश भाव मकर राशि के अंतर्गत है। बृहस्पति+चंद्र की यह युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति यहां द्वादश भाव में नीच का होगा। जहां से बृहस्पति सुखस्थान, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: धन में कमी, लाभ में कमी महसूस करेंगे। फिर भी जातक को ऋण, रोग व शत्रु को भय नहीं रहेगा। जातक दीर्घायु होगा। उसे प्राकृतिक, आकस्मिक आपदाओं से बचाव होगा। जातक को वाहन सुख मिलेगा एवं भौतिक संसाधनों की प्राप्ति सहज में होती रहेगी। जातक को कोई भी वस्तु जीवन में आसानी से नहीं मिलेगी, सफलता निश्चित है पर संघर्ष के बाद।
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। ऐसा जातक जीवन में काफी कष्ट-उठायेगा।
6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** एवं **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी, मानी होगा पर परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु भारी आर्थिक परेशानियां एवं दिक्कतें पैदा करेगा।

8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक को धार्मिक एवं परोपकारी जीवन जीयेगा।



कुंभलग्न में मंगल की स्थिति

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में



कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां प्रथम स्थान में कुंभ (शत्रु) राशि में है। ऐसा जातक उग्र स्वभाव का स्वतंत्र प्रेमी, महत्वाकांक्षी व साहसी होता है। मंगल की इस स्थिति में कुण्डली **मांगलिक** बनती है। मंगल की यह स्थिति वैवाहिक सुख के लिए ठीक नहीं मानी गई है। जातक को मकान का सुख उत्तम मिलेगा। जातक शत्रु का पराक्रम नष्ट करने में सक्षम होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ मंगल की दृष्टि चतुर्थ स्थान (वृष राशि), सप्तम स्थान (सिंह राशि) एवं अष्टम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक की माता छोटी उम्र में गुजर जावें या बीमार रहे। विवाह में अनपेक्षित विलम्ब संभव है। जातक को अकस्मात् दुर्घटना का भय रहेगा।

निशानी–ऐसे जातक के शरीर या चेहरे पर गिरने से, शस्त्र से स्थाई चोट का निशाना बना हुआ मिलेगा। **'पद्मसिंहासन योग'** के कारण जातक निम्न परिवार में जन्म लेकर भी उच्च पद को प्राप्त करेगा।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

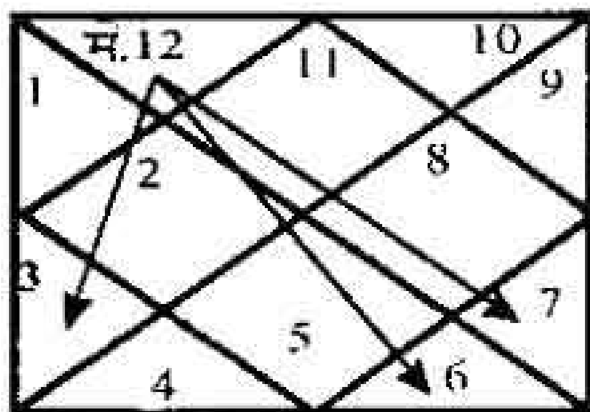
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ स्थान (वृष राशि), सप्तम भाव (सिंह राशि) एवं अष्टम भाव (कन्या राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक धनवान होगा। उसको भौतिक

उपलब्धियों सुख-साधनों की प्राप्ति होगी। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा परन्तु आर्थिक उन्नति विवाह के बाद ही होगी।

2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य होने से जातक की पत्नी सुंदर, आकर्षक व धनवान होगी। जातक का दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को प्रखर बुद्धिशाली एवं व्यापार प्रिय बनायेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति जातक को भाई-कुटम्बी एवं मित्रजनों से लाभ दिलायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र होने से जातक को उत्तम वाहन एवं भवन का सुख मिलेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि स्वगृही होने से '**शश योग**' बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु जातक को उच्छंखृल बनायेगा। ऐसा जातक किसी के नियंत्रण में नहीं रहता।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक को प्रभावशाली व्यक्तित्व देगा। जातक लड़ाकू होगा।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में



कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां द्वितीय स्थान में मीन (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक की वाणी कठोर होगी तथा जातक धन भी कठिनता से कमायेगा। जातक की आंखें कमजोर होंगी। जातक की अपने भाई-बहनों के साथ कम पटेगी। कुटुम्ब में अशान्ति रहेगी। जातक को यश, धन, पद-प्रतिष्ठा इत्यादि का सामान्य लाभ होगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ मंगल की दृष्टि पंचम भाव (मिथुन राशि), अष्टम भाव (कन्या राशि) एवं भाग्य स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक की प्रथम संतति शल्य चिकित्सा से होगी। संतान संबंधी चिंता रहेगी। अकस्मात् दुर्घटना का भय रहेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिल पायेगी।

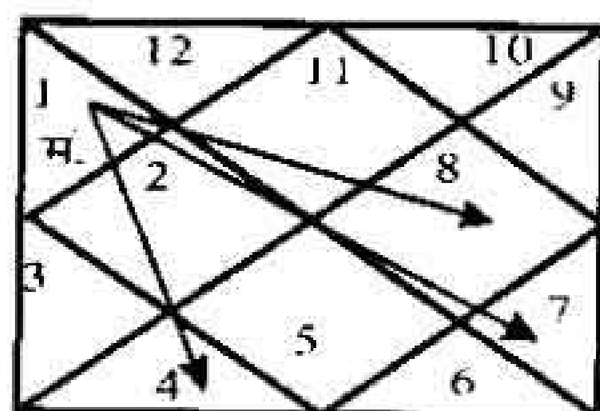
निशानी–ऐसे ज्योतिषी (जातक) द्वारा दी गई अशुभ भविष्यवाणियां सचोट सच साबित होंगी। वकीलों व डॉक्टरों के लिए मंगल की यह स्थिति शुभ है। उनकी अंतर्प्रेरणा व सोच सही होगी।

दशा–मंगल की दशा मारक का काम करेगी। मंगल में सूर्य एवं बृहस्पति के अन्तर विशेष मारक होंगे।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह की दृष्टि पंचम स्थान (मिथुन राशि), अष्टम स्थान (कन्या राशि) एवं भाग्य स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक धनवान तथा सौभाग्यशाली भी होगा एवं लम्बी उम्र का मालिक होगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद ही होगी।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को धनी ससुराल देगा। जातक की भाषा कड़क होगी।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को प्रखर वक्ता बनायेगा। जातक की सोच नकारात्मक होगी।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति **'भ्रातृमूल धनयोग'** एवं **'राजमूल धनयोग'** बनायेगा। ऐसे जातक को भाइयों से एवं सरकार से धन की प्राप्ति होगी।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र उच्च का होकर जातक को महाधनी एवं सौभाग्यशाली बनायेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को धनी, घमण्डी एवं षड्यंत्रकारी बनायेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु, धन के घड़े में छेद एवं आर्थिक दिक्कतें देगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करायेगा।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में



कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां स्वगृही होगा। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी होगा। जातक युद्ध प्रिय एवं

दृढ़ निश्चयी होता है। जातक को भूमि-भवन, ठेकेदारी के कार्यों में फायदा होगा। जातक के संभवतः तीन भाई होंगे। जातक के मित्र जातक के लिए मददगार साबित होंगे।

दृष्टि–तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि छठे भाव (कर्क राशि), भाग्य भवन (तुला राशि) एवं दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। ऐसे जातक के नौकर ठीक नहीं होंगे। मामा के घर से संबंध ठीक नहीं होंगे। जातक का भाग्योदय 28 वर्ष की आयु के बाद होगा। दशम भाव पर दृष्टि होने से जातक को मंगल संबंधी कार्यों से लाभ होगा।

निशानी–ऐसा जातक स्व प्रयत्न से आगे बढ़ता है तथा जन्म स्थान से दूर जाकर अपनी किस्मत चमकाता है।

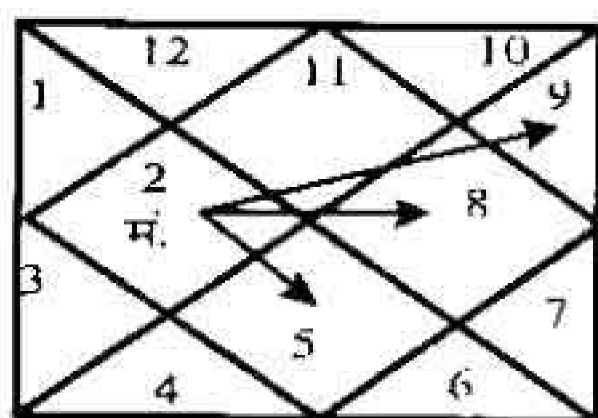
दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां दोनों ग्रह तृतीय स्थान में मेष राशि के होंगे। मेष राशि में मंगल स्वगृही होगा। फलतः **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्टम भाव (कर्क राशि), भाग्य भाव (तुला राशि) एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक यहां धनवान होगा तथा ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक परम सौभाग्यशाली होगा तथा कोर्ट-कचहरी में सदैव विजय प्राप्त करने वाला एवं भाई-बहनों से युक्त होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। जातक महान पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल पराक्रमी एवं धनवान होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को भाई+बहन का सुख देगा। जातक स्वयं एवं उसके रिश्तेदार सुसभ्य एवं शिक्षित होंगे।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति **'राजमूल धनयोग'** बनायेगा। ऐसे जातक को राज सरकार से वित्तीय सहायता व सम्मान मिलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ देगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु भाइयों में विग्रह-विद्वेष उत्पन्न करेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक को जनता से यश एवं कीर्ति दिलायेगा।

विशेष–मंगल तीसरे एवं शुक्र चौथे स्थान में हो तो जीवन में राजयोग शक्तिशाली बना रहेगा।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में



कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतोय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां चतुर्थ स्थान में वृष (सम राशि) में होगा। मंगल यहां **'मांगलिक योग'** बनायेगा। ऐसा जातक आप अकेला न होगा। उसके छोटे भाई-बहन जरूर होंगे पर उनसे बनेगी नहीं। जातक के विलम्ब विवाह का योग बनता है। जातक को मकान सुख उत्तम मिलेगा। यहां **'पद्मसिंहासन योग'** के कारण जातक निम्न परिवार में जन्म लेकर भी कीचड़ में कमल की तरह उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत मंगल की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि), दशम भाव (वृश्चिक राशि) एवं एकादश भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को जीवन साथी उत्तम (अच्छा) मिलेगा, परन्तु उनमें परस्पर मतभेद रहेगा। जातक को मंगल के धंधों से लाभ होगा। एकादश स्थान पर दृष्टि होने के कारण जातक को अच्छे मित्र मिलेंगे।

निशानी–ऐसे जातक स्वार्थी होगा। **'लोमेश संहिता'** के अनुसार ऐसा जातक असत्यवक्ता होता है तथा अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकता है।

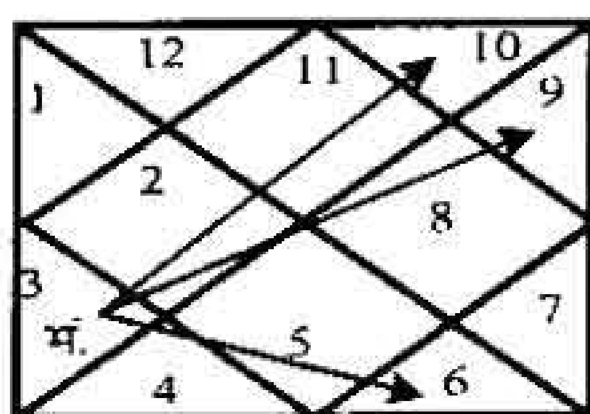
दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। वृष राशि में चंद्रमा उच्च का होकर **'यामिनीनाथ योग'** बनायेगा। मंगल यहां दिक्बली होने से **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम (सिंह राशि), दशम भाव (वृश्चिक राशि) एवं एकादश भाव (धनु राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक महाधनी तथा व्यापार-व्यवसाय व उद्योग में प्रतिष्ठित होगा राज्य (सरकार) या राजनीति में पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। जातक का आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को पत्नी से स्थाई सम्पत्ति का लाभ दिलायेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को उच्च शिक्षा दिलायेगा। जातक के पास निजी भवन होगा।

4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति माता से धन दिलायेगा। जातक को भूमि से लाभ होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ स्वगृही शुक्र '**मालव्य योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। उसके पास अनेक वाहन होंगे।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को परिश्रम का लाभ एवं सांसारिक सुखों को दिलायेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु की युति माता के लिए घातक है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु मातृभूमि छुड़ायेगा।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में



कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां पंचम स्थान में मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक प्रायः डॉक्टर, इंजीनियर, वकील अथवा तर्कशास्त्री होगा। जातक के मित्र अच्छे होंगे। छोटे भाई के लिए यह मंगल शुभ फलदायक है। यहां '**पद्मसिंहासन योग**' के कारण जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

दृष्टि–पंचमस्थ मंगल की दृष्टि अष्टम भाव (कन्या राशि), एकादश भाव (धनु राशि) एवं द्वादश भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक को अकस्मात दुर्घटना का भय रहेगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक व्यर्थ के कार्य में फालूत खर्च बहुत करेगा।

निशानी–जातक के तीन पुत्र होंगे परन्तु ज्येष्ठ संतति की मृत्यु होगी। 'लोमेश संहिता' के अनुसार ऐसे जातक के पुत्र जरूर होंगे। जातक स्वयं धनवान होगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा पराक्रम बढ़ायेगी तथा उन्नति दायक होगी।

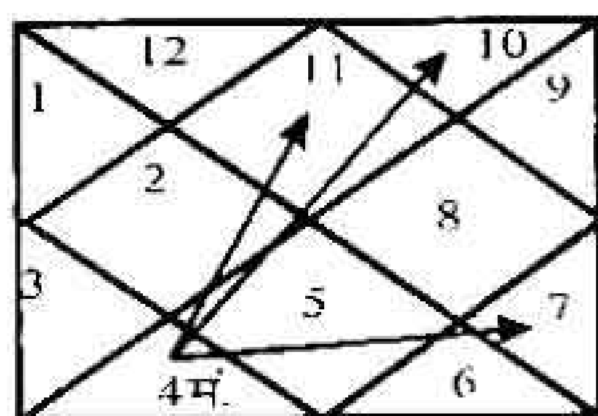
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (कन्या राशि), लाभ स्थान (धनु राशि) एवं व्यय भाव (मकर राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनी,

प्रजावान, लम्बी उम्र का स्वामी होगा। जातक अच्छे व्यापार व्यवसाय का स्वामी होगा। परन्तु जीवन में खर्च की बाहुल्यता रहेगी।

2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य जातक को पुत्र संतति अवश्य देगा। जातक विद्यावान होगा।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जातक को दो कन्या, तीन पुत्र देगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ बृहस्पति जातक को उच्च शिक्षा देगा तथा राजकीय पद-प्रतिष्ठा दिलायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र भौतिक सुखों में वृद्धि करेगा। जातक को भूमि लाभ होगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि जातक को परिश्रम का लाभ दिलायेगा। जातक तकनीकि व्यक्तित्व एवं विद्या का धनी होगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ की युति राहु पुत्र संतति में बाधक है।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु संतति सुख देगा पर धार्मिक अनुष्ठान अनिवार्य है।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति षष्टम स्थान में



कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां छठे स्थान में नीच राशि का होगा। कर्क राशि के 20 अंशों में मंगल परम नीच का होता है। मंगल के कारण यहां **'पराक्रम भंगयोग'** एवं **'राजभंग योग'** बनेगा। ऐसे जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलती। जातक के जन्म के बाद पिता को थोड़ा कष्ट होगा। जातक की बाईं आंख कुछ कमजोर होगी।

दृष्टि—षष्टम भावगत मंगल की दृष्टि भाग्य स्थान (तुला राशि), व्यय भाव (मकर राशि) एवं लग्न भाव (कुंभ राशि) पर होगी। जातक का भाग्य कमजोर होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। परिश्रम निष्फल होंगे।

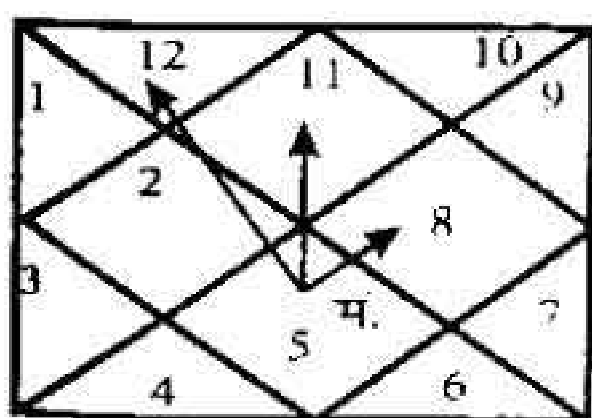
निशानी—'लोमेश संहिता' के अनुसार जातक का भाई जातक से शत्रुता रखता है। उसे मामा का सुख प्राप्त नहीं होगा।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां षष्टम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। कर्क राशि में चंद्रमा स्वगृही एवं मंगल नीच का होने से '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। षष्टेश के छठे स्थान में स्वगृही होने से '**हर्षनामक विपरीत राजयोग**' भी बनेगा। फलत: जातक धनवान होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान (तुला राशि), व्यय भाव (मकर राशि) एवं लग्न भाव (कुंभ राशि) पर होगी। फलत: जातक भाग्यशाली एवं लगातार उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ने वाला होगा। परन्तु जातक अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का जातक होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य '**विवाहबाधा योग**' बनाता है। प्रथमत: जातक का विवाह विलम्ब से होगा। विवाह होने पर भी वैवाहिक सुख में कुछ न कुछ कमी बनी रहेगी।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध '**संततिहीन योग**' एवं '**सरलनामक विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी, मानी एवं समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। जातक को आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र '**सुखभंग योग**' एवं '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु पग-पग पर बाधाएं आयेंगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**विमल नामक विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी होगा, परन्तु उसे परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु होने से जातक के गुप्त व प्रकट शत्रु बढ़ेंगे।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक को गुप्त रोग देगा।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में



कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां सप्तम स्थान में सिंह (मित्र) राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति से कुण्डली '**मांगलिक**' होगी। ऐसे जातक को दो विवाह हो सकते हैं। जातक को नौकर-चाकर अच्छे मिलेंगे। छोटे भाई-बहनों के लिए मंगल ठीक है। भागीदारी व्यवसाय के लिए भी यह मंगल ठीक है। यहां

'पद्मसिंहासन योग' के कारण जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ मंगल की दृष्टि दशम भाव (वृश्चिक राशि), लग्न भाव (कुंभ राशि) एवं धन भाव (मीनराशि) पर होगी। फलत: जातक का राज (सरकार) में प्रभाव होगा। जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक धनी होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 5 के अनुसार तृतीयेश सातवें स्थान में हो तो जातक की मृत्यु राजदण्ड से होगी।

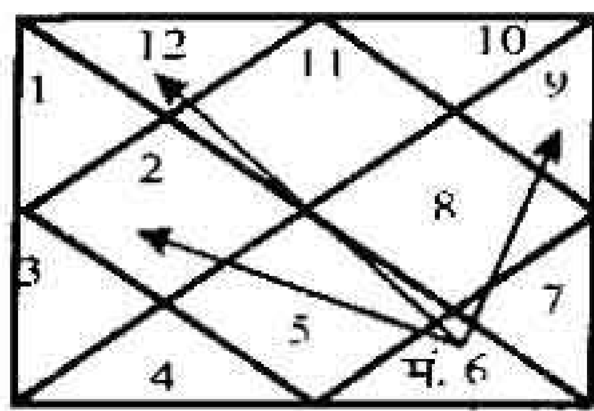
दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (वृश्चिक राशि), लग्न स्थान (कुंभ राशि) एवं धन स्थान (मीन राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनी होगा। जातक उद्यम करके धन कमायेगा तथा निरन्तर उन्नति मार्ग की ओर बढ़ता रहेगा। जातक की आर्थिक स्थिति में सुधार विवाह के बाद होगा। जातक का राजनीति में भी वर्चस्व रहेगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य स्वगृही होगा। जातक का जीवनसाथी प्रभावशाली एवं कमाऊ होगा। जातक को ससुराल से लाभ मिलेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से जातक को पत्नी व संतान के उत्तम सुख की प्राप्ति होगी।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति उत्तम दाम्पत्य सुख के साथ धन की प्राप्ति करायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक को रंगीन मिजाज का जीवन साथी देगा। जातक कामी होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि **'लग्नाधिपति योग'** बनायेगा। जातक के बिगड़े कार्य सुधरेंगे तथा परिश्रम निरर्थक नहीं जायेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु विलम्ब विवाह अथवा विवाह के बाद दाम्पत्य सुख में परेशानी खड़ी करेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु विवाह में विषाद उत्पन्न करेगा।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में

कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल



यहां अष्टम स्थान में कन्या (शत्रु) राशि में होगा। यहां कुण्डली **'मांगलिक'** होगी। मंगल की इस स्थिति के कारण **'पराक्रम भंगयोग'** एवं **'राजभंग योग'** बनेगा। जातक का वैवाहिक जीवन दु:खी होगा तथा छोटे भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा। जातक को व्यापार में नुकसान होगा। कुटुम्ब सुख कमजोर रहेगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ स्थान (धनु राशि), धन भाव (मीन राशि) एवं पराक्रम भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक को रोजी-रोजगार की प्राप्ति हेतु दिक्कतें आयेंगी। जातक की भाषा कड़वी होगी। जातक को भाइयों से लाभ नहीं होगा।

निशानी– **'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 5 के अनुसार तृतीयेश यदि आठवें हो तो जातक की मृत्यु राजदण्ड से होगी।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

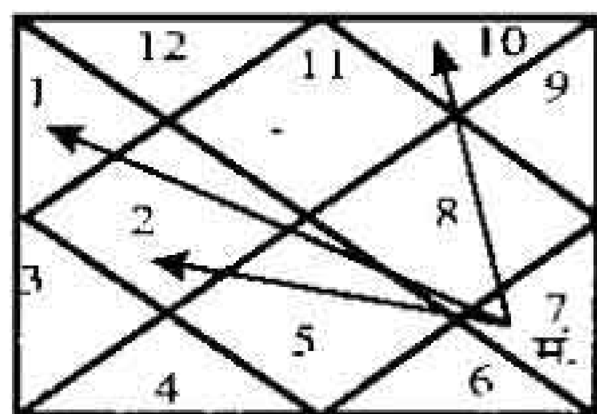
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। कन्या राशि में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा पर षष्टेश होकर चंद्रमा के अष्टम स्थान में जाने से **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बनेगा। मंगल के कारण **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'राज्यभंग योग'** भी बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान (धनु राशि), धन स्थान (मीन राशि) एवं पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। निसन्देह मंगल की यह स्थिति ज्यादा सुखद नहीं है। जातक धनवान तो होगा पर भाई कुटम्बियों से त्रस्त रहेगा। कोर्ट-कचहरी में शत्रु परेशान करते रहेंगे।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य **'विवाहभंग योग'** बनाता है। जातक के जीवन में अविवाह की स्थिति बनेगी अथवा विवाह होने पर भी गृहस्थ सुख की ओर से जातक उदासीन रहेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को विवाह सुख एवं संतान सुख दोनों के लिए बाधा खड़ी करेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा। ऐसा जातक धन प्राप्ति हेतु किये गये प्रयत्नों में बाधा महसूस करेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र होने से **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** की सृष्टि होगी। ऐसा जातक भाग्योदय व उन्नति न होने के कारणों को लेकर परेशान रहेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** एवं **'विमलनामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा। ऐसा जातक धनवान तो होगा पर परिश्रम सार्थक नहीं होगा।

7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु होने से जातक के जीवन में **'द्विभार्या योग'** बनता है।

8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु **'दुर्घटना योग'** बनाता है।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में



कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां नवम स्थान में तुला (सम) राशि में है। यह मंगल छोटे भाई के लिए ठीक नहीं होगा। माता का सुख भी कमजोर होगा, माता बीमार रहेगी। जातक को पिता का सुख फिर भी ठीक मिलेगा, पर पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। जातक पराक्रमी होगा। उसे धन, यश, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति बराबर होगी। यहां **'पद्मसिंहासन योग'** के कारण जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

दृष्टि—नवमस्थ मंगल की दृष्टि व्यय भाव (मकर राशि), पराक्रम स्थान (मेष राशि) एवं सुख स्थान (वृष राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का तथा पराक्रमी होगी। जातक को मकान-वाहन का सुख प्राप्त होगा।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 9 के अनुसार जातक का भाग्योदय स्त्री के द्वारा होगा।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चंद्र**—यहा नवम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (खर्च स्थान), पराक्रम स्थान (मेष राशि) एवं चतुर्थ स्थान (वृष राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनवान, पराक्रमी तथा खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक को जीवन में सभी प्रकार के भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति सहज में ही हो जायेगी।

2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य जातक को विवाह के बाद भाग्योदय के उत्तम अवसर प्रदान करेगा।

3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध होने से जातक विद्या व ज्ञान के बल से भाग्योदय की ओर आगे बढ़ेगा। प्रथम संतति के बाद जातक का विशेष भाग्योदय होगा।

4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति होने से भूमि से पैसा मिलेगा। जातक को मित्रों से लाभ रहेगा।

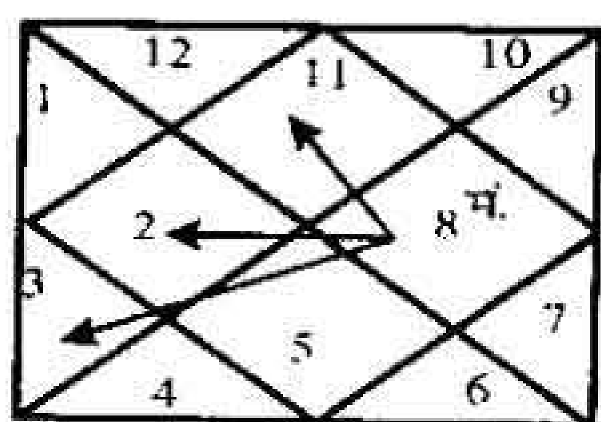
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ स्वगृही शुक्र जातक को माता एवं वाहन का सुख उत्तम तरीके से दिलायेगा।

6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि उच्च का होने से जातक धनी-मानी व्यक्ति होगा तथा अपने कठोर परिश्रम से अपनी किस्मत चमकायेगा।

7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु जातक के भाग्य में रुकावट डालेगा।

8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु की युति कीर्तिदायक है।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में



कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां दशम स्थान में स्वगृही एवं दिक्बली होगा। जिसके कारण **'कुलदीपक योग'** एवं **'रुचक योग'** बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा। जातक शत्रुहन्ता होगा एवं पिता का सम्मान करेगा। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। यहां **'पद्मसिंहासन योग'** के कारण जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

दृष्टि–दशमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न स्थान (कुंभ राशि), चतुर्थ भाव (वृष राशि) एवं पंचम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का लाभ तथा माता-पिता का सुख मिलेगा। जातक को पुत्र संतति भी होगी।

निशानी– **'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 2 अनुसार जातक की पत्नी बड़ी क्रूर व क्रोधी स्वभाव की होगी।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा अत्यंत शुभ फल देगी।

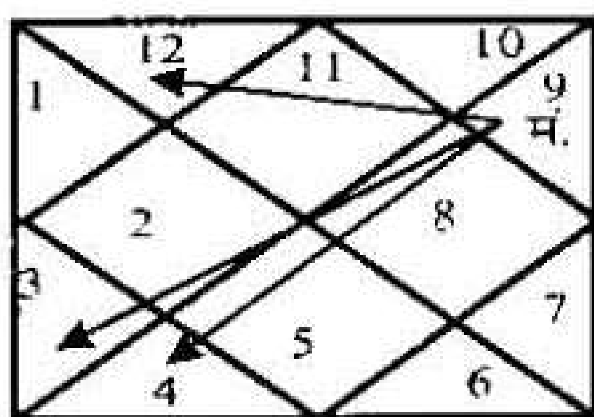
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। मंगल यहां स्वगृही एवं चंद्रमा नीच का होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। मंगल दिक्बली होकर **'कुलदीपक योग'** भी बनायेगा। **'पद्मसिंहासन योग'** होने से यहां **महालक्ष्मी योग** की सृष्टि हुई। फलत: ऐसा जातक महाधनी होगा। दोनों ग्रह की दृष्टि लग्नस्थान (कुंभ राशि), चतुर्थ भाव (वृष राशि) एवं पंचम भाव

(मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक निरन्तर उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ता हुआ उत्तम वाहन व भौतिक सुखों को प्राप्त करेगा। जातक की संतान भी प्रतिष्ठित होगी।

2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को तेजस्वी व्यक्तित्व देगा। जातक की विशेष उन्नति विवाह के बाद होगी।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को दो से अधिक भवनों का स्वामी बनायेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति भाइयों से, भूमि से धन-प्राप्ति के अवसर दिलायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र माता की सम्पत्ति दिलायेगा। जातक के पास दो से अधिक वाहन होंगे।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि धन प्राप्ति हेतु किये गये प्रयासों में सफलता देगा। जातक करोड़पति होगा। आवक के जरिए दो-तीन प्रकार के रहेंगे।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु वाहन दुर्घटना के गंभीर योग करायेगा। तेज गति के वाहन से बचे।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु दुर्घटना के हल्के योग करायेगा।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में



कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां एकादश स्थान में धनु (मित्र) राशि में होगा। जातक को भाई-बहनों व मित्रों का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक की भाषा कठोर होगी। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगा। जातक उद्योगपति होगा।

दृष्टि–एकादश स्थान में स्थित मंगल की दृष्टि धन भाव (मीन राशि), पंचम भाव (मिथुन राशि) एवं अष्टम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक को धन तथा संतान की प्राप्ति होगी। जातक शत्रुहन्ता होगा।

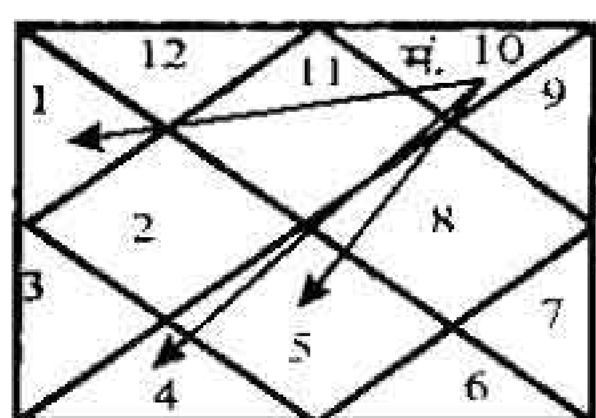
निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 11 के अनुसार ऐसा जातक धनवान, उद्यमी, चतुर व सुखी होता है।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा जातक को मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टियां धन स्थान (मीन राशि), पंचम स्थान (मिथुन राशि) एवं षष्टम् स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक धनवान होगा तथा ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक सम्पन्नता पुत्र जन्म के बाद बढ़ेगी। ऐसे जातक की संतति भी धनवान होगी।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य विवाह के उपरान्त जातक के धंधे-व्यापार को बढ़ायेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध विद्या एवं संतान का भरपूर सुख देगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति धन प्राप्ति के सरकारी स्रोत खोलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक का भाग्योदय नवीन वाहन खरीदने के बाद करायेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को उद्योगपति बनायेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु लाभ प्राप्ति में बाधक का कार्य करेगा। जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु व्यापार में उतार-चढ़ाव लाता रहेगा।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में



कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां द्वादश स्थान में उच्च का होगा। मकर राशि के 28 अंशों में मंगल परमोच्च का होता है। मंगल के कारण यहां कुण्डली 'मांगलिक' बनी है। मंगल की इस स्थिति के कारण **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनेगा। जातक का वैवाहिक जीवन कष्टमय होगा। जातक व्यसनी होगा। जातक की दाईं आंख कमजोर होगी। जातक को विदेश यात्रा से लाभ होगा।

दृष्टि–द्वादशस्थ मंगल की दृष्टि पराक्रम स्थान (मेष राशि), छठे भाव (कर्क राशि) एवं सप्तम भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक के मित्र उसे दगा देंगे। जातक के शत्रु नष्ट होंगे। जातक का अपने जीवनसाथी के साथ मनमुटाव होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 8 के अनुसार तृतीयेश यदि बारहवें हो तो जातक का ज्येष्ठ पुत्र जीवित नहीं रहता।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

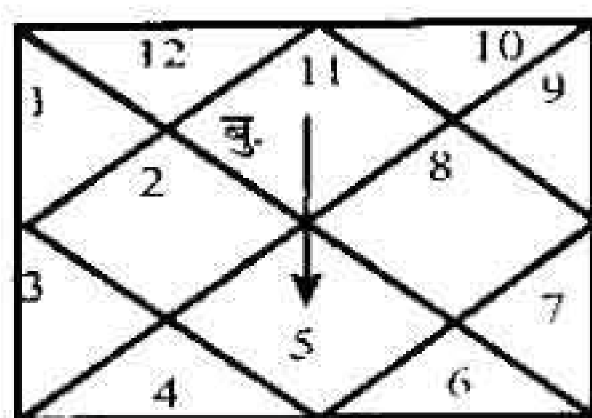
मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। मकर में मंगल उच्च का होगा। यहां चंद्रमा षष्टेश होकर द्वादश में होने से '**हर्ष नामक विपरीत राजयोग**' बनायेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्टम् स्थान (कर्क राशि) एवं सप्तम स्थान (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: ऐसा जातक धनी होगा ऋण-रोग एवं शत्रुओं का सम्पूर्ण नाश करने में सक्षम होगा पर जातक का आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य '**विवाहभंग योग**' बनाता है। जातक का विवाह देरी से होगा अथवा विवाह का सुख नहीं होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध '**संतानहीन योग**' बनाता है। जातक को विद्या का लाभ नहीं मिलेगा। संतान विषयक चिंता बनी रहेगी।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनायेगा। जातक खर्च को लेकर परेशान रहेगा। यद्यपि '**नीचभंग राजयोग**' उत्तम होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र '**सुखहीन योग**' एवं '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक '**सेक्स स्कैण्डल**' में फंसेगा तथा वह कामी होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनायेगा। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक खर्चीले स्वभाव के कारण ऋणी होगा तथा परेशान रहेगा, पर विदेश में कमायेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु जातक को उद्दण्ड व गलत कार्यों को करने का दुस्साहस उत्पन्न करेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक को दुस्साहसी बनायेगा परन्तु जातक धर्मप्रिय, सिद्धान्तप्रिय होगा।

❑❑❑

कुंभलग्न में बुध की स्थिति

कुंभलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में



कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक तथा शुभ फलदायक है। बुध यहां प्रथम स्थान में कुंभ (मित्र) राशि में है। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। ऐसा जातक प्रखर बुद्धिशाली होगा। जातक सुगठित देह व सुन्दर शरीर वाला होगा। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। बुध 'दिग्बली' होने से जातक दार्शनिक होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ बुध की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि) पर है। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 6 के अनुसार अष्टमेश यदि लग्न में हो तो जातक के दो विवाह होते हैं।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा जातक को सुन्दर जीवनसाथी देगा। जातक की बुद्धि कल्पना मिश्रित होने से जातक **'प्लानिंग मास्टर'** होगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। प्रथम स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को देखेंगे जो कि सूर्य का स्वयं का घर है। ऐसा जातक बुद्धिशाली तथा धनवान होगा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक अपने कुल-कुटुम्ब का नाम रोशन करेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक को व्यवहारिक बनायेगा। जातक परिवार-कुटुम्ब को साथ लेकर चलेगा। जातक की नौकरी अच्छी होगी।

4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति विद्या से लाभ दिलायेगा। जातक धनी होगा।

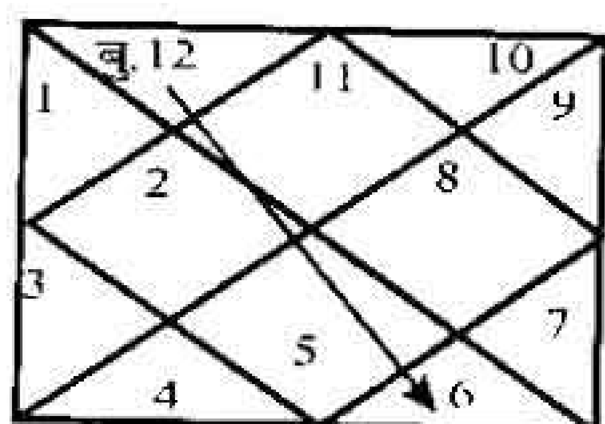
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र माता का सुख देगा। जातक को वाहन एवं मकान का सुख प्राप्त होगा।

6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि यहां संतान सुख में बाधक है।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक की बुद्धि कुण्ठित करेगा।

8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को यशस्वी बनायेगा।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में



कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश हैं। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक तथा शुभ फलदायक है। बुध यहां द्वितीय स्थान में नीच का होगा। मीन राशि के 15 अंशों में बुध परम नीच का होगा। ऐसा जातक धनी होगा। जातक की भाषा नरम होगी। जातक को कौटुम्बिक सुख प्राप्त होगा। जातक को उत्तम विद्या सुख मिलेगा। जातक को उच्च पद प्रतिष्ठा मिलेगी।

दृष्टि–द्वितीयस्थ बुध की दृष्टि अष्टम भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक की आयु लम्बी होगी। जातक वाक्पटु होगा।

निशानी– **'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 7 के अनुसार ऐसे जातक को खोया हुआ धन वापस नहीं मिलता।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

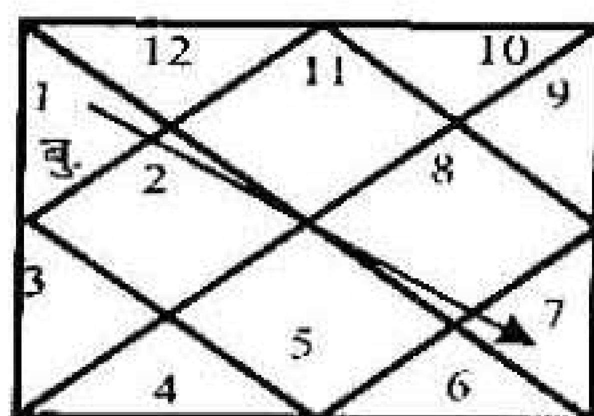
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा जातक की वाणी में हकलाहट देगा।

2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। द्वितीय स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुत: सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश सूर्य के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां नीच राशि का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिशाली एवं धनवान होगा। जातक की आमदनी के जरिए दो-तीन प्रकार के रहेंगे। विवाह के बाद जातक धनवान होगा। जातक की आयु लम्बी होगी। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक को ओजस्वी वक्ता बनायेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक महाधनी होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। जातक महाधनी होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि पुरुषार्थ द्वारा धन की प्राप्ति करायेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु धन के घड़े में छेद का काम करेगा। रुपया एकत्रित नहीं होगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु आर्थिक विषमताएं देगा।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में



कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक तथा शुभ फलदायक है। बुध यहां तृतीय स्थान में मेष (सम) राशि में है। ऐसा जातक पराक्रमी होता है। जातक का चरित्र संदेहास्पद होता है। जातक को भाई-बहनों से वांछित सम्मान नहीं मिलता। जातक विद्या-बुद्धि, दाम्पत्य सुख, यश व धन का अभाव महसूस करेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ बुध की दृष्टि भाग्य भवन (तुला राशि) पर होगी। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी पर जातक उसका सुख भोग न सकेगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 3 के अनुसार अष्टमेश तृतीय में हो तो जातक चुगलखोर होगा एवं भाई रहित होता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

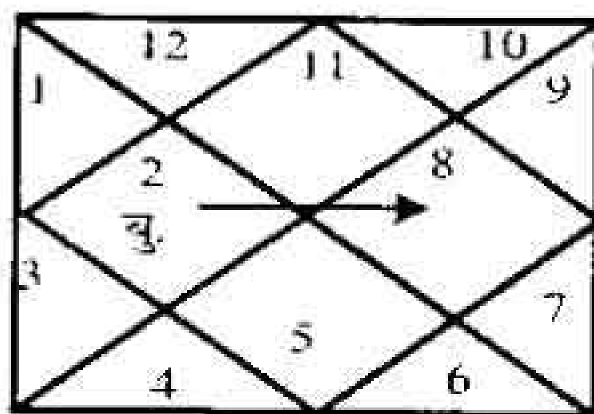
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा भाई-बहनों में मनमुटाव करायेगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। तृतीय स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। जहां बैठ कर दोनों ग्रह भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक महान् पराक्रमी होगा तथा उसे भाई-बहनों, मित्र-परिजनों का सहयोग जीवन में मिलता रहेगा। जातक को

पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक धनवान होगा तथा समाज में अग्रगण्य लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक को प्रबल पराक्रमी बनायेगा। जातक जनसम्पर्क से लाभ होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक को बुद्धिबल से धनवान बनायेगा। जातक को भाई-बहनों व परिजनों से सहयोग मिलता रहेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक भाग्यशाली बनायेगा। जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि नीच का होकर जातक को उच्च महत्वाकांक्षी बनायेगा तथा उसे कठोर परिश्रम का अल्प फल मिलेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक का भाइयों से विग्रह करायेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को महान् पराक्रमी एवं यशस्वी बनायेगा।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में



कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक तथा शुभ फलदायक है। बुध यहां चतुर्थ स्थान में वृष (मित्र) राशि में है। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। पंचमेश केन्द्र में होने से जातक को उच्च विद्या Educational Degree मिलेगी। जातक साहित्य-संगीत, अभिनय के क्षेत्र में आगे बढ़ेगा। कम्प्यूटर व मेडिकल लाईन में सफलता मिलेगी। जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी होगा तथा उसे संतान सुख उत्तम मिलेगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत बुध की दृष्टि दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। ऐसा जातक व्यापार प्रिय एवं साहित्कार होगा। ऐसा जातक प्रोफेसर, मैनेजर, कम्प्यूटर जैसे बुद्धियुक्त धंधों से कमाता है।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 3 के अनुसार अष्टमेश चौथे हो तो जातक चुगलखोर होगा तथा माता-पिता से खुन्दक रखेगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–यहां बुध के साथ चंद्रमा उच्च का होगा तथा **'यामिनीनाथ योग'** बनायेगा। जातक की रचनात्मक शक्ति (Creative Energy) बढ़ जायेगी।

2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। चतुर्थ स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध चतुर्थ स्थान में होने से **'कुलदीपक योग'** बनेगा। यहां से दोनों ग्रह दशम भाव को देखेंगे। फलतः जातक पढ़ा-लिखा एवं पराक्रमी होगा तथा बुद्धि तेज रहेगी। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। भवन का सुख भी उत्तम होगा। जातक अपने कुल का नाम उसे उत्तम कार्यों के कारण रोशन करेगा एवं वह समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल माता-पिता का सुख देगा। जातक का निजी मकान उत्तम श्रेणी का होगा।

4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति माता से धन दिलायेगा। जातक के पास उत्तम वाहन होगा।

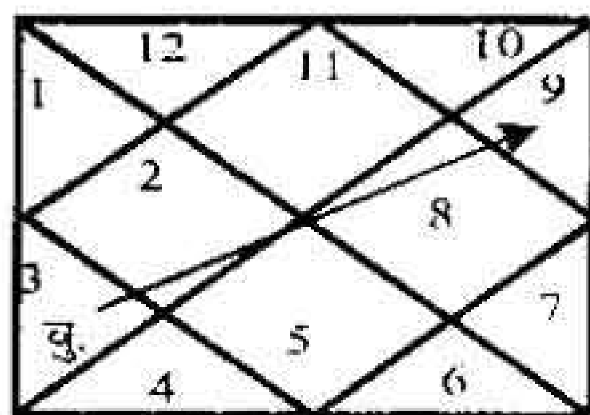
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र स्वगृही होने से **'मालव्य योग'** बनेगा। जातक राज्य तुल्य पराक्रमी होगा। उसकी रचनात्मक शक्ति बहुत बढ़ी-चढ़ी होगी।

6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि परिश्रम का लाभ देगा। जातक शिक्षित होगा।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु माता की मृत्यु अल्प आयु में देगा।

8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु भौतिक सुखों में बाधक है।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में



कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक तथा शुभ फलदायक है। बुध यहां पंचम स्थान में स्वगृही होगा। बुध यहां 21 से 30 अंशों के मध्य विशेष बलवान होता है। बुध की इस स्थिति से जातक उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करेगा। जातक की संतति उत्तम तथा शिक्षित होगी। जातक का मित्र 'सर्किल' उत्तम श्रेणी का होगा। जातक यंत्र, मंत्र, तंत्र, आयुर्वेद इत्यादि गूढ़ विद्याओं का जानकार होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ बुध की दृष्टि एकादश स्थान (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को धंधे व्यापार में खूब लाभ होगा। जातक को शेयर बाजार, रेस, अंक, केसिनो के प्रति आकर्षण रहेगा।

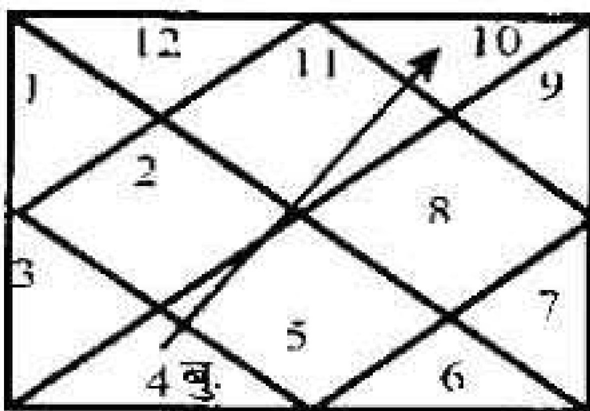
निशानी– 'लोमेश संहिता' अध्याय 8/श्लोक 5 के अनुसार अष्टमेश यदि पांचवें स्थान पर हो तो ऐसे जातक को सदैव धन की कमी सतायेगी।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा अति उत्तम फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा विद्या के संघर्ष के बाद उत्तम सफलता देगा।
2. **बुध+सूर्य**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। पंचम स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। पंचम स्थान में बुध स्वगृही होकर लाभ भवन को देखेगा। फलतः जातक बुद्धिमान एवं शिक्षित होगा। जातक प्रजावान होगा। कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। जातक की संतति भी शिक्षित रहेगी। जातक समाज का गणमान्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल होने से जातक तकनीकी एवं मैकेनिकल कार्यों में रुचि रखेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति विद्या में धन लाभ, स्कालरशिप दिलायेगा। जातक की उन्नति सपूत होगी।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक को कला, साहित्य, संगीत व अभिनय में अग्रणी स्थान दिलायेगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि संतान सुख में वृद्धि करेगा। जातक पुरुषार्थी होगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु संतान एवं विद्या दोनों की श्रेष्ठता में बाधक है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु गर्भपात करायेगा।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में



कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक है। शुभ फलदायक है। बुध यहां छठे स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में होगा। बुध के कारण **'संतानहीन योग'** बना। अष्टमेश होकर बुध छठे होने से **'सरल नामक विपरीत राजयोग'** बना। पंचमेश छठे जाने से विद्या में बाधा आयेगी। अष्टमेश छठे जाने से आयु लम्बी होगी। जातक धनवान होगा। प्रथम संतति कन्या होगी।

दृष्टि–षष्टमस्थ बुध की दृष्टि व्ययभाव (मकर राशि) पर होगी। ऐसे जातक को परदेश जाने में रुचि होगी। भाग्य विदेश में चमकेगा। जातक को चर्मरोग की संभावना रहेगी।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 6 के अनुसार ऐसे जातक को सांप-बिच्छु का जहर, जलघात का भय रहता है। जातक सदैव बीमार रहता है।

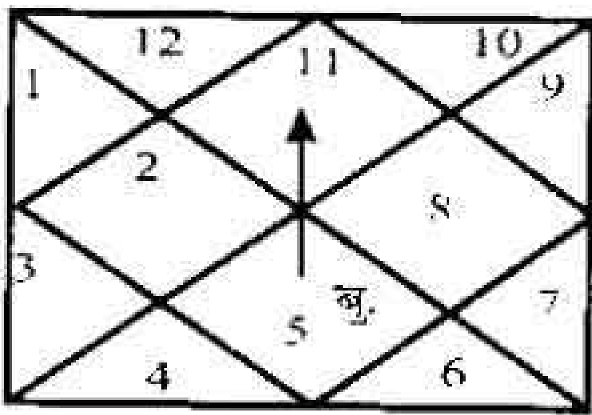
दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा श्रेष्ठ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा। फलतः जातक महाधनी होगा। पर जातक का दिमाग, निर्णयशक्ति अस्थिर व चंचल रहेगी।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। छठे स्थान में कर्कराशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। छठे स्थान में बुध को शत्रुराशि है। जहां बैठकर दोनों ग्रह व्ययभाव को देखेंगे। अष्टमेश बुध के छठे जाने से **'हर्षयोग'** बना। फलतः जातक अपने शत्रु-समूह को नष्ट करने में सक्षम होगा। जातक बुद्धिमान होगा। सप्तमेश सूर्य की छठे जाने से **'विलम्ब विवाह योग'** बनता है। जातक समाज का अग्रगण्य व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल नीच का होकर **'पराक्रम भंगयोग'** एवं **'राजभंग योग'** करायेगा। जातक को बदनामी मिलेगी। सरकार से दण्ड मिलेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति उच्च का **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा। व्यापार में नुकसान होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। जातक परेशानियों से त्रस्त रहेगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का फलक नहीं मिलेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु गुप्तेन्द्रि का रोग देगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु शल्य चिकित्सा करायेगा।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में

कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक है। शुभ फलदायक है। बुध यहां सप्तम स्थान में सिंह (मित्र) राशि में



हैं। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। जातक की पत्नी सुन्दर होगी। विवाह सुख उत्तम रहेगा। विद्या उत्तम। भागीदारी से लाभ रहेगा। अष्टमेश सातवें होने से आयु लम्बी होगी। जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक यशस्वी होगा।

दृष्टि–सप्तम भावगत बुध की दृष्टि लग्न स्थान पर होगी। ऐसे जातक को परिश्रम पूर्वक किये गये पुरुषार्थ का फल मिलेगा। जातक नाजुक व कोमल स्वभाव का होगा। कामेच्छा कम रहेगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 8/श्लोक 6 अनुसार अष्टमेश यदि सप्तम में हो तो जातक दो विवाह करता है अथवा एक समय में दो स्त्रियों से सम्पर्क रखता है।

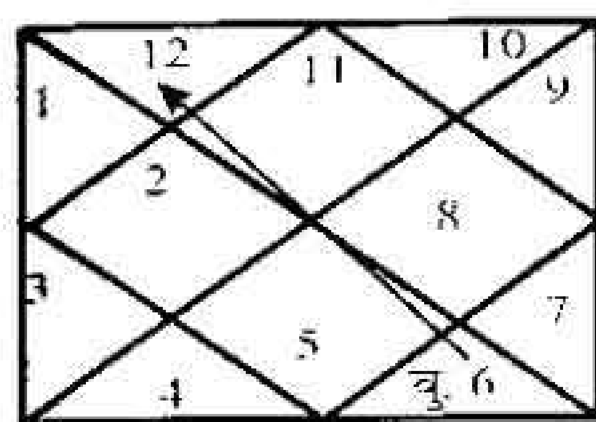
दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा विवाह सुख में कटाकट करायेगा। पति-पत्नी में तकरार होती रहेगी।
2. **बुध+सूर्य–'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। सप्तम स्थान में सिंहराशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां स्वगृही होगा। बलवान सप्तमेश की पंचमेश में युति होने के कारण जातक की संतति उत्तम होगी। पत्नी धनवान होगी। जातक का भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। जातक बुद्धिमान होगा तथा बुद्धिबल से अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक समाज का अग्रगण्य एवं लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक को कामी बनायेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक को धनी बनायेगा। जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से जातक का जीवन साथी सुन्दर एवं भाग्यशाली होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि **'लग्नाधिपति योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु वैवाहिक समरसता में बाधक है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु गुप्तांग में रोग करायेगा। पेट की शल्य चिकित्सा संभव है।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में



कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक है। शुभ फलदायक है। बुध यहां आठवें स्थान में उच्च का है। कन्याराशि के 15 अंशों में बुध परमोच्च का होगा। बुध के कारण **'संतानहीन योग'** बना। अष्टमेश अष्टम में स्वगृही होने से **'सरलनामक विपरीत राजयोग'** बना। जातक धनवान होगा पर विद्या अधूरी छूट जायेगी। संतान संबंधी चिंता रहेगी। अष्टमेश आठवें होने से जातक की आयु लम्बी होगी। जातक की भाषा नरम एवं मीठी होगी।

दृष्टि–अष्टमस्थ बुध की दृष्टि धनभाव (मीन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को अचानक धन लाभ होते रहेंगे। जातक गूढ व रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 1 के अनुसार अष्टमेश यदि अष्टम भाव में हो तो जातक जुआं खेलने, तस्करी, व्यर्थ के बाद-विवाह एवं परस्त्री गमन में रुचि रखने वाला होता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में अनिष्ट फलों की प्राप्ति होगी। यदि बुध की दशा में परदेश जाता है तो धन कमायेगा।

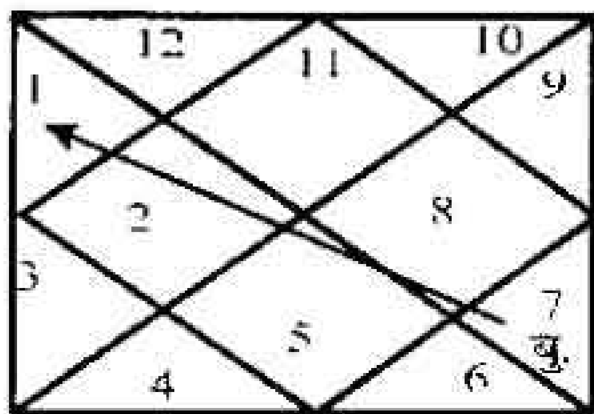
बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होकर शत्रु के घर में होगा। परन्तु चंद्रमा **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा। फलत: जातक महाधनी होगा पर निर्णय सदैव गलत रहेंगे।
2. **बुध+सूर्य**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। अष्टम भाव में कन्याराशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां उच्च का होगा। जहां बैठकर दोनों ग्रह धनभाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान एवं धनवान होगा। अष्टम स्थान का स्वामी बुध अष्टम में स्वगृही होने से **'सरल योग'** बनेगा। ऐसा जातक दीर्घजीवी होगा। रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा। सप्तमेश

सूर्य छठे जाने से **'विलम्ब विवाह योग'** बनेगा। जातक के शीघ्र विवाह व भाग्योदय में कुछ रुकावटें आ सकती है। पर फिर भी जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनायेगा। जातक को समाज में अपयश मिलेगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा। जातक को व्यापार द्वारा धनप्राप्ति में दिक्कतें आयेगी।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। जातक को गुप्त रोग होंगे। जिससे भौतिक सुखों में बाधा पहुंचेगी।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। यद्यपि विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगी।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु चमड़ी के रोग देगा। श्वेत-काले दोग हो सकते हैं।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु शरीर में पेट के नीचे वाले हिस्से में ऑपरेशन करायेगा।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में



कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक है। शुभ फलदायक है। बुध यहां नवम स्थान में तुला (मित्र) राशि में है। पंचमेश अपने स्थान (मिथुन राशि) से पांचवें होने से विद्या उत्तम, संतान उत्तम होकर जातक भाग्यशाली होगा। अष्टमेश भाग्य में जाने से पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक स्वयं अच्छा कमायेगा।

दृष्टि—नवमस्थ बुध की दृष्टि पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक का भाई-बहनों से संबंध ठीक रहेगा।

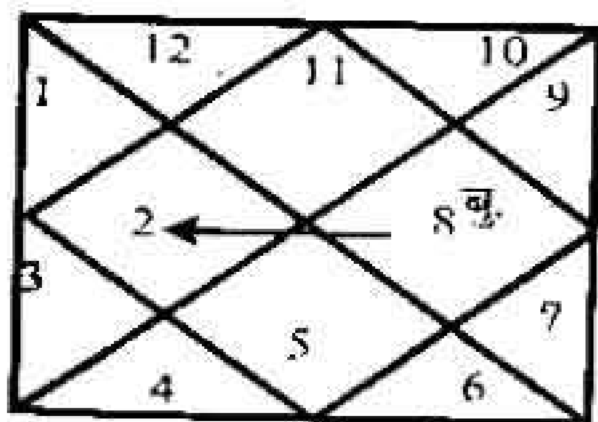
निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 2 के अनुसार अष्टमेश यदि नवमें स्थान में हो तो जातक नास्तिक होता है। स्त्री वन्ध्या होती है। पुत्र का अभाव रहता है।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा जातक को बुद्धिबल, कल्पनाशक्ति एवं प्लानिंग के साथ आगे बढ़ायेगा।
2. **बुध+सूर्य–'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। नवम स्थान में तुलाराशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। दोनों ग्रह यहां बैठकर पराक्रम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान होगा। भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय 26 वर्ष की आयु में होगा। जातक पराक्रमी होगा। उसे परिजनों-मित्रों का सहयोग बराबर मिलता रहेगा। जातक धनी होगा एवं समाज के अग्रगण्य व्यक्तियों में गिना जायेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल भूमि लाभ देगा। मित्रों से लाभ होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति व्यापार-व्यवसाय से उत्तम धन की प्राप्ति करायेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ स्वगृही शुक्र जातक को उत्तम वाहन एवं मकान का सुख देगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ उच्च का शनि जातक को परिश्रम का लाभ एवं भाग्योदय के उत्तम अवसर प्रदान करेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु भाग्योदय में बाधक है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगी।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में



कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक है। शुभ फलदायक है। बुध यहां दशम स्थान में वृश्चिक (सम) राशि में है। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। पंचमेश केन्द्र में होने से जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि (Degree) मिलेगी। राज (सरकार) से सम्मान मिलेगा। जातक के पास वाहन होगा। जातक साहित्यकारी, लेखक, पत्रकार, प्रोफेसर एवं कम्प्यूटर मास्टर होगा।

दृष्टि–दशम भावगत बुद्धि की दृष्टि चतुर्थ स्थान (वृष राशि) पर होगी। जातक का माता के साथ संबंध उत्तम होगा। घर का मकान होगा।

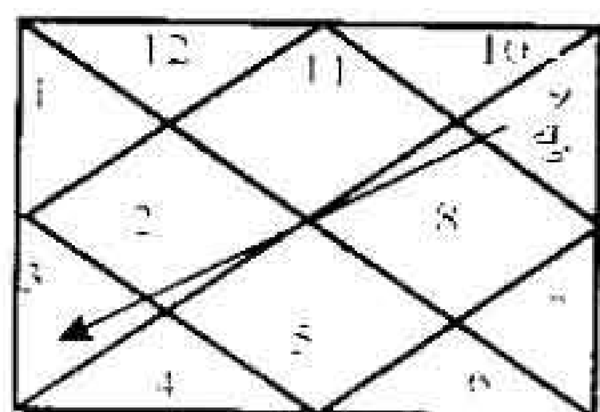
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 8/श्लोक 3 के अनुसार अष्टमेश यदि दशम भाव में हो तो जातक चुगलखोर एवं भाई से रहित होता तथा माता-पिता से खुन्दक रखता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–यहां बुध के साथ नीच का चंद्रमा जातक को ईर्ष्यालु एवं निराशावादी बनायेगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। दशम स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। जहां बैठकर दोनों ग्रह सुख भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। **'कुलदीपक योग'** के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक धनी होगा। बुद्धिमान होगा एवं समाज के अग्रण्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल **'रुचक योग'** बनायेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ वृहस्पति अच्छी नौकरी देगा। व्यवसाय से भी अच्छी आय होगी।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक को उत्तम वाहन सुख देगा। माता की सम्पत्ति दिलायेगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक को **'करोड़पति'** बनायेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु राज्यसुख में बाधक है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगवायेगा।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में



कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक है। शुभ फलदायक है। बुध यहां एकादश स्थान में धनु (सम) राशि का है। ऐसे जातक को धंधे व्यापार में लाभ मिलेगा। जातक लम्बी उम्र वाला होगा। परदेश में अधिक कीर्ति मिलेगी। जातक को स्त्री-संतान, पद-प्रतिष्ठा का पूरा सुख मिलेगा।

दृष्टि—एकादश भावगत बुध की दृष्टि पंचम स्थान अपने ही घर मिथुन राशि पर होगी। फलत: जातक को उत्तम विद्या मिलेगी। संतान सुख उत्तम। जातक के जुड़वा बच्चे हो सकते हैं। दो अलग-अलग विषयों पर डिग्री मिल सकती है।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 4 के अनुसार अष्टमेश यदि एकादश स्थान में हो तो ऐसे जातक को सदैव धन की कमी सताती रहेगी।

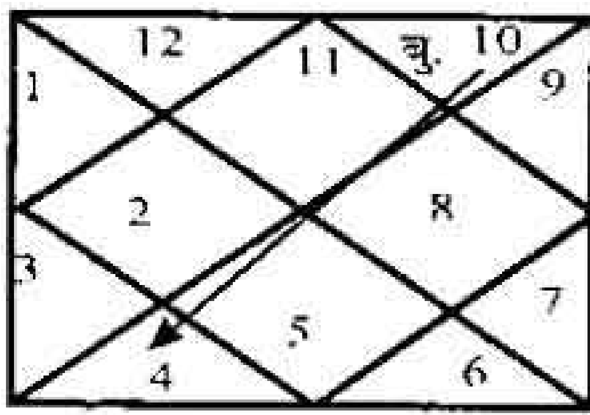
दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में शुभफलों की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा जातक को व्यापार में लाभ एवं उच्च शिक्षा दिलायेगा।
2. **बुध+सूर्य**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। एकादश स्थान में धनुराशिगत यह युति वस्तु: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा। व्यापार-वर्गीय होगा। जातक शिक्षित होगा। उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक को जीवन में सभी प्रकार के ऐश्वर्य-संसाधनों की प्राप्ति होगी। जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल पराक्रम में वृद्धि करेगा। जातक बड़ी भूमि का स्वामी होगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति जातक को बड़ा व्यापारी व उद्योगपति बनायेगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र जातक को कला के क्षेत्र में सफलता दिलायेगा। जातक व्यापारी होगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि परिश्रम का लाभ देगा। जातक परदेश में कमायेगा।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु व्यापार में रुकावट है।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु कीर्तिदायक है।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में

कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक है। शुभ फलदायक है। बुध यहां द्वादश स्थान में मकर (मित्र) राशि का



है। बुध के कारण यहां **'संतानहीन योग'** बना। बुध अष्टमेश होकर द्वादश स्थान में होने से **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** बना। जातक धनी-मानी, अभिमानी होगा। पर विद्या अधूरी छूट जायेगी। संतान विषयक चिंता रहेगी। अष्टमेश बारहवें होने से जातक लम्बी उम्र वाला होगा पर बीमारी रहेगा।

दृष्टि–द्वादशभावगत बुध की दृष्टि छठे स्थान (कर्क राशि) पर होगी। जातक व्यसनी होगा। गुप्त शत्रु जीवन में रहेंगे। परदेश में लाभ है। जातक अध्यात्म क्षेत्र में उन्नति करेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 8/श्लोक 6 के अनुसार ऐसे जातक को सांप-बिच्छु के जहर एवं जलघात का भय रहता है। जातक सदैव बीमार रहता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

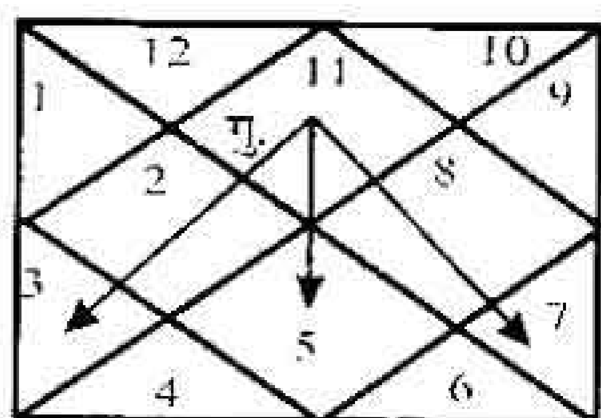
1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा **'विपरीत राजयोग'** के कारण परदेश में धन दिलायेगा।
2. **बुध+सूर्य–'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। द्वादश भाव में मकरराशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलत: जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा। यात्रा-प्रिय होगा। जातक को जीवन में सभी सुख-सुविधाएं मिलेंगी। अष्टमेश बुध बारहवें होने से **'सरल योग'** बना। ऐसे जातक में रोग से लड़ने की शक्ति होती है तथा दीर्घजीवी होता है। सूर्य बारहवें होने से विवाह विलम्ब से होगा। फिर भी जातक समाज का अग्रगण्य एवं लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल उच्च का जातक को स्थाई सम्पत्ति देगा पर जातक का भाग्य परदेश में खुलेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा। ऐसा जातक खर्च अधिक करेगा। ऋणग्रस्त रहेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र वैवाहिक सुख में कमी, पत्नी से मनमुटाव, दूसरी स्त्री से शारीरिक सम्पर्क करायेगा।

6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' के कारण परिश्रम का पूरा लाभ नहीं होने देगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को यात्रा से लाभ दिलायेगा। धन का खर्च भी करायेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु व्यर्थ की यात्रा किन्तु परदेश में धनार्जन करायेगा।

❑❑❑

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति प्रथम स्थान में



कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां प्रथम स्थान में कुंभ (सम) राशि में है। बृहस्पति के कारण **'कुलदीपक योग'** व **'केसरी योग'** बना। ऐसे जातक स्वस्थ शरीर का स्वामी होगा। धार्मिक होगा। उसे उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। ऐसा जातक वकील, डॉक्टर व ज्योतिषी के रुप में विशेष ख्याति प्राप्त करके अपने परिवार, कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ बृहस्पति की दृष्टि पंचम भाव (मिथुन राशि), सप्तम भाव (सिंह राशि) एवं भाग्य भाव (तुला राशि) पर होगी। ऐसे जातक को उत्तम संतति की प्राप्ति होगी। गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा। जातक परम भाग्यशाली होगा। उसे श्वसुर पक्ष से लाभ मिलेगा।

निशानी– 'लोमेश संहिता' अध्याय 2/श्लोक 9 के अनुसार द्वितीयेश यदि लग्न में हो तो जातक अपने सगे संबंधियों से वैर रखने वाला, निष्ठुर व धनवान होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

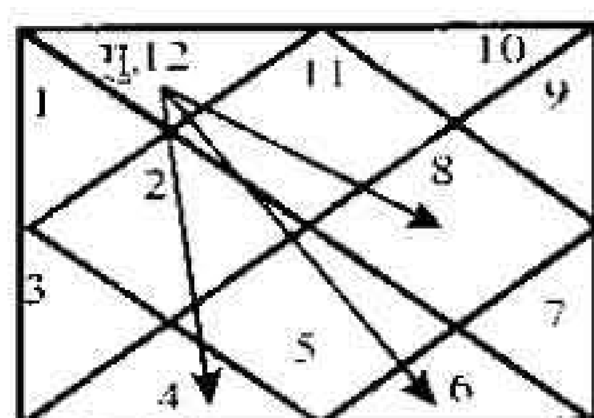
बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र**–भोजसंहिता के अनुसार कुंभलग्न के प्रथम स्थान में यह युति कुंभराशि में ही होगी। बृहस्पति+चंद्र की युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि हो रही है। फलत: ऐसे

जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है। दूसरा भाग्योदय संतति के बाद होगा। जातक सौभाग्यशाली होगा तथा उसकी गिनती समाज के अग्रगण्य प्रतिष्ठित लोगों में होगी।

2. **गुरु+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को पराक्रमी एवं तेजस्वी व्यक्तित्व देगा। गृहस्थ सुख भरपूर देगा। पत्नी पतिव्रता होगी। कमाऊ महिला होगी।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक को भूमि से धन दिलायेगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को विद्यावान् बनायेगा। उच्च शैक्षणिक उपाधि देगा।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र जातक को उत्तम वाहन देगा।
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि '**शश योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह 'कुंभ राशि' में होंगे। लग्नस्थ बृहस्पति यहां दु:खी होकर समराशि में होगा जबकि राहु अपनी मूलत्रिकोण राशि में हर्षित होकर '**चाण्डाल योग**' बनायेगा। ऐसा जातक जिद्दी, हठी एवं धार्मिक होते हुए भी नास्तिक विचारों वाला, तर्क-विकर्त में विश्वास रखने वाला जातक होगा।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक को कीर्ति देगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति द्वितीय स्थान में



कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां द्वितीय स्थान में मीन राशि में स्वगृही है। ऐसा जातक धनी होगा पर कुटुम्ब-परिवार की जबाबदारी भी उस पर होगी। जातक की वाणी मधुर होगी। ऐसा जातक स्वादिष्ट भोजन का शौकिन होगा। जातक के संतान सुख उत्तम, बड़े भाई-बहनों का सुख एवं मित्रों का सुख श्रेष्ट होगा। आवक के जरिए तीन-चार प्रकार के होंगे।

दृष्टि–द्वितीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि छठे भाव (कर्क राशि), अष्टम भाव (कन्या राशि) एवं दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होता है। जातक का धंधा ठीक होगा। जातक की रुचि राजनीति में भी होगी।

निशानी– **'लोमेश संहिता'** के अनुसार ऐसा जातक बड़ा धनी एवं धमंडी होगा। ऐसा जातक के चार-पांच स्त्रियों से शारीरिक सम्पर्क होते हुए भी वह पुत्रसुख से हीन होगा।

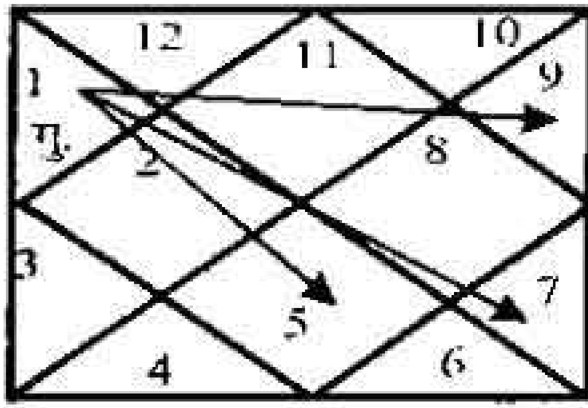
दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र–भोजसंहिता** के अनुसार कुंभलग्न के द्वितीय स्थान में यह युति 'मीन राशि' के अंतर्गत होगा। बृहस्पति+चंद्र की यह युति वस्तुतः षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ है। ये दोनों शुभ ग्रह षष्टम् स्थान, अष्टम स्थान एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। जातक इस योग के कारण दुर्घटना व अपघात से बचा रहेगा। शत्रुओं का नाश करेगा। जातक को राज्य सरकार में मान-सम्मान मिलेगा। कोर्ट-कचहरी में विजय श्री का वरण होगा।
2. **गुरु+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य **'कलत्रमूल धनयोग'** बनायेगा। जातक को ससुराल की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक को **'भ्रातृमूल धनयोग'** बनायेगा। जातक को भाइयों का परिजनों का धन विरासत में मिलेगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध होने से जातक को अपने शत्रुओं से पैसा मिलेगा। संतान कमा कर देंगे।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र हो तो **'किम्बहुना योग'** बनेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली व करोड़पति होगा।
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि होने से जातक अपने परिश्रम से खूब धन कमायेगा। जातक कामयाबी की एक निश्चित मंजिल पर पहुंचेगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां द्वितीय भाव में दोनों ग्रह 'मीन' राशि में होंगे। बृहस्पति यहां स्वगृही जबकि राहु नीच का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। फलतः धन के घड़े में छेद होगा। जातक जितना भी कमायेगा उसकी बरकत नहीं होगी। जिम्मेदारी बहुत ज्यादा रहेगी।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु आर्थिक संग्रह में 40% कटौती करेगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति तृतीय स्थान में

कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां तृतीय स्थान में मेष (मित्र) राशि



में है। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। जातक को भाई-बहनों से लाभ एवं पिता की सम्पत्ति मिलेगी। ऐसे जातक को भागीदारी से लाभ होगा। बृहस्पति यहां पुत्र स्थान में ग्यारहवें होने के कारण जातक को पुत्र लाभ होगा एवं संतति बुद्धिशाली होगी।

दृष्टि–तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि), नवम भाव (तुला राशि) एवं एकादश भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगी। जातक भाग्यशाली होगा। जातक को बड़े भाई से लाभ मिलेगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 2/श्लोक 2 के अनुसार ऐसा जातक पराक्रमी किन्तु देव निन्दक व परस्त्रीगामी होगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

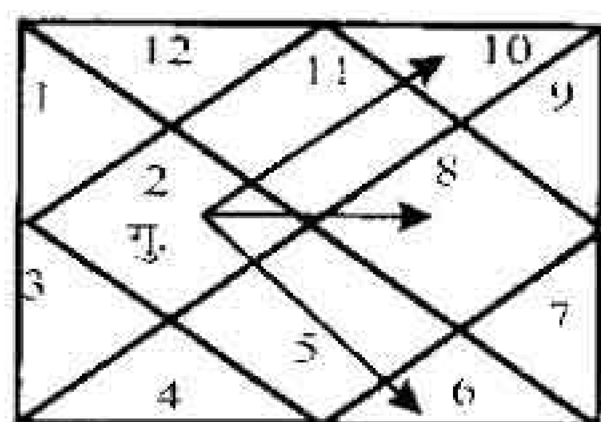
बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न के तृतीय स्थान में यह युति 'मेष राशि' के अंतर्गत हो रही है। बृहस्पति+चंद की यह युति फलत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह सप्तम भाव, भाग्यभवन एवं लाभस्थान को देखेंगे। फलत: ऐसे जातक का भाग्योदय 24वें वर्ष में अथवा विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय होता है। व्यापार-व्यवसाय द्वारा धन की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक सौभाग्यशाली होता है। उसकी गिनती समाज के गिने-चुने भाग्यशाली व्यक्तियों में होगी।
2. **गुरु+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को अतुल पराक्रम देगा। मित्र-परिजनों की सहायता से जातक आगे बढ़ेगा।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक को पराक्रमी बनायेगा। जातक के पांच भाई, बड़ा कुटुम्ब होगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध भाई-बहनों का बराबर सुख देगा। जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र जातक स्त्री की मदद से आगे बढ़ेगा। जातक को इष्ट-मित्रों से लाभ रहेगा।
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि नीच का जातक को पराक्रमी तो बनायेगा पर पीठ पीछे जातक की निन्दा होगी।

7. **गुरु+राहु**–यहां तृतीय भाव में दोनों ग्रह 'मेष राशि' में होंगे। बृहस्पति मित्र राशि में तो राहु सम राशि का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक का पराक्रम कुण्ठित होगा। भाइयों से नहीं बनेगी। मित्र दगा देंगे।

8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक को कीर्तिवान् बनायेगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति चतुर्थ स्थान में



कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां चतुर्थ स्थान में वृष (शत्रु) राशि में है। बृहस्पति के कारण **'कुलदीपक योग'** एवं **'केसरी योग'** बनता है। ऐसे जातक को मकान, वाहन का सुख उत्तम, धंधा-रोजी रोजगार उत्तम होगा। बृहस्पति यहां पर सम्पत्ति या संतान दोनों में से एक सुख विशेष रुप से ज्यादा ताकतवर देगा। जातक पढ़ा-लिखा, विद्यावान् होगा।

दृष्टि–चतुर्थभावगत बृहस्पति की दृष्टि अष्टम स्थान (कन्या राशि), दशम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं व्यय भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक को गुप्त धन मिलेगा। धंधा श्रेष्ठ, जातक धार्मिक व परोपकारी होगा। जातक का धन शुभ कार्य में खर्च होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 2/श्लोक 2 के अनुसार यदि धनेश चतुर्थ स्थान में हो तो जातक देवनिन्दक व परस्त्रीगामी होगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी। बृहस्पति की दशा में जातक परदेश जा सकता है।

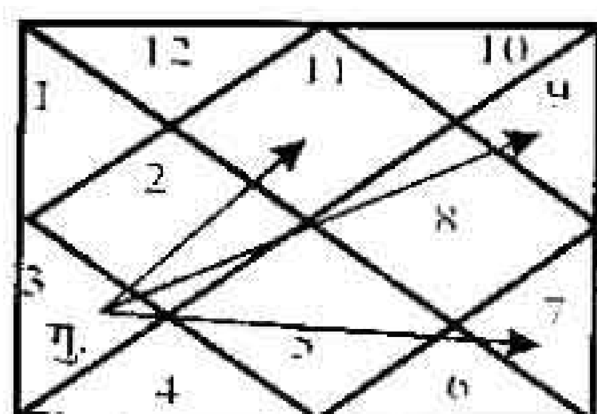
बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार बृहस्पति+चंद्र की युति यहां चतुर्थ भाव में वृष राशि के अंतर्गत हो रही है। यह युति वस्तुत षष्ठेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां चंद्रमा उच्च का होगा तथा केन्द्र स्थान में इन तीनों ग्रहों की उपस्थिति के कारण **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि होगी। ये दोनों ग्रह यहां अष्टम स्थान, दशम भाव एवं व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक की दुर्घटना एवं आघात से बचाव होता रहेगा। जातक समाज के शुभकार्य, परोपकार एवं धार्मिक कार्यो में रुपया खर्च

करता रहेगा। जातक की राज्यपक्ष (सरकार) कोर्ट-कचहरी में दबदबा बना रहेगा।

2. **गुरु+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य ससुराल से धन दिलायेगा। गृहस्थ सुख श्रेष्ठ।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक को राज्यसुख देगा। उत्तम नौकरी देगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को उच्च शिक्षा देगा। प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में सफलता देगा।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र स्वगृही '**मालव्य योग**' देगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि जातक को प्रबल पुरुषार्थी बनायेगा। जातक को पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां चतुर्थ भाव में दोनों ग्रह 'वृष राशि' में होंगे। बृहस्पति शत्रु राशि में तो राहु अपनी उच्च राशि में होकर '**चाण्डाल योग**' बनायेगा। जातक की माता अल्प आयु में गुजर जाएगी। धन की कमी सदैव बनी रहेगी।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु माता को रोगी बनायेगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति पंचम स्थान में



कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां पंचम स्थान में मिथुन (शत्रु) राशि में है। ऐसा जातक पूर्व जन्म में शुभ पुण्य फलों को साथ लेकर जन्म लेता है। जातक का स्वास्थ्य उत्तम होगा। जातक का पिता प्रतिष्ठित होगा पर जातक स्वयं उससे भी ज्यादा प्रतिष्ठित होगा। जातक आस्तिक बुद्धि, आशावादी एवं धार्मिक विचारों वाला होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ बृहस्पति की दृष्टि भाग्यस्थान (तुला राशि), लाभ स्थान (धनु राशि) एवं लग्न स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। जातक परम सौभाग्यशाली होगा। धंधे व्यापार में उत्तम लाभ (मुनाफा) मिलेगा। परिश्रम पूर्वक किये गये प्रयत्न सार्थक होंगे।

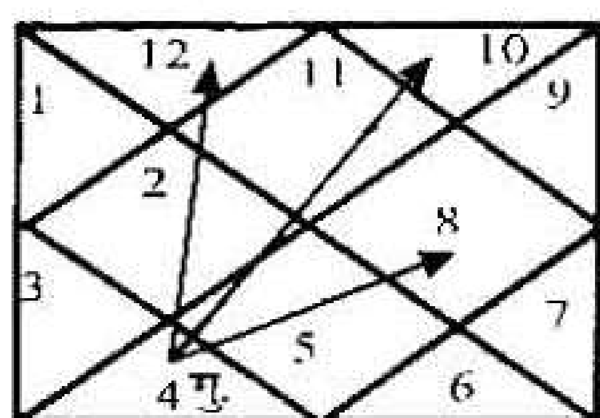
निशानी–जातक के पुत्र संतति विलम्ब से होगी। मकरलग्न में बृहस्पति शत्रु या स्त्री राशि में हो पुत्र अभाव को भी प्रकट करता है। जातक को शेयर बाजार, सट्टा, कैसिनो एवं भाग्यवर्धक प्रतियोगिताओं से लाभ होता रहेगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र–'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न के पांचवे स्थान में यह युति 'मिथुन राशि' में होगी। यह युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह दशम भाव, व्यय भाव एवं धन स्थान को देखेंगे। फलत: जातक परिश्रमी होगा धन की यथेष्ट प्राप्ति होती रहेगी परन्तु धन का खर्च शुभ कार्यों में, परोपकार के कार्यों में होता रहेगा। जातक का राज्यपक्ष सरकार से सम्मान मिलता रहेगा। कोर्ट-कहचरी में विजय मिलेगी।
2. **गुरु+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य ससुराल से, पत्नी से धन लाभ करायेगा।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल मित्रों से धन लाभ करायेगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध विद्या एवं संतान से धन लाभ करायेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र माता का धन दिलायेगा। मामा मेहरबान होगा।
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि परिश्रम का उचित पारिश्रमिक दिलायेगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह 'मिथुन राशि' में होंगे। बृहस्पति शत्रुक्षेत्री तो राहु यहां मूलत्रिकोणी होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक विद्या में रुकावट प्राप्त करेगा। संतान को लेकर भी चिंता बनी रहेगी।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु शल्य चिकित्सा से संतान देगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति षष्टम स्थान में



कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां छठे स्थान में उच्च का है। कर्क राशि के पांच अंशों में बृहस्पति परमोच्च का होगा। बृहस्पति की इस स्थिति में **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** की सृष्टि हुई। ऐसे जातक पर कुटुम्ब की जिम्मेदारी अधिक होने से कमाई ठीक होते हुए भी खर्च बढ़ा-चढ़ा होगा। जातक को बड़े भाई का सुख नहीं होगा।

दृष्टि–छठे स्थान में स्थित बृहस्पति की दृष्टि दशम भाव (वृश्चिक राशि), व्यय भाव (मकर राशि) एवं धन भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक का

व्यवसाय-व्यापार लाभकारी रहेगा। धन की भावक ठीक रहेगी पर धन एकत्रित नहीं हो पायेगा। जातक के धन का खर्च शुभ कार्यों में होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 2/श्लोक 3 के अनुसार ऐसे जातक को शत्रु का धन प्राप्त होगा। उसके गुप्तांगों या जांघों में कोई न कोई रोग अवश्य होगा।

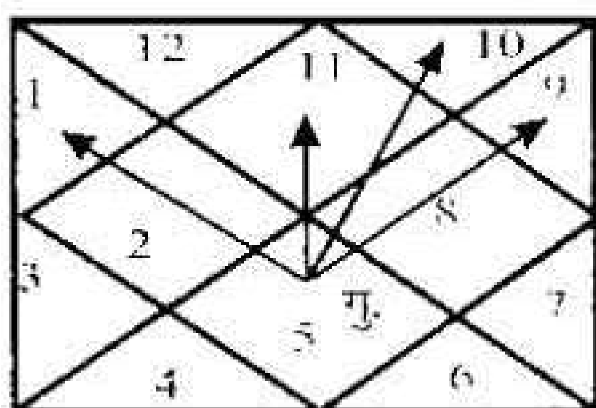
दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र–'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न के छठे स्थान में यह युति कर्क राशि में हो रही है। यह युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां चंद्रमा स्वगृही एवं बृहस्पति उच्च का होगा। दु:स्थान में दु:स्थान के स्वामी का जाना शुभ माना गया है। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह दशम भाव, व्यय भाव एवं धनभाव को देखेंगे। फलत: जातक धन तो कमायेगा पर धन शुभ कार्यों में खर्च होता रहेगा। बचत कम होगी। राज्यपक्ष सरकार से सरकारी अधिकारियों से लाभ होगा। इस योग के कारण जीवन में संघर्ष के बाद सफलता अवश्य मिलेगी।
2. **गुरु+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य विवाह में विलम्ब करायेगा। जातक का ससुराल सामान्य होगा।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल नीच का भाइयों से नुकसान करायेगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध विद्या में बाधा, पुत्र संतति की चिंता करायेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र माता का सुख तोड़ेगा। भाग्योदय में बाधा महसूस होगी।
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां षष्टम स्थान में दोनों ग्रह **'कर्क राशि'** में होंगे। बृहस्पति यहां उच्च का तो राहु शत्रुक्षेत्री होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक गुप्त रोग व गुप्त शत्रुओं से सदैव परेशान रहेगा।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु गुप्त बीमारी देगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति सप्तम स्थान में

कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां सप्तम स्थान में सिंह (मित्र) राशि



में है। बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**' एवं '**केसरी योग**' बना। जातक को धन एवं कुटुम्ब का सुख उत्तम होगा। बड़े भाई-बहनों का सुख उत्तम। विवाह थोड़ी देरी से हो पर जीवनसाथी अच्छा मिलेगा। पत्नी एवं मित्र पद-पद पर सहयोग बने रहेंगे। जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ बृहस्पति की दृष्टि लाभभाव (धनु राशि), लग्न भाव (कुंभ राशि), एवं पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक को धंधे में उत्तम लाभ होगा। जातक पराक्रमी होगा एवं परिश्रमपूर्वक किये गये प्रयत्न सार्थक होंगे।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 2/श्लोक 4 के अनुसार ऐसा जातक वैधक, हकीमी, डॉक्टरी व रहस्यमय विद्याओं का जानकार होता है वह स्वयं व्यभिचारी होता है तथा उसकी स्त्री व माता का चरित्र संदेहास्पद होता है।

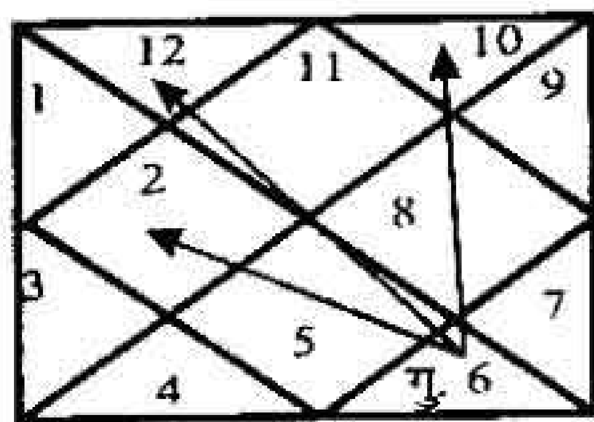
दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र–भोजसंहिता** के अनुसार कुंभलग्न के सप्तम स्थान में यह युति सिंह राशि के अंतर्गत होगी। सिंहराशि में यह युति वस्तुतः षष्ठेश चंद्रमा की धनेश-लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं धन स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को धन लाभ होगा। उसके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास होगा। उसे व्यापार-व्यवसाय में बराबर लाभ होता रहेगा। जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा।
2. **गुरु+सूर्य**–बृहस्पति के साथ स्वगृही सूर्य जातक को ससुराल की सम्पत्ति दिलायेगा। ससुराल प्रभावशाली होगा।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक को भाइयों व कुटम्बियों का प्रेम दिलायेगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक की पत्नी पतिव्रता, धार्मिक एवं बुद्धिशाली होगी।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र जातक का जीवन साथी सौभाग्यशाली दिलायेगा। जातक की पत्नी साहित्य-संगीत का प्रेमी होगी।
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि '**लग्नाधिपति योग**' बनायेगा। जातक व्यवहारिक ज्ञान सम्पन्न होगा एवं परिश्रम करने में विश्वास रखेगा।

7. **गुरु+राहु**—यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह 'सिंह राशि' में होंगे। बृहस्पति अपनी मित्र राशि में तो राहु अपनी शत्रु राशि में स्थित होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को गृहस्थ सुख में कमी रहेगा। परिवार में भारी तकलीफें उठानी पड़ेगी।
8. **गुरु+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु गृहस्थ सुख में कभी-कभी विघ्न डालेगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति अष्टम स्थान में



कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां अष्टम स्थान में कन्या (शत्रु) राशि में है। बृहस्पति के कारण **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बना। जातक को धन उत्तम मिलेगा, पर फालतू कार्यों में धन खर्च हो जायेगा। जातक को मकान का सुख ठीक मिलेगा। मित्र ज्यादा सहकार नहीं देगे। उधार दिया हुआ रुपया डूब जायेगा।

दृष्टि—अष्टमस्थ बृहस्पति की दृष्टि व्यय भाव (मकर राशि), धन भाव (मीन राशि) एवं चतुर्थ भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक अधिक खर्च के कारण कर्जदार हो सकता है। जातक की स्थाई सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु धन खर्च करेगा।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 2/श्लोक 5 के अनुसार धनेश आठवें हो तो जातक को भूमि में गढ़ा हुआ धन मिलता है पर जातक को बड़े भाई का सुख नहीं होता।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+चंद्र**—**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न के आठवें स्थान में युति कन्याराशि के अंतर्गत हो रही है। कुंभलग्न में बृहस्पति+चंद्र की यह युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति+चंद्रमा के अष्टम स्थान में जाने से **'धनभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बना। चंद्रमा शत्रु क्षेत्री है। परन्तु षष्टेश चंद्र का आठवें जाना शुभ संकेत है। ये दोनों ग्रह व्ययभाव, धनभाव एवं सुख स्थान पर है। फलत: ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक दीर्घायु होगा। उसमें रोग से संघर्ष करने की पूर्ण शक्ति होती है। जातक को भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति सहज में होगी। जातक का उत्तम वाहन सुख मिलेगा।

2. **गुरु+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य विवाह सुख में विलम्ब का द्योतक है।

3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल **'पराक्रम भंगयोग'** एवं **'राजभंग योग'** करायेगा। जातक को समाज में अपयश मिलेगा।

4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को संतान से चिंता करायेगा। विद्या में बाधा पहुंचेगी।

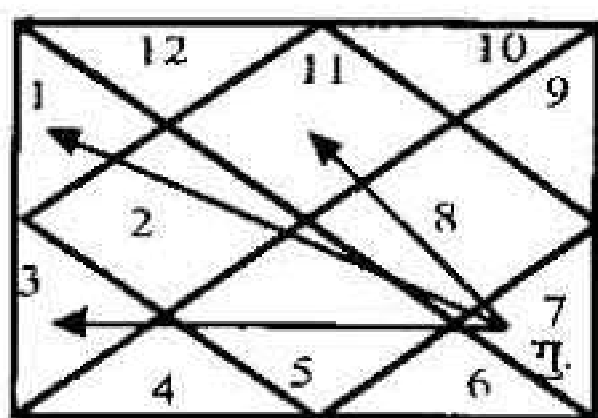
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। जातक को भाग्योदय एवं अर्थ प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** करायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

7. **गुरु+राहु**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह 'कन्या राशि' में होंगे। बृहस्पति शत्रु राशि में तो, राहु स्वगृही होकर 'चाण्डाल योग' बनायेगा। ऐसा जातक गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग से सदैव परेशान रहेगा।

8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक को गुप्त बीमारी देगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति नवम स्थान में



कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां नवम स्थान में तुला (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक का पिता भाग्यशाली होगा तथा जातक स्वयं भी भाग्यशाली एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक के पास धन अच्छा होगा। ऐसा जातक सिद्धान्तवादी एवं न्यायप्रिय होगा। स्त्री-संतान, विद्या-बुद्धि, पद-प्रतिष्ठा सभी सुख सहज में मिलेंगे।

दृष्टि–नवमस्थ बृहस्पति की दृष्टि लग्न भाव (कुंभ राशि), पराक्रम स्थान (मेष राशि) एवं पंचम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक अपने पुरुषार्थ से उत्तम धन कमायेगा। जातक पराक्रमी होगा। जातक के भाई-बहन सम्पन्न व सुखी होंगे। जातक के संतान उत्तम एवं सौभाग्यशाली होंगे।

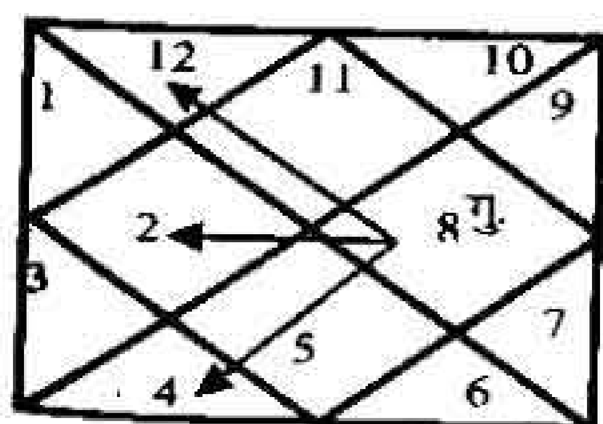
निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 2/श्लोक 6 के अनुसार धनेश यदि नवम स्थान में हो तो जातक बचपन में बीमार रहता है पर व्यक्ति धनवान, उद्यमी व चतुर होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी। पराक्रम बढ़ेगा। भाग्योदय होगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र–भोजसंहिता** के अनुसार कुंभलग्न के नवमें स्थान में बृहस्पति+चंद्र की युति तुलराशि में होंगी। कुंभलग्न में बृहस्पति+चंद्र की युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक खुद पढ़ा-लिखा होगा। उसको पिता की सम्पत्ति मिलेगी तथा उसकी संतानें भी पढ़ी-लिखी होगी। जातक का सर्वांगीण विकास चहुं ओर से होगा। जातक महान् पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
2. **गुरु+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य नीच का जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा।
3. **गुरु+मंगल–**बृहस्पति के साथ मंगल जातक को भूमि से धनलाभ देगा। भाई सहायक होंगे।
4. **गुरु+बुध–**बृहस्पति के साथ बुध विद्या से लाभ। जातक का सही भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ स्वगृही शुक्र, जातक को उत्तम वाहन सुख देगा। जातक को माता का सुख-सम्पत्ति मिलेगी।
6. **गुरु+शनि–**बृहस्पति के साथ शनि जातक का जबरदस्त भाग्योदय स्वपराक्रम से करायेगा।
7. **गुरु+राहु–**यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह **'तुला राशि'** में होंगे। बृहस्पति शत्रु राशि में तो राहु मित्र राशि में बैठकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को भाग्योदय हेतु काफी दिक्कतें-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
8. **गुरु+केतु–**बृहस्पति के साथ केतु कीर्ति दिलायेगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति दशम स्थान में



कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां दशम स्थान में वृश्चिक (मित्र) राशि में है। बृहस्पति के कारण **'कुलदीपक योग'**, **'केसरी योग'** बना। जातक के आवक उत्तम होगी। जातक समाज का प्रतिष्ठित, धनी व यशस्वी व्यक्ति होगा। विद्या उत्तम होगी। जातक के पास शैक्षणिक उपाधि

होंगी। फिर भी आध्यात्मक का ज्ञान भरपूर होगा। जातक महत्त्वकांक्षी होगा। उसके पास उत्तम वाहन एवं भवन होगा।

दृष्टि–दशमभावगत बृहस्पति की दृष्टि धन स्थान (मीन राशि), चतुर्थ भाव (वृष राशि) एवं षष्टम स्थान (कर्क राशि) पर होगी। जातक धनवान होगा। जातक को माता का सुख सम्पत्ति मिलेगी। जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

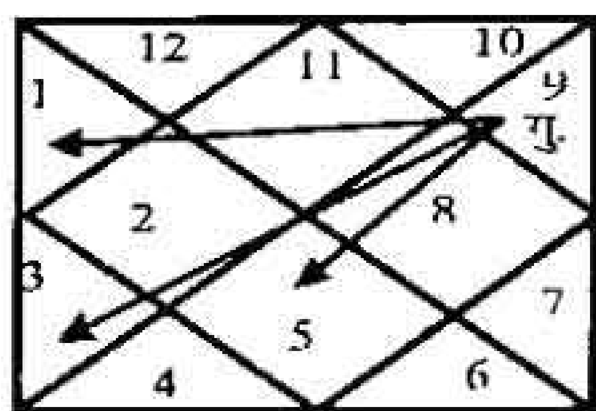
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 2/श्लोक 7 के अनुसार धनेश यदि दशम स्थान में हो तो मनुष्य कामी एवं पुत्रहीन होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा अति उत्तम फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र–'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न के दसवें स्थान में बृहस्पति+चंद्र की युति वृश्चिक राशि में हो रही है। कुंभलग्न में बृहस्पति+चंद्र की यह युति, वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां चंद्रमा नीच राशि में होगा। ये दोनों ग्रह केन्द्रस्थ होकर **'कुलदीपक योग'**, **'यामिनीनाथ योग'** बनाते हुए धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को राज्यपक्ष से लाभ होगा। धनप्राप्ति होती रहेगी। जातक सांसारिक सभी सुख संसाधन सहज में प्राप्त होंगे। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। जातक शत्रु का सम्पूर्ण नाश करने में सक्षम होगा। जातक की गिनती समाज के अग्रगण्य व्यक्ति में होगी।
2. **गुरु+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को पत्नी या ससुराल से धन दिलायेगा।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल **'रुचक योग'** के कारण जातक को राजातुल्य पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली बनायेगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को उत्तम संतति एवं विद्या का लाभ देगा।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र जातक को एक से अधिक वाहनों का सुख देगा।
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि के कारण जातक को पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह 'वृश्चिक राशि' में होंगे। बृहस्पति मित्र क्षेत्री है तो राहु नीच का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को रोजी-रोजगार एवं आजीविका के साधन व्यस्थित करने हेतु काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक को राज्यपक्ष में कीर्ति देगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति एकादश स्थान में



कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां एकादश स्थान में धनुराशि में स्वगृही होगा। ऐसा जातक धन कमाने में विलक्षण प्रतिभावाला होगा। जातक की वाणी उत्तम होगी। कुटुम्ब, संतान सुख, भागीदारी, मित्रों का सुख उत्तम होगा। जातक को मकान-वाहन, पद-प्रतिष्ठा, नौकरी-व्यवसाय, राज्य-राजनीति में बराबर लाभ मिलेगा।

दृष्टि–एकादश भावगत बृहस्पति की दृष्टि पराक्रम स्थान (मेष राशि), पंचम भाव (मिथुन राशि) एवं सप्तम भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। भाई-बहनों का सुख श्रेष्ठ, जातक को संतति सुख श्रेष्ठ, तीन पुत्र संभव है। जातक का जीवन साथी सभ्य एवं पढ़ा-लिखा होगा। जातक की शेयर बाजार, शट्टा उद्योग में रुचि होगी।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 2/श्लोक 6 के अनुसार धनेश यदि एकादश में हो तो जातक बचपन में बीमार रहता है। ऐसा जातक धनवान, उद्यमी व चतुर होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा अत्यंत शुभफल देगी। बृहस्पति की दशा में जातक को भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों सुखों की प्राप्ति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न के बृहस्पति+चंद्र की युति एकादश स्थान में धनु राशि के अंतर्गत होगी। यह युति वस्तुतः षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा उसकी दृष्टि पराक्रम स्थान, पंचम भाव एवं सप्तम भाव पर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा तथा प्रथम संतति के बाद जातक का दूसरा भाग्योदय होगा। जातक को व्यापार व्यवसाय से लाभ होगा। जातक के परिजन व मित्र जातक के सहायक रहेंगे। जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा।
2. **गुरु+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को ससुराल से धन दिलायेगा।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक को उद्योगपति बनायेगा।

4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध संतान सुख दिलायेगा। जातक को विद्या से लाभ होगा।

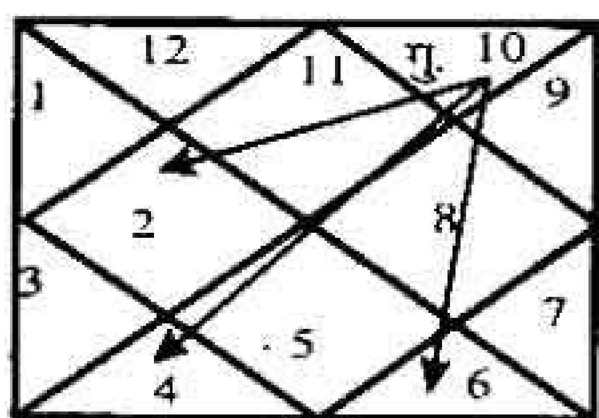
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र जातक को भाग्यशाली एवं भौतिक सुख-संसाधनों से परिपूर्ण जीवन देगा।

6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि जातक को पुरुषार्थ एवं परिश्रम का लाभ देगा।

7. **गुरु+राहु**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह 'धनु राशि' में होंगे। बृहस्पति यहां स्वगृही तो राहु नीच का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को बड़े भाई का सुख नहीं होगा। राहु की दशा में जातक का चलता उद्योग बन्द हो जायेगा।

8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु व्यापार में हानि देगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति द्वादश स्थान में



कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां द्वादश भाव में नीच का है। मकर राशि में पांच अंशों में बृहस्पति परमनीच का होता है। बृहस्पति के कारण यहां **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बना। जातक को यश नहीं मिलेगा। धन का नुकसान होगा। कुटुम्ब लोग दूर होते चले जायेंगे। विद्यायोग उत्तम, मकान सुख उत्तम परन्तु स्त्री व संतान सुख में न्यूनता रहेगी।

दृष्टि–द्वादश भावगत बृहस्पति की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृष राशि), षष्टम भाव (कर्क राशि) एवं अष्टम भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक को माता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। गुप्त शत्रु एवं रोग जातक को परेशान करते रहेंगे।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 2/श्लोक 8 के अनुसार धनेश यदि द्वादश में हो तो जातक सरकार में उच्च पद, नौकरी को पाता है पर उसके ज्येष्ट पुत्र की मृत्यु उसके सामने हो जाती है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में चंद्र+बृहस्पति की यह युति द्वादश भाव मकर राशि के अंतर्गत है। बृहस्पति+चंद्र की यह युति वस्तुतः

षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति यहां द्वादश भाव में नीच का होगा। जहां से बृहस्पति सुखस्थान, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: धन में कमी, लाभ में कमी महसूस करेंगे। फिर भी जातक को ऋण, रोग व शत्रु को भय नहीं रहेगा। जातक दीर्घायु होगा। उसे प्राकृतिक, आकस्मिक आपदाओं से बचाव होगा। जातक को वाहन सुख मिलेगा एवं भौतिक संसाधनों की प्राप्ति सहज में होती रहेगी। जातक को कोई भी वस्तु जीवन में आसानी से नहीं मिलेगी, सफलता निश्चित है पर संघर्ष के बाद।

2. **गुरु+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को विलम्ब विवाह करायेगा।

3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल उच्च का होगा। जातक को राज (सरकार) से परेशानी आ सकती है। **'नीचभंग राजयोग'** के कारण जातक परदेश में कमायेगा।

4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को संतान से चिंता एवं विद्या में बाधा करायेगा।

5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र जातक को परेशनी में डालेगा। पत्नी से विवाह सुख में तकरार रहेगी।

6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि **'नीचभंग राजयोग'** करायेगा। जातक धनवान होगा पर परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

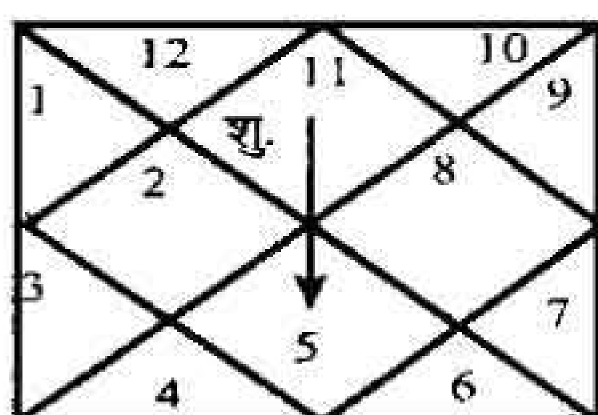
7. **गुरु+राहु**–यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह 'मकर राशि' में होंगे। बृहस्पति यहां नीच का होगा तो राहु मित्र राशि का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक अधिक खर्च के कारण कर्जदार होगा तथा व्यर्थ की यात्राएं करता फिरेगा।

8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु व्यर्थ की यात्राएं करायेगा। जातक को बुरे स्वप्न आयेंगे।

❑❑❑

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में



कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां प्रथम स्थान में कुंभ (मित्र) राशि में है। शुक्र के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। ऐसा जातक सुन्दर व आकर्षक स्वस्थ व हंसमुख होगा। जातक की पत्नी भी सुन्दर होगी। जातक का मकान एवं वाहन सुख उत्तम होगा। ऐसा जातक गीत-संगीत, फल-फूल, सुगन्ध, अभिनय एवं सुंदर वस्त्रों का शौकीन होगा। जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ शुक्र की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलत: जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** के अनुसार भाग्येश लग्न में हो तो जातक बड़ा ही भाग्यशाली, यशस्वी एवं कीर्तिवान् होता है।

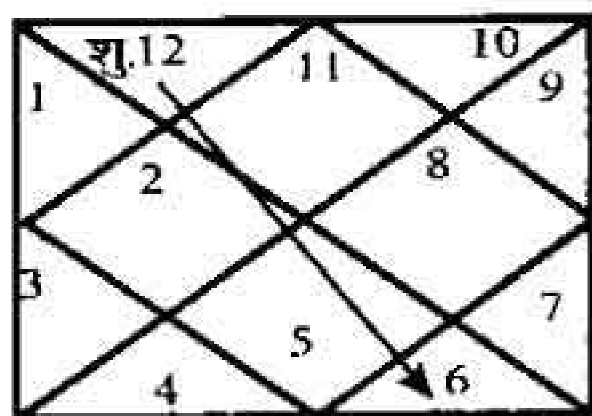
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा खूब उत्तम फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा होने से जातक का जीवनसाथी सुन्दर होगा। रंगीन मिजाज का होगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक का जीवनसाथी प्रभावशाली होगा एवं धन के मामलें में आत्मनिर्भर होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को भूमि लाभ देगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को विद्या का लाभ देगा। जातक की उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को माता की सम्पत्ति दिलायेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि यहां **'शश योग'** बनायेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु **'लम्पट योग'** बनाता है। जातक कामी होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को धंधे में कीर्ति देगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में



कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां द्वितीय स्थान में उच्च का है। मीन राशि में 27 अंशों में शुक्र परमोच्च का होता है। जातक मिष्टभाषी, विनम्र एवं धनवान होगा। कुटुम्ब सुख उत्तम, मां का सुख उत्तम, जातक का पिता धनवान व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

दृष्टि–द्वितीय भावगत शुक्र की दृष्टि अष्टम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 4/श्लोक 8 के अनुसार सुखेश यदि द्वितीय स्थान में हो तो ऐसा जातक सभ्य समाज में आदरणीय, साहसी, पराक्रमी, मिष्टभाषी, कुटुम्ब से युक्त भोग विलास में रहकर धन का उपयोग करता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक उत्तम धन कमायेगा। जातक का भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को धनी बनायेगा। माता का सुख मिलेगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को धनी ससुराल दिलायेगा। जीवनसाथी सुशील होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को सुन्दर भवन व भूमि का स्वामी बनायेगा।

4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध **'नीचभंग राजयोग'** करायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व धनी होगा।

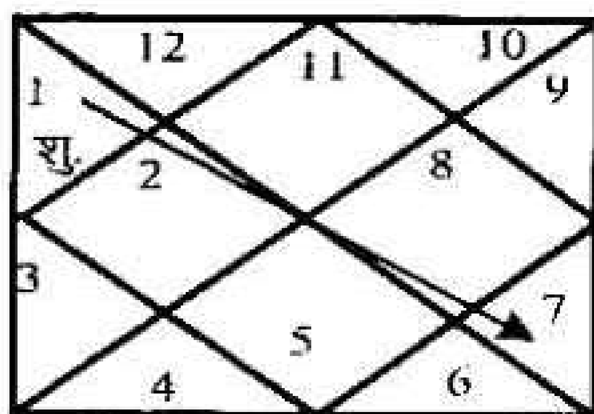
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ बृहस्पति **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। जातक उद्योगपति एवं महाधनी होगा।

6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि होने से जातक कठोर परिश्रमी होगा। कठोर परिश्रम से जातक बहुत धन-सम्पत्ति अर्जित करेगा। पर व्यक्ति परम स्वार्थी होगा।

7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु होने से जातक के धनागमन में रुकावट आयेगी।

8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु होने से जातक को आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ेगा

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में



कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां तृतीय स्थान में मेष (सम) राशि का है। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। जातक के बहनें अधिक होगी। जातक को माता का प्रेम नहीं मिलेगा। जातक यात्रा बहुत करेगा परन्तु पिता से अधिक धन कमायेगा। जातक स्वार्थी एवं भोगविलास प्रिय होगा।

दृष्टि—तृतीयभावगत शुक्र की दृष्टि भाग्यभवन अपने ही घर तुला राशि पर होगी। ऐसा जातक को धन, पद-प्रतिष्ठा एवं भाग्योदय के उत्तम अवसर प्राप्त होंगे।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 4/श्लोक 7 के अनुसार सुखेश यदि तृतीय स्थान में हो तो मनुष्य सदैव बीमार रहता है। भले ही वह पराक्रमी हो।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

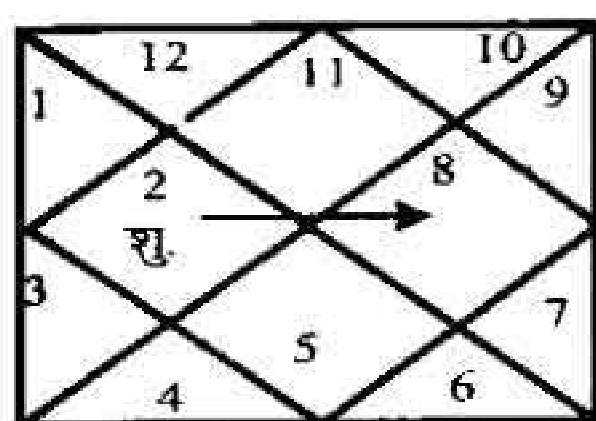
1. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ दिलायेगा।

2. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ उच्च का सूर्य जातक को महान् पराक्रमी बनायेगा। जातक को ससुराल से लाभ होगा।

3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल **'किम्बहुना नामक'** राजयोग बनायेगा। जातक का जनसम्पर्क लाजबाब होगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक के बहने अधिक होगी। जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति परिजनों व मित्रों से लाभ देगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि नीच का मित्र से अच्छे संबंध बनायेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु भाइयों में विवाद करायेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु मित्रों में विवाद करायेगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में



कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां वृष राशि में स्वगृही होगा। शुक्र के कारण **'कुलदीपक योग'** एवं **'मालव्य योग'** बनेगा। ऐसा जातक निश्चय ही राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। ऐसा व्यक्ति माता-पिता, स्त्री-संतान, विद्या-बुद्धि, मित्र-बंधु, धन, यश, पद-प्रतिष्ठा का पूरा सुख भोगेगा। वैवाहिक जीवन सुखी होगा। जातक लम्बी आयु, कीर्ति-यश अर्जित करेगा।

दृष्टि–चतुर्थभावगत शुक्र की दृष्टि दशम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक उत्तम व्यवसाय-व्यापार करेगा। जातक सौन्दर्य प्रसाधन से कमायेगा। जातक के पास उत्तम वाहन होगा। जातक का सामाजिक एवं राजनैतिक वर्चस्व रहेगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 4/श्लोक 1 के अनुसार ऐसा जातक मंत्री होगा। धनवान एवं भौतिक सुखों से परिपूर्ण होगा।

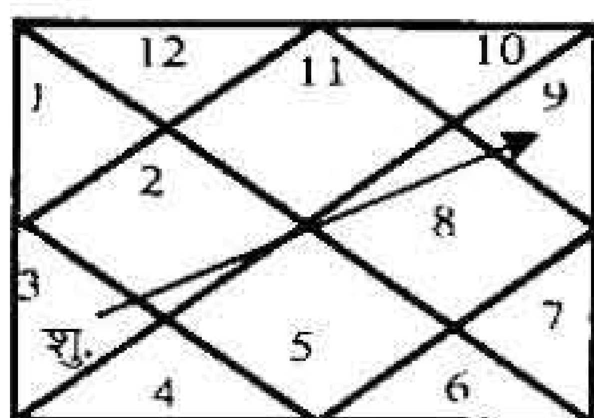
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा अत्यंत शुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। जातक को माता का सुख एवं संपत्ति मिलेगी। जातक के पास चार पहियों की गाड़ी होगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को सुन्दर पत्नी देगा। पत्नी धनवान एवं भाग्यशाली होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने से जातक के पास उत्तम भूमि व भवन होगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक विद्यवान होगा। जातक की सही उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति होने से जातक को माता-पिता का सुख मिलेगा। माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को उत्तम वाहन सुख देगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु माता का सुख तोड़ेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक की माता को बीमार करायेगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में



कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां पंचम स्थान में मिथुन (मित्र) राशि में है। जातक को विद्या सुख उत्तम मिलेगा। जातक संगीत-साहित्य, अभिनय कला का प्रेमी होगा। जातक को कन्या संतति अधिक होगी।

दृष्टि–पंचमस्थ शुक्र की दृष्टि एकादश स्थान (धनु राशि) पर होगी। जातक को व्यापार से लाभ होगा। जातक को सामाजिक व राजनैतिक सफलता मिलेगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 3 के अनुसार मनुष्य बड़ा ही भाग्यशाली होगा। जातक स्वाभिमानी एवं बृहस्पतिभक्त होगा।

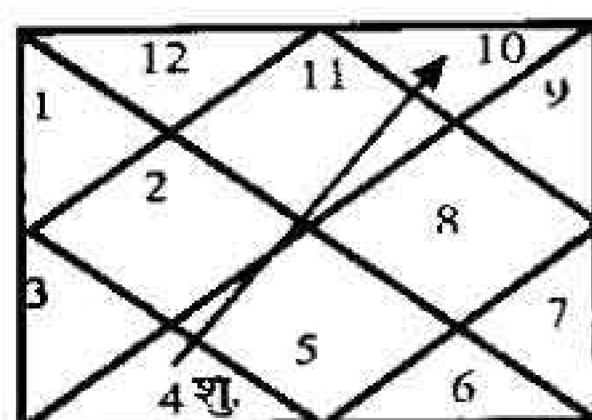
दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में शुभफल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा 'बहुपुत्र योग' कराता है। जातक की प्रथम संतति 'शल्य चिकित्सा' से होगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक की पत्नी भाग्यशाली होगी। जातक को विद्या में सफलता मिलेगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को पुत्र संतति भी देगा। जातक को व्यापार में लाभ होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध शैक्षणिक उपाधि देगा।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को संतान द्वारा धन की प्रप्ति करायेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को विदेश विद्या, विदेशी भाषा से लाभ दिलायेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु पुत्र संतान सुख में बाधा डालेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु संतान से चिंता करायेगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम स्थान में



कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां छठे स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में है। शुक्र की इस स्थिति से **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बना। जातक का विवाह विलम्ब से हो। विवाह सुख में बाधा बनी रहेगी। जातक के शत्रु अधिक होंगे। मूत्राशय में बीमारी संभव है।

दृष्टि–छठे भावगत शुक्र की दृष्टि व्ययभाव (मकर राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। आवक से अधिक खर्च होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 4 के अनुसार नवमेश यदि छठे हो तो जातक को अपने बड़े भाई एवं मामा का सुख नहीं मिलता। जातक के जन्म के बाद पिता को आर्थिक नुकसान होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा पर गुप्त बीमारी से ग्रसित रहेगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य **'विवाहभंग योग'** कराता है। जातक का विवाह विलम्ब से होता है अथवा पत्नी के होते हुए भी वैवाहिक सुख का नितांत अभाव रहता है।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'राजभंग योग'** की सृष्टि करता है। जातक पूर्ण परेशान रहता है। उसे अपयश मिलता है।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध **'संतानहीन योग'** बनाता है। जातक को विवाह व संतान सुख की न्यूनता रहेगी।

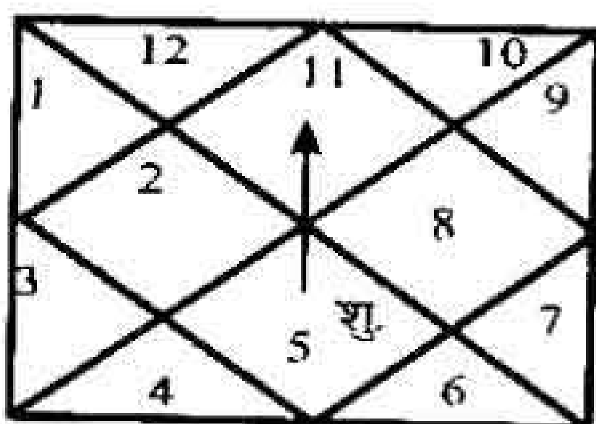
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाता है। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ता है।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिल पायेगा। जातक को पक्षाघात का भय रहेगा।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु गुप्त रोग देगा।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को सैक्स रोग देगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में



कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां सप्तम स्थान में सिंह राशि (शत्रु राशि) में है। शुक्र के कारण **'कुलदीपक योग'** बनेगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगा। माता का सुख उत्तम, जातक को धन, यश, कीर्ति मिलेगी। जातक को श्रृंगार में रस एवं परयुवती में रुचि रहेगी।

दृष्टि–सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्नस्थान (कुंभराशि) पर होगी। जातक को परिश्रमपूर्वक किये गये प्रयत्न का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 9/श्लोक 5 के अनुसार नवमेश यदि सातवें हो तो जातक भाग्यवान, गुणवान, यशस्वी एवं क़ीर्तिमान् होता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक को उत्तम गृहस्थ सुख मिलेगा। भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को अत्यंत सुन्दर व सुडौल जीवन साथी देगा।

2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य पत्नी व ससुराल प्रभावशाली देगा। जातक की पत्नी आत्मनिर्भर होगी।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने पर जातक कामी होगा एवं अन्य स्त्रियों को पीछे भटकता फिरेगा। स्त्री-मित्रों से लाभ है।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध विवाह के बाद भाग्योदय देगा एवं दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद देगा।

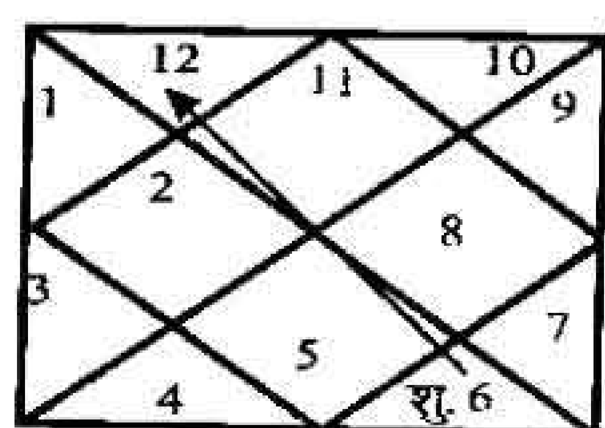
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति से धन लाभ दिलायेगा। पत्नी वफादार होगी।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि 'लग्नाधिपति योग' बनाता है। जातक को परिश्रमपूर्वक किये गये पुरुषार्थ का मीठा फल मिलेगा।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु 'लम्पट योग' बनाता है। जातक कामी व दुष्चरित्र होता है।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक की काम शक्ति बढ़ायेगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में



कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां अष्टम स्थान में नीच राशि में है। कन्या राशि के 27 अंशों में शुक्र परमनीच का होगा। शुक्र की इस स्थिति से **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बना। जातक को माता का सुख कमजोर होगा। शुक्र नवम भाव से बारहवें होने के कारण पिता से भी संबंध कमजोर रहेंगे। मकान का सुख भी ठीक नहीं।

दृष्टि–अष्टमस्थ शुक्र की दृष्टि धनभाव (मीन राशि) पर होगी। जातक का धन व्यर्थ के कार्यों में खर्च होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। ऐसा जातक धनी व ऐश्वर्यशाली होता है।

2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य 'विवाहभंग योग' बनाता है। प्रथमत: विवाह देरी से हो फिर बनी बनाई शादी टूट जावे।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनाता है। ऐसे जातक को अच्छे काम करते रहने पर भी अपयश मिलता है।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध **'संतानहीन योग'** बनाता है। विद्या में रुकावट के साथ संतान बाधा भी रहेगी।

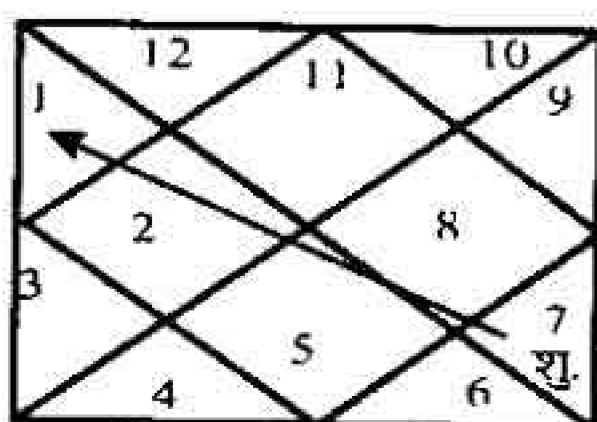
5. **शुक्र**+**गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाता है। ऐसे जातक को आर्थिक विषमताओं व दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** बनाता है। ऐसे जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलता जातक को पक्षाघात का भय रहेगा।

7. **शुक्र**+**राहु**–शुक्र के साथ राहु **'लम्पट योग'** बनाता है। ऐसे जातक व्यभिचारी होते हैं। गुप्त रोग संभव है।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गुप्त बीमारी देगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में



कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां नवम स्थान में स्वगृही होगा। जातक का भाग्य बलवान होगा। जातक का पिता, धनवान, दीर्घायु होता है। जातक को मकान व वाहन का सुख उत्तम होगा।

दृष्टि–नवम भावगत शुक्र की दृष्टि तृतीय स्थान (मेष राशि) पर होगी। ऐसे जातक के बहनें अधिक होगी। बहनें सभी धनवान व सम्पन्न होगी।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 4/श्लोक 8 के अनुसार भाग्येश भाग्य स्थान में हो तो जातक धन-धान्य से परिपूर्ण, अन्न-धन, सम्पत्ति वैभव से युक्त जीवन जीता है। उसके अनेक भाई-बहन होते हैं, सभी सुखी होते हैं।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का जबरदस्त भाग्योदय होगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र**+**चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा भाग्योदय में सहायक है। जातक को माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

2. **शुक्र**+**सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

3. **शुक्र**+**मंगल**–शुक्र के साथ मंगल भूमि लाभ दिलायेगे। जातक को भाई-बहनों का सुख मिलेगा।

4. **शुक्र**+**बुध**–शुक्र के साथ बुध उत्तम विद्या योग दिलायेगा। जातक मैनेजमेन्ट कोर्स में आगे बढ़ेगा।

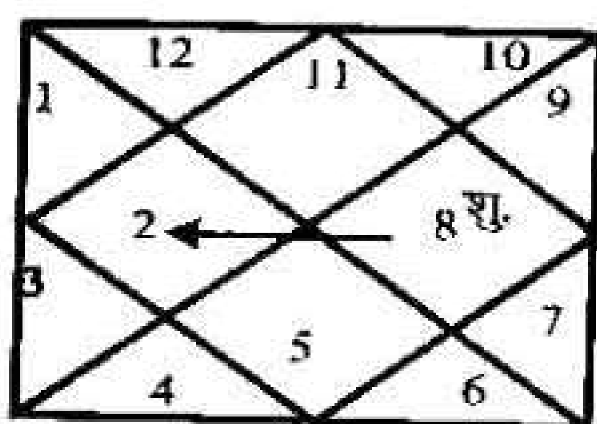
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति धन प्राप्ति के उत्तम अवसर प्रदान करता रहेगा। जातक धार्मिक एवं आध्यात्मिक विचारों वाला होगा।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि उच्च का होने से '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक के भाग्योदय में विशेष बाधाएं आयेंगी।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगा। महत्वाकांक्षाएं पूरी होंगी।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में



कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रहे है। शुक्र यहां दशम स्थान में वृश्चिक (सम) राशि में है। शुक्र के कारण '**कुलदीपक योग**' बनेगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि (Higher Educational Degree) मिलेगी। जातक का पिता धनवान एवं दीर्घजीवी होगा। वैवाहिक जीवन आदर्शमय होगा। जातक को स्त्री-संतान, पद-प्रतिष्ठा का सुख उत्तम श्रेणी का होगा।

दृष्टि–दशमस्थ शुक्र की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृष राशि) पर होगी। ऐसे जातक को माता का सुख उत्तम। मकान-वाहन का सुख अति उत्तम होगा।

निशानी–'**लोमेश संहिता**' अध्याय 9/श्लोक 2 के अनुसार भाग्येश यदि दशम स्थान में हो तो व्यक्ति राजमंत्री, सेनापति, I.S. अधिकारी जैसे उच्च पद को प्राप्त करता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में अति उत्तम फलदायक होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा नीच का होते हुए भी जातक को उत्तम वाहन सुख देगा। जातक चंचल स्वभाव का होगा।

2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य विवाह के बाद जातक को रोजी-रोजगार के उन्नत अवसर प्राप्त होंगे।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल हो तो '**रुचक योग**' बनेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा पर उसके अनेक पत्नियां होंगी (चन्द्रकला नाड़ी)।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को विद्याध्ययन के कारण आगे बढ़ायेगा। जातक व्यापारी होगा।

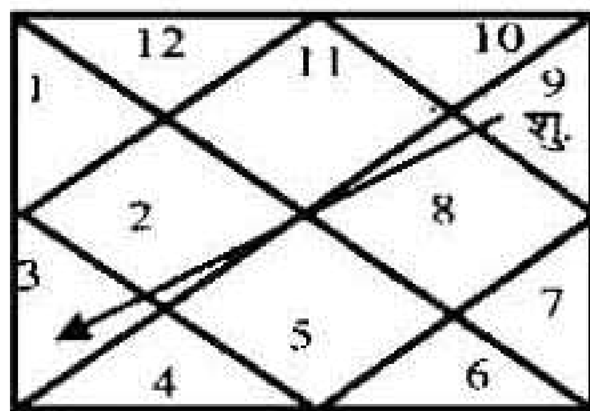
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति माता का धन दिलायेगा। माता का जातक पर विशेष कृपा होगी। जातक को उत्तम भवन भी होगा।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक परिश्रमी होगा तथा अपने परिश्रम से मकान बनायेगा।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक कामी स्वभाव का होगा तथा राजसुख में उसका यह स्वभाव बाधक होगा।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को व्यापार करने में प्रेरित करेगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में



कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां एकादश स्थान में धनु (सम) राशि में है। चौथे भाव का अधिपति होकर चौथे भाव से आठवें स्थान पर होने के कारण माता का सुख ठीक नहीं। जातक की विद्या भी अधूरी छूट जायेगी। जातक धनवान होगा। मित्र बहुत होंगे। आवक के जरिए शक्तिशाली होंगे।

दृष्टि–एकादश भावगत शुक्र की दृष्टि पंचम भाव (मिथुन राशि) पर है। ऐसे जातक को कन्या संतति अधिक होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 4/श्लोक 8 के अनुसार सुखेश यदि एकादश में हो तो जातक बहुत पराक्रमी होगा परन्तु सदैव बीमार रहेगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा सामान्य (मिश्रित) फलदायक होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को उद्योगपति बनायेगा। जातक व्यापार प्रिय होगा।

2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य विवाह के बाद उन्नति करायेगा। जातक सैक्सी होगा।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल भूमि लाभ के साथ जातक व्यापार की ओर प्रवृत होगा। व्यापार में लाभ होगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध व्यापार में लाभ। संतानसुख श्रेष्ठ एवं विद्या सुख भी श्रेष्ठ होने का संकेत देता है।

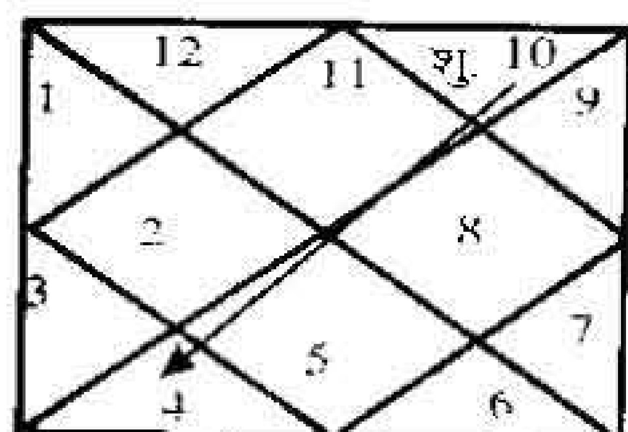
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को बड़े भाई से लाभ एवं धनी बनायेगा। जातक उद्योगपति होगा।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को व्यवहारिक ज्ञान में परिपूर्ण, व्यापारी बनायेगा।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनाता है। जातक कामी होगा। व्यापार में बाधा आयेगी। उद्योग फेल होगा।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु व्यापार में उतार-चढ़ाव लाता रहेगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में



कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां द्वादश स्थान में मकर (मित्र) राशि में है। शुक्र यहां '**सुखहीन योग**' एवं '**भाग्यभंग योग**' बना। चौथे भाव का अधिपति होकर बाहरवें जाने से जातक की माता छोटी उम्र में गुजर जावे अथवा बीमार रहे। मकान-वाहन का सुख ठीक नहीं। जातक को भाग्योदय हेतु बहुत कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। जीवन में व्यक्तिगत समस्याएं बहुत होंगी।

दृष्टि–द्वादश भावगत शुक्र की दृष्टि व्ययभाव (मकर राशि) पर होगी। जातक गलत कार्यों में रुपया खर्च करेगा। उसके शत्रु बहुत होंगे। परदेश में रहने से लाभ है।

निशानी– '**लोमेश संहिता**' अध्याय 9/श्लोक 4 के अनुसार नवमेश यदि बारहवें हो तो जातक को बड़े भाई एवं मामा का सुख नहीं मिलता।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। ऐसा जातक धनवान होगा। सैक्सी होगा।

2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य '**विवाहभंग योग**' बनाता है। जातक की कामुक प्रवृत्ति विवाह सुख में बाधक है।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल उच्च का जातक कामी होगा। स्त्रियों के पीछे भागेगा एवं गलत कार्यों में धन का अपव्यय करेगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध विद्या में रुकावट एवं संतान संबंधी चिंता बनी रहेगी।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाता है। जातक को आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि स्वगृही होकर **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक गलत कार्यों में रुपया खर्च करेगा। जातक को पक्षाघात का भय रहेगा।

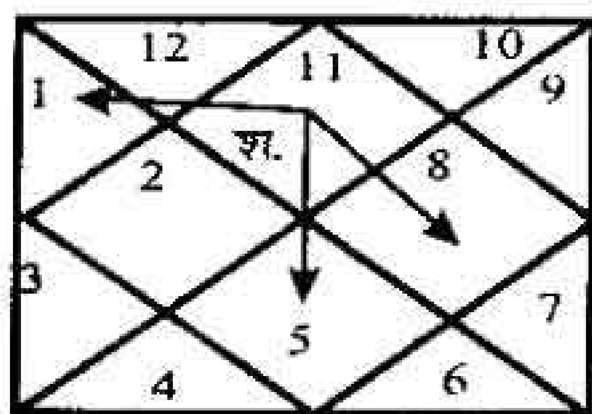
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक व्याभिचारी होगा। तथा भाग्योदय संबंधी कष्ट भोगेगा।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को स्त्री से विरक्ति दिलायेगा। जातक यात्राएं बहुत करेगा।

❑❑❑

कुंभलग्न में शनि की स्थिति

कुंभलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में



कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां प्रथम स्थान में कुंभ राशि का होकर स्वगृही है। कुंभराशि के अंशों तक शनि मूल त्रिकोणी कहलाता है। शनि की स्थिति के कारण **'शश योग'** बना। ऐसा जातक पुष्ट शरीर, पुष्ट वीर्य, काले बाल एवं आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा। ऐसे जातक के शत्रुओं का नाश दैवी-विपत्तियों से स्वत: ही हो जाता है।

दृष्टि—लग्नस्थ शनि की दृष्टि तृतीय स्थान (मेष राशि), सप्तम भाव (सिंह राशि) एवं दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: छोटे भाइयों से कम बनेगी पर समाज के अन्य लोगों से अच्छे संबंध होंगे। पत्नी के साथ कम बनेगी। जातक राजनीति में रुचि लेगा। सरकार में प्रभाव रहेगा।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 12/श्लोक 2 के अनुसार—व्ययेश मदने लग्ने जायासौख्य भवेन्नहि' व्ययेश यदि लग्न में हो तो जातक को पत्नी का सुख नहीं होगा। विद्या अधूरी छूट जायेगी। विवाह विलम्ब से होगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी। उसका भाग्योदय होगा, पराक्रम बढ़ेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा जातक को दुष्टमति एवं चित्तमर्म स्वभाव का बनायेगा।

2 **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। सूर्य शत्रुक्षेत्री तो शनि यहां स्वगृही होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की यह युति लग्न में होने से जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। पत्नी सुन्दर होगी परन्तु दुर्घटना में अंग-भंग होने का खतरा बना रहेगा। जातक का सही उन्नति पिता की मृत्यु के बाद होगी।

3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने से जातक का दाम्पत्य जीवन नीरस होगा।

4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध हो तो जातक को संतति सुख श्रेष्ठ मिलेगा।

5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति हो या बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक तत्वज्ञानी होगा।

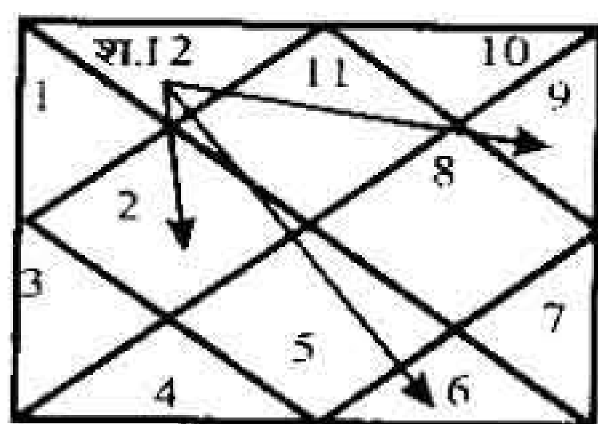
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र हो तो जातक करोड़पति होगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु यहां जातक को भौतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक उन्नति देगा।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को कीर्तिवन्त बनायेगा।

विशेष–शनि लग्न में हो तथा सूर्य, चंद्र, मंगल या राहु में से कोई भी ग्रह चौथे स्थान में हो तो व्यक्ति की पैतृक सम्पत्ति, धन इत्यादि सब कुछ बरबाद हो जाता है।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में



कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां द्वितीय स्थान में मीन (शत्रु) राशि में है। शनि यहां द्वादश भाव में तीसरे स्थान पर होने से द्वादश के दोष को नष्ट करने से शुभ फलदायक हो गया है। ऐसा जातक धनवान होगा। उसे उत्तम विद्या, धन, यश, कुटुम्ब सुख की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–द्वितीयस्थ शनि की दृष्टि मातृभाव (वृष राशि), अष्टम भाव (कन्या राशि) एवं एकादश भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक को माता के साथ खटपट रहेगी। जातक की आयु लम्बी होगी। पर धंधा में वांछित लाभ नहीं मिलेगा।

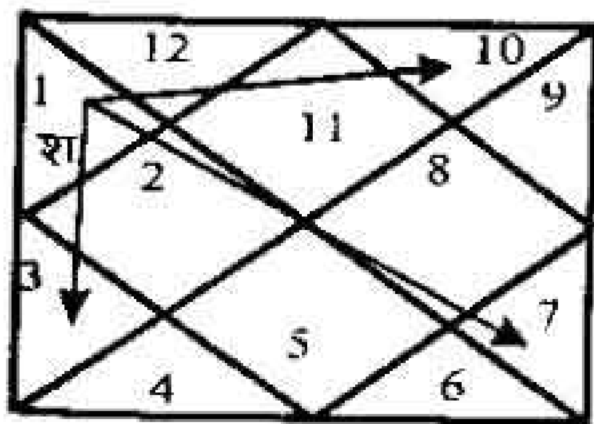
निशानी–ऐसा जातक पुराने मकान में मरम्मत करके रहेगा। वाहन में भी मरम्मत होती रहेगी। जातक भाषा से कुटुम्ब में कड़वाहट होगी।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा जातक को धन की आवक तो देगा पर जातक धनसंग्रह नहीं कर पायेगा। सारे रुपये खर्च होते चले जायेगें।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह 'मीन राशि' में होंगे। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की यह युति धन भाव में होने से जातक को पत्नी द्वारा धन मिलेगा। धन संग्रह में कठिनाइयां आयेंगी। पिता की मृत्यु के बाद जातक धनी होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक की वाणी में कड़वाहट एवं षड्यंत्र की बू देगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध नीच का होने से जातक वाक्पटु होगा परन्तु वाणी में हकलाहट रहेगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने से जातक कठोर पुरुषार्थी होगा एवं पुरुषार्थ के द्वारा धन अर्जित करेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र उच्च का जातक को परमसौभाग्यशाली एवं महाधनी बनायेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक को धनहानि करायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु धन प्राप्ति में विलम्ब करायेगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में



कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां तृतीय स्थान में नीच का होगा। मेष राशि के अंशों पर शनि परम नीच का होता है। जातक अपने भाई-बहनों से संबंध ठीक नहीं होगें। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। ऐसा जातक दूरदर्शी नहीं होता। तत्काल व तुरन्त लाभ के चक्कर में आगे का काम बिगाड़ देता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम भाव (मिथुन राशि), भाग्यभवन (तुला राशि) एवं व्यय भाव (मकर राशि) पर होगी। ऐसे जातक की विद्या अधूरी छूट जाये,

भाग्य तो उत्तम होगा पर पिता की सम्पत्ति को जातक ठुकरा देगा। जातक बड़े-बड़े खर्चे करेगा। जिससे ऋणग्रस्त हो जायेगा।

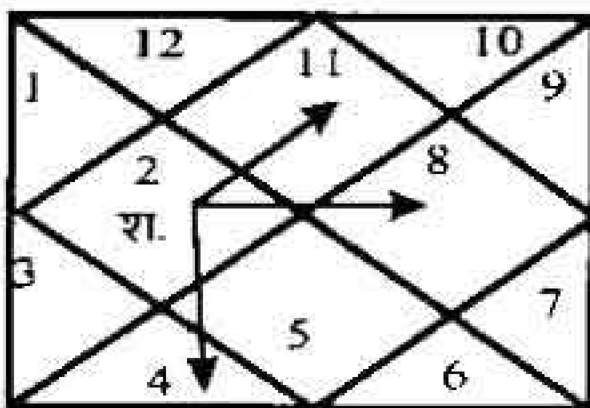
निशानी–जातक अपनी नारी व दीक्षित बृहस्पति से भी द्वेष रखने वाला होता है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा ज्यादा शुभ फल नहीं दे पायेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा जातक को परिजनों से लाभ देगा। परंतु जातक को छोटे भाई का सुख नहीं होगा।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह 'मेष राशि' में होंगे। सूर्य यहां उच्च का, शनि नीच का होकर **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक पराक्रमी होगा। उसे छोटे-बड़े दोनों भाइयों का सुख नहीं रहेगा। जाति के अलावा अन्य लोगों में बड़ी कीर्ति होगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल **'नीचभंग राजयोग'** करायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। प्रभावशाली होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को भाई-बहन दोनों का सुख देगा। जातक बुद्धिजीवी होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने से जातक कठोर परिश्रमी व पुरुषार्थी होगा। जातक को पुरुषार्थ का फल मिलेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को भाई-बहनों का सुख देगा। जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु पराक्रम भंग करेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को मित्रों से परेशानी दिलायेगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में



कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां चतुर्थ स्थान में वृष (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा एवं जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा। जातक की माता बीमार रहेगी। जातक पुराने मकान में रहेगा। जातक के वाहन भी होगा पर रिपेरिंग खर्चा बहुत खायेगा। शनि चतुर्थ में **'बंधन योग'** भी कराता है।

दृष्टि—चतुर्थभावगत शनि की दृष्टि छठे भाव (कर्क राशि), दशम भाव (वृश्चिक राशि) एवं लग्न भाव, अपने ही घर कुंभ राशि पर होगी। यह शनि रोग, ऋण व शत्रुओं का नाश करेगा। जातक को परिश्रमपूर्वक किये गये प्रयत्न में सफलता मिलेगी। जातक को व्यापार-व्यवसाय उत्तम होगा।

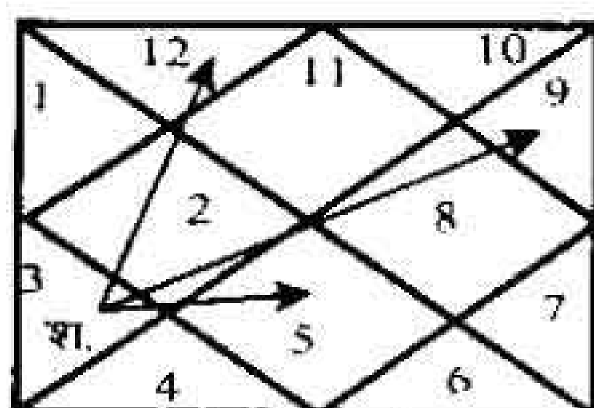
निशानी—जातक उद्योगपति होगा या बड़ा राजनेता होगा। **'लोमेश संहिता'** अध्याय 11/श्लोक 1 के अनुसार जातक क्रोधी होगा तथा संतान की ओर से दुःखी रहेगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा उच्च का होगा। जातक की माता उच्च घराने से होगी। पर बीमारी रहेगी। ऐसा जातक कहीं भी हो मरते वक्त स्वदेश जरुर लौटेगा।
2. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह 'वृष राशि' में है। सूर्य शत्रु क्षेत्री तो शनि मित्र क्षेत्री होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की युति चतुर्थ भाव में होने से जातक को माता-पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। माता की मृत्यु छोटी आयु में होगी।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल जातक को सरकारी नौकरी अथवा सरकारी ठेकों से लाभ दिलायेगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध उत्तम भवन सुख देगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति जातक को स्वभर्जित पराक्रम से धनी बनायेगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यवान होगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु माता को अल्पायु देगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु माता को लम्बी बीमारी देगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में



कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां पंचम भाव में मिथुन (मित्र) राशि में है। जातक का विवाह देरी से होगा। पत्नी उम्र में खुद से बड़ी होगी। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा। संतान देरी से

होंगे, कम होंगे। फिर भी जातक को स्त्री सुख, जमीन-जायदाद, माता-पिता व संतान का सुख मिलेगा।

दृष्टि–पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि), लाभ भाव (धनु राशि) एवं धन भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक के दाम्पत्य सुख में कुछ न कुछ कमी रहेगी। रोजी-रोजगार की प्राप्ति कठिनता से होगी। धन प्राप्ति हेतु कठोर परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

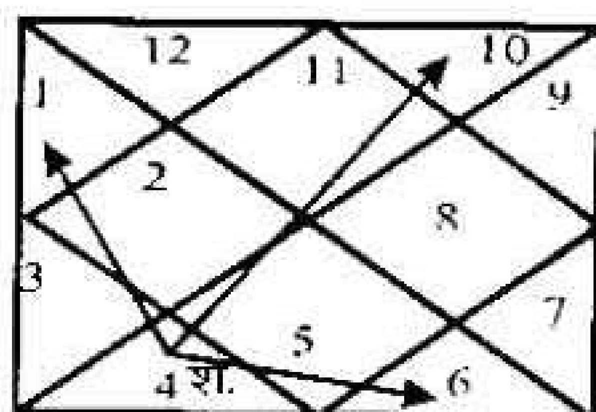
निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 1/श्लोक 5 के अनुसार लग्नेश पांचवें होने पर जातक को बड़ी संतति की मृत्यु उसके आंखों के सामने होती है। जातक को संतान सुख देरी से मिलेगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा जातक को प्रथम कन्या संतति देगा। प्रारंभिक विद्या में रुकावट आने के बाद जातक उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करेगा।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह 'मिथुन राशि' में है सूर्य सम राशि में तो शनि मित्र राशि में होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की युति पंचम भाव में होने से जातक की प्रथम संतति की अकाल मृत्यु संभव है। एकाध गर्भपात संभव भी है।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक को भूमि, भवन का लाभ देगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध उच्च शैक्षणिक उपाधि दिलायेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति जातक को धनी बनायेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को धनी बनायेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु संतान सुख में बाधक है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु प्रथम संतति शल्य चिकित्सा से करायेगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति षष्टम स्थान में



कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां छठे स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में है। शनि की इस स्थिति से **'लग्नभंग योग'** बना। व्ययेश होकर छठे होने से **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** भी बना।

ऐसा जातक धनी होगा। जीवन में सभी प्रकार के सुख ऐश्वर्य संसाधनों की प्राप्ति होगी। पर जीवन में संघर्ष बहुत करना पड़ेगा। अचानक खर्चे आयेंगे। छठे शनि जातक को रोग मुक्त नहीं होने देता है।

दृष्टि–छठे भावगत शनि की दृष्टि अष्टम भाव (कन्या राशि), व्यय भाव (मकर राशि) एवं तृतीय भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक के शत्रु बहुत होंगे। जातक पर खर्च व कर्ज की जबाबदारी रहेगी। जातक के मित्र विश्वासयोग्य नहीं होंगे।

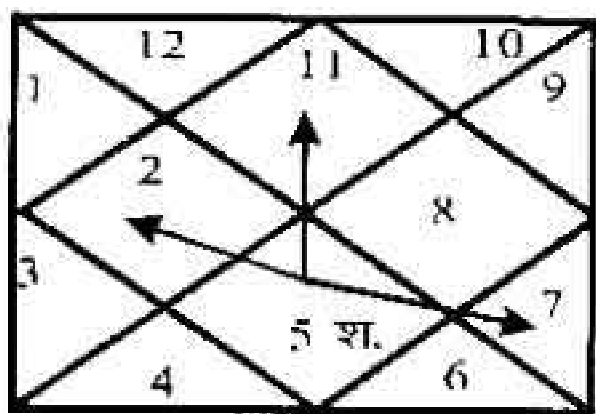
निशानी–प्रथम प्रयत्न में किसी भी प्रकार के कार्य में सफलता नहीं मिलेगी। जातक के व्यसनी होने की संभावना अधिक रहेगी।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा। ऐसा जातक धनी होगा। पर मानसिक परेशानी में रहेगा। जातक को तेज सिर दर्द की बीमारी रहेगी।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह 'कर्क राशि' में है। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री है। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की इस युति में **'लग्नभंग योग'**, **'विवाहभंग योग'** भी बनेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिल पायेगा। विवाह विलम्ब से हो अथवा दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण रहेगा। विवाह विच्छेद की संभावना है।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा। ऐसा जातक व्यापार में हानि उठायेगा। समाज में अपयश मिलेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध **'संततिहीन योग'** बनायेगा। जातक को संतान संबंधी चिंता रहेगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा। जातक की आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र **'सुखभंग योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु काफी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। जातक को पक्षाघात का भय रहेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु गुप्त रोग देगा। जातक रोग मुक्त नहीं हो पायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु है तो जातक जन्म से धनवान होगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में



कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां शनि सातवें स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में है। यहां लग्नेश की लग्न पर दृष्टि होने से जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। जातक को माता-पिता का सुख तो मिलेगा पर संपत्ति नहीं मिलेगी। जातक अपनी धर्मपत्नी के साथ खटपट करता रहेगा। तकरार होती रहेगी। जातक का चरित्र संदेहास्पद होगा। जातक को पेट की तकलीफ रहेगी।

दृष्टि—सप्तमस्थ शनि की दृष्टि भाग्य स्थान (तुला राशि), लग्न स्थान (कुंभ राशि) एवं चतुर्थ भाव (वृष राशि) पर होगी। ये सभी शनि की उच्च, स्व एवं मित्र राशियां है। जातक भाग्यशाली होगा, परिश्रम का फल मिलेगा। जातक के पास निजी भवन एवं वाहन होगा।

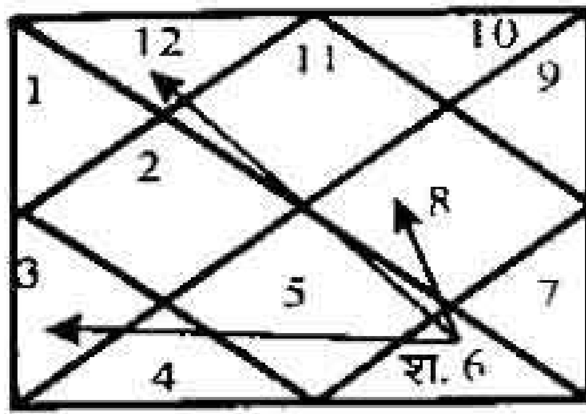
निशानी—जातक पुराना मकान अथवा पुराना वाहन खरीदेगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक की उन्नति व भाग्योदय करायेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा जातक को उत्तम विवाह सुख देगा।
2. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह 'सिंह राशि' में है। सूर्य यहां स्वगृही तो शनि शत्रु क्षेत्री होगा। लग्नेश शनि व सप्तमेश सूर्य की इस युति से पति-पत्नी के बीच अहम् का टकराव होगा। जातक की पत्नी कमाऊ एवं प्रभावशाली महिला होगी।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल जातक को भूमि-भवन का लाभ देगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध जातक को उत्तम संतान सुख देगा। विद्या सुख देगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति होने से जातक को पुरुषार्थ के द्वारा धन की प्राप्ति होगी।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र होने से जातक सौभाग्यशाली होगा। जातक भौतिक सुखों से सम्पन्न होगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु दाम्पत्य जीवन में विष घोलेगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु दाम्पत्य जीवन में कलह करायेगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में



कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां अष्टम स्थान में कन्या (मित्र) राशि में है। शनि की इस स्थिति से **'लग्नभंग योग'** बना। व्ययेश शनि अष्टम में होने से **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** बनेगा। ऐसा जातक धनी, मानी एवं प्रतिष्ठित होगा, परन्तु जातक अपनी उन्नति हेतु कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। जातक का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। अकस्मात रोग व शत्रुओं का प्रकोप होगा। शनि अष्टम में बिना कारण व्यक्ति को झगड़े-झंझट में फंसा देता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ शनि की दृष्टि दशम भाव (वृश्चिक राशि), धन भाव (मीन राशि) एवं पंचम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को राजकाज में बाधा उत्पन्न होगी। धन प्राप्ति हेतु भारी परिश्रम करना पड़ेगा। जातक को संतान संबंधी चिंता रहेगी। संतान के साथ संबंध अच्छे नहीं होंगे।

निशानी– **'लोमेश संहिता'** अध्याय 1/श्लोक 7 के अनुसार ऐसा जातक तंत्र विद्या का जानकार, बड़ा तांत्रिक, ज्येतिषी व भविष्यवक्ता होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

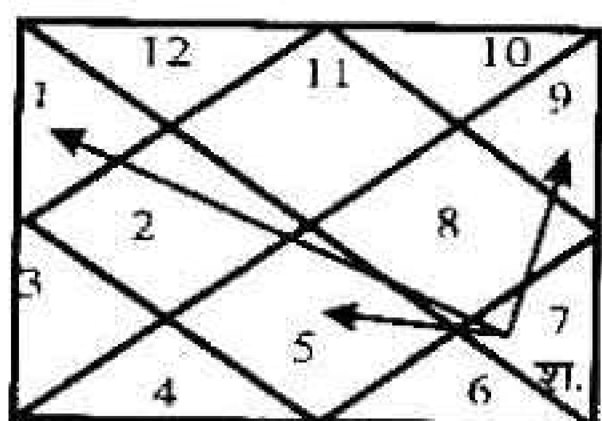
1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा **'विपरीत राजयोग'** कराता है। जातक धनी होगा पर उसकी पत्नी बीमार रहेगी। जातक को तेज सिरदर्द की बीमारी रहेगी।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह 'कन्या राशि' में है। सूर्य यहां शत्रु क्षेत्री तो शनि मित्र क्षेत्री है। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की इस युति में **'लग्नभंग योग'** एवं **'विवाहभंग योग'** बनेगा। जातक को मेहनत का फल नहीं मिलेगा। विवाह विलम्ब से हो अथवा दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण रहेगा। पति-पत्नी में दूरियां रहेगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल द्विभार्या योग कराता है। पति-पत्नी में कलह रहेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध संतान सुख में बाधक है।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** बनाता है। जातक को आर्थिक विषमताओं से झूंझना पड़ेगा।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनाता है। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक को पक्षाघात का भय रहेगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक को शारीरिक कष्ट देगा। अंग-भंग करायेगा।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को शारीरिक पीड़ा देगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में



कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां नवम स्थान में शनि उच्च का होगा। तुला राशि में अंशों में शनि परमोच्च का होता है। ऐसे जातक का पिता प्रतिष्ठित एवं समाज का अग्रणी व्यक्ति होगा। जातक स्वयं धनी होगा। धर्मात्मा होगा। दानी होगा। जातक को अपने कुटम्बियों, भाई-बहनों से लगाव रहेगा। जातक अहंकारी होगा जिससे पति-पत्नी में तकरार होता रहेगा।

दृष्टि–नवमभावगत शनि की दृष्टि एकादश स्थान (धनु राशि), पराक्रम स्थान (मेष राशि) एवं सप्तम भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। जातक पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल धनाढ्य होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 9/श्लोक 4 के अनुसार यदि व्ययेश नवम स्थान में हो तो जातक अपनी स्त्री व दीक्षित बृहस्पति से द्वेष करने वाला होता है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की धन, यश, प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक का भाग्योदय होगा।

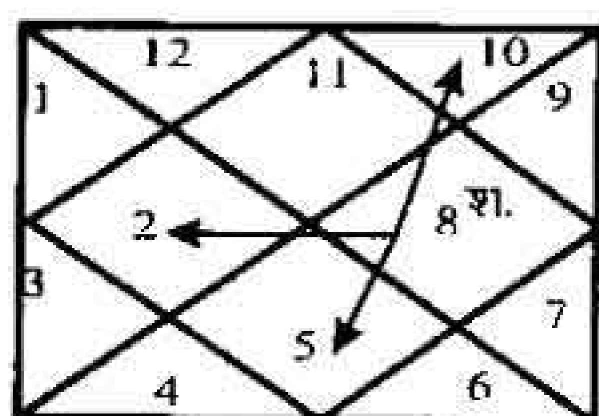
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा जातक को भाग्यशाली बनायेगा। जातक धनी होगा।

2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह 'तुला राशि' में है। सूर्य यहां नीच का तो शनि उच्च का होने से **'नीचभंग राजयोग'** बना। लग्नेश व सप्तमेश की नवमभाव में यह युति जातक को राजातुल्य ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी बनायेगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा पर पिता की मृत्यु के बाद जातक की किस्मत विशेष रूप से चमकेगी।

3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक को बड़ी भूमि का स्वामी बनायेगा। भाइयों से लाभ देगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को बुद्धिशाली बनायेगा। प्रथम संतति के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने से परिश्रम का लाभ मिलेगा। ऐसा जातक अपनी किस्मत खुद चमकायेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र **'किम्बहुना योग'** करायेगा। ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली एवं राजातुल्य पराक्रमी होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक के भाग्योदय में बाधक है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक के भाग्य में चमक लायेगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में



कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां दशम स्थान में शनि वृश्चिक (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक को उत्तम नौकरी, व्यवसाय, व्यापार का सुख मिलेगा। जातक का स्वास्थ्य उत्तम होगा। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक व प्रभावशाली होगा। ऐसा जातक किसी बड़ा संस्था का प्रमुख या सरकार में उच्च पद को प्राप्त करेगा।

दृष्टि–दशमभावगत शनि की दृष्टि व्यय भाव (मकर राशि), चतुर्थ भाव (वृष राशि) एवं सप्तम भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। पैसा हाथ में नहीं रुकेगा। माता का स्वास्थ्य खराब रहेगा। भौतिक एवं शयन सुख कमजोर। जातक के पत्नी के साथ तर्क-वितर्क होता रहेगा।

निशानी–जातक करोड़पति होगा। परन्तु **'लोमेश संहिता'** के अनुसार जातक का पुत्र जातक की आज्ञा में नहीं रहेगा। पिता से विपरीत चलेगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। शनि की दशा में जातक को अकल्पित धन मिलेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा, सरकारी नौकरी में बाधक है। जातक की माता बीमार रहेगी।

2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह 'वृश्चिक राशि' में है। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री है। लग्नेश शनि और सप्तमेश सूर्य की यह युति दशम भाव में जातक को करोड़पति बनायेगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा परन्तु सही अर्थों में भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।

3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल **'रुचक योग'** बनायेगा। ऐसा जातक करोड़पति होगा। राजा के समान पराक्रमी एवं प्रभावशाली होगा।

4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को बुद्धिबल से धन दिलायेगा।

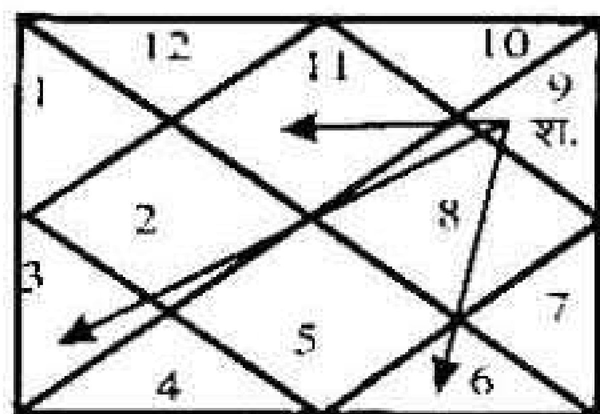
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति परिश्रम का लाभ देगा। ऐसा जातक अपनी मेहनत से अपनी किस्मत चमकायेगा।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को भाग्यशाली बनायेगा। जातक के पास एक से अधिक वाहन होगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक को सरकारी दण्ड दिलायेगा।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को सरकारी ठेके में बाधा पैदा करेगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में



कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां एकादश स्थान में धनु (सम) राशि में है। लग्नेश लग्न को देखने से जातक का स्वास्थ्य उत्तम होगा। जातक को माता-पिता, स्त्री-संतति, पद-प्रतिष्ठा, धन प्राप्ति का सुख रहेगा। जातक रहस्यमय विद्याओं एवं भविष्य बताने वाली विद्याओं का जानकार होगा। जातक की संतति अपने पिता के धंधे व्यवसाय में रुचि रखेगा। शनि बारहवें भाव से बारहवें स्थान पर होने के कारण ज्यादा अशुभफल नहीं देगा। उसे व्ययेश होने का दोष समाप्त हो जायेगा।

दृष्टि–एकादश भावगत शनि की दृष्टि लग्न स्थान (कुंभ राशि), पंचम स्थान (मिथुन राशि) एवं अष्टम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक तंदुरुस्त होगा। जातक को संतान संबंधी चिंता रहेगी। जातक दीर्घायु को प्राप्त करेगा।

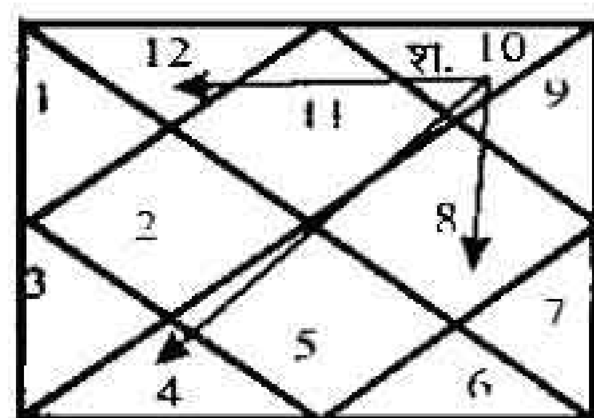
निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 12/श्लोक 5 के अनुसार जातक का पुत्र जातक के कहने में नहीं रहेगा अथवा पुत्र होकर गुजर जावे। अर्थात् पुत्र संतान का सुख कमजोर होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। जातक की शनि धन लाभ करायेगा। बीमारी ठीक होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा को व्यापार से लाभ होगा।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह 'धनु राशि' में है। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री है। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की यह युति एकादश स्थान में जातक को उद्योगपति बनायेगी। जातक के व्यापार-व्यवसाय में उन्नति विवाह के बाद होगी पर जातक सही अर्थों में धनपति पिता की मृत्यु के बाद होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल भूमि से लाभ दिलायेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को विद्या से लाभ देगा। प्रथम संतति के बाद भाग्योदय होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ स्वगृही बृहस्पति जातक को धनी एवं उद्योगपति के रुप में स्थापित करेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को बड़े उद्योग का स्वामी बनायेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु व्यापार में घाटा करायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु व्यापार में उतार-चढ़ाव करायेगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में



कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां द्वादश स्थान में स्वगृही होगा। शनि की इस स्थिति में **'लग्नभंग योग'** एवं **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** बनेगा। ऐसा जातक धनी, मानी एवं विविध ऐश्वर्य से सम्पन्न व्यक्ति होगा परन्तु जीवन में पुरुषार्थ बहुत करना पड़ेगा। जातक के व्यर्थ खर्च अधिक होंगे। जातक विदेश जायेगा। विदेशी भाषा पढ़ेगा। जन्म स्थान से दूर परदेश जाकर उत्तम धन कमायेगा।

दृष्टि–द्वादशभावगत शनि की दृष्टि धनभाव (मीन राशि), छठे भाव (कर्क राशि) एवं दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक के धनसंग्रह में बाधा आयेगी। ऐसे जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जातक के राजकाज में बाधाएं बहुत आयेगी।

निशानी– **'लोमेश संहिता'** अध्याय 1/श्लोक 7 के अनुसार जातक बड़ा तांत्रिक होगा। गूढ़ एवं रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

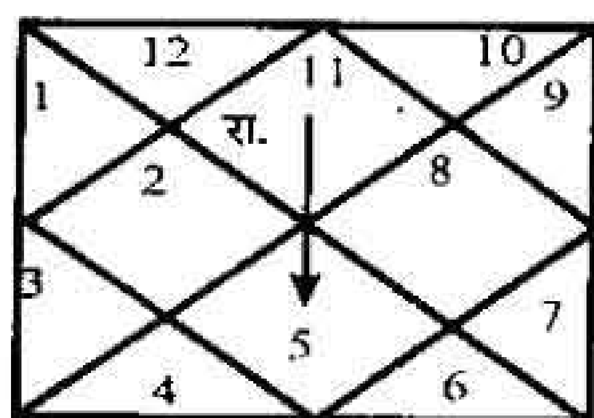
शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा **'विपरीत राजयोग'** के कारण जातक को धनी बनायेगा। जातक को तेज सिरदर्द की बीमारी रहेगी।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह 'मकर राशि' में है। सूर्य यहां शत्रु क्षेत्री तो शनि स्वगृही होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की इस युति से **'लग्नभंग योग'** एवं **'विवाहभंग योग'** बनेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। विवाह विलम्ब से होगा अथवा दाम्पत्य जीवन में बिछोह व तनाव की स्थिति रहेगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल **'किम्बहुनानामक राजयोग'** करायेगा। ऐसे जातक को विदेश में लाभ होगा। जातक बहुत धनी होगा। पर खर्चीले स्वभाव का होगा। ग्रहों की मद स्थिति जातक को आसमान से जमीन पर अवश्य पटकता है।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध **'संतानहीन योग'** बनाता है। जातक के विद्या में बाधा आयेगी। संतति को लेकर चिंता रहेगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। ऐसा जातक धनी होगा एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। जातक को भौतिक सुखों व उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु काफी परिश्रम करना पड़ेगा। जातक को पक्षाघात का भय रहेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक को धनहानि करायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु बाहरी यात्राएं करायेगा। जिनका अनुभव दुःखद होगा।

❑❑❑

कुंभलग्न में राहु की स्थिति

कुंभलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में



कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां प्रथम स्थान अपनी मूल त्रिकोण राशि में होगा। जातक के मुंह का दिखाब बेडौल, दांत बाहर निकले हुए होगे। जातक ईर्ष्यालु स्वभाव का होगा। ऐसा जातक परिश्रमी, पुरुषार्थी होता है तथा परिश्रम के उपरान्त धन, ऐश्वर्य, नौकरी-व्यापार के सुख की प्राप्ति होती है।

दृष्टि–राहु की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि) पर होने से जातक के दाम्पत्य सुख में बिगाड़ उत्पन्न होगा। वैवाहिक जीवन दु:खी होगा।

निशानी–जातक प्रेम विवाह करेगा। ऐसा जातक गुप्त चिंताओं से ग्रस्त रहता है।

दशा–राहु का दशा शुभ फल देगी। परिश्रम से भाग्योदय करायेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक अस्थिर मनोवृत्ति वाला, क्षीण मनोबल वाला व्यक्ति होगा।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक गर्म मिजाजी, लड़ाकू एवं कमजोर आत्मबल वाला होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अगारंक योग'** बनायेगा। जातक उग्र स्वभाव का होगा। भूमि व भाइयों को लेकर विवाह होगा।

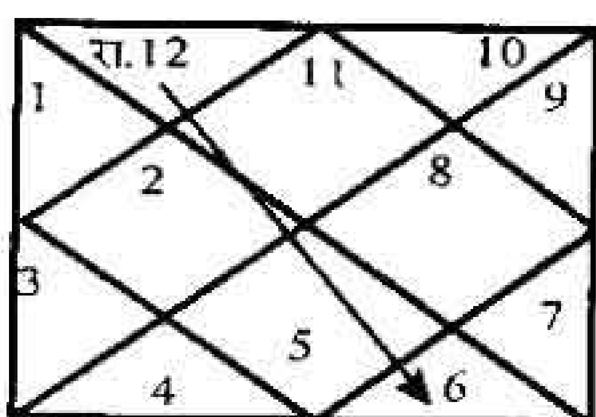
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जडत्व योग'** बनायेगा। जातक को व्यापार व विद्या में नुकसान होगा।

5. **राहु+गुरु**–यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह 'कुंभ राशि' में होंगे। लग्नस्थ बृहस्पति यहां दु:खी होकर समराशि में होगा जबकि राहु अपनी मूलत्रिकोण राशि में हर्षित होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक जिद्दी, हठी एवं धार्मिक होते हुए भी नास्तिक विचारों वाला, तर्क-विकर्त में विश्वास रखने वाला जातक होगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक व्याभिचारी होगा। माता का सुख, भाग्य का सुख कुण्ठित होगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'शश योग'** के कारण राजातुल्य पराक्रमी होगा पर निर्णय गलत होंगे। जातक हठी होगा।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में



कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां स्थान में मीन राशि में होकर नीच का होगा। जातक की भाषा कठोर होगी। कुटुम्ब में यश नहीं। आंख की दृष्टि कमजोर। राहु की यह स्थिति धन सग्रंह में बाधक है। कभी-कभी जातक को घोर आर्थिक संकटों का शिकार होना पड़ेगा।

दृष्टि–द्वितीय भावगत राहु की दृष्टि अष्टम भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक अपने शत्रुओं से परेशान रहेगा। पर ऐसा जातक बड़ा हिम्मत वाला होता है।

निशानी–घर-परिवार में दैनिक जरुरतों की पूर्ति हेतु मानसिक चिंता और तनाव उत्पन्न होते हैं।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा धन नाश करायेगी। परेशानी उत्पन्न करेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक के धन प्राप्ति में रुकावट आयेगी।

2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक को कुटुम्ब सुख में बाधा आयेगी वाणी कड़वी होगी।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अकारक योग'** बनायेगा। जातक को भाई व भूमि सुख में बाधा आयेगी। वाणी कड़की होगी, लड़ाकू होगी।

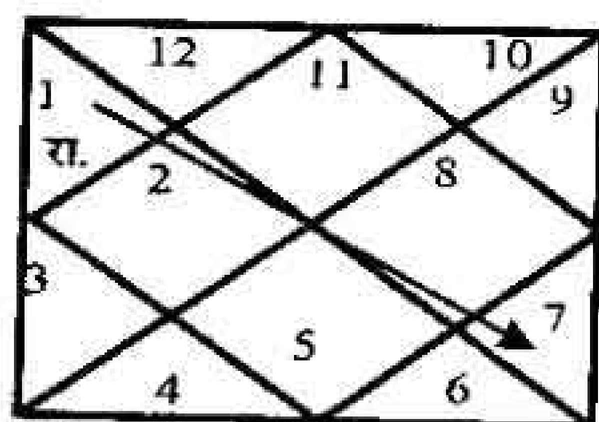
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। विद्या में बाधा आयेगी।

5. **राहु+गुरु**–यहां द्वितीय भाव में दोनों ग्रह 'मीन राशि' में होंगे। बृहस्पति यहां स्वगृही जबकि राहु नीच का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। फलतः धन के घड़े में छेद होगा। जातक जितना भी कमायेगा उसकी बरकत नहीं होगी। जिम्मेदारी बहुत ज्यादा रहेगी।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक कामी होगा, धनी होगा पर रुपया गलत कार्यों में खर्च करेगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व दुराचारी होगा। परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। ऐसा व्यक्ति परम स्वार्थी होता है।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में



कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां तृतीय स्थान में मेष सम राशि का है। जातक डरपोक एवं अधार्मिक होगा। पिता एवं छोटे भाई-बहनों के साथ संबंध अच्छे नहीं होंगे। यहां राहु राजयोगकारक होने से जातक पराक्रमी होगा। बहुत मित्रों वाला होगा।

दृष्टि–तृतीय भावगत राहु की दृष्टि भाग्यभवन (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक भाग्यशाली होगा। अपनी गुप्त शक्ति एवं बुद्धि चातुर्य के द्वारा कार्य में सफलता प्राप्त करके ही दम लेगा।

निशानी–दैहिक, मानसिक कष्ट एवं संघर्ष रहेगा। अपनी गुप्त कमजोरियों व चिंताओं को छिपाता है प्रकट रुप से विजयी बना रहता है।

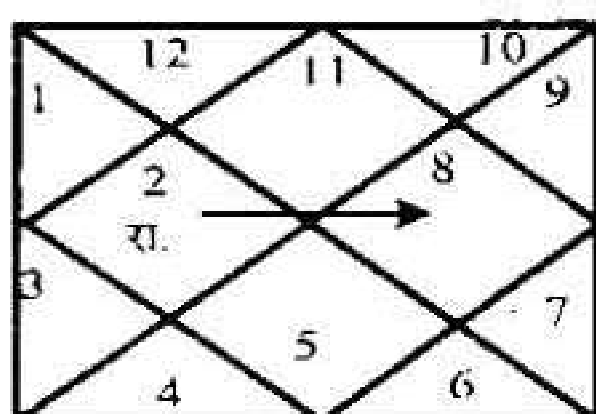
दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी। संघर्ष के बाद सफलता निश्चित है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का पराक्रम भंग होगा। मित्रों में अपयश मिलेगा।

2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक का पराक्रम दूषित होगा। जातक तेजस्वी स्वभाव का होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अगांरक योग**' बनायेगा। जातक उग्र स्वभाव होगा। भाइयों का सुख होगा। पर भाइयों से बनेगी नहीं।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जडत्व योग**' देगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। मित्रों से लाभ नहीं ले पायेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां तृतीय भाव में दोनों ग्रह 'मेष राशि' में होंगे। बृहस्पति मित्र राशि में तो राहु सम राशि का होकर '**चाण्डाल योग**' बनायेगा। ऐसे जातक का पराक्रम कुण्ठित होगा। भाईयों से नहीं बनेगी। मित्र दगा देंगे।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक स्त्री के कारण बदनाम होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक हठी व जिद्दी होगा।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां चतुर्थ स्थान में वृष उच्च राशि का है। जातक को मकान-वाहन का सुख उत्तम। पर माता का सुख बराबर नहीं। जातक का घरेलू जीवन अशान्त एवं संकटपूर्ण रहेगा। भूमि एवं मकान को लेकर विवाद रहेगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत राहु की दृष्टि दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। ऐसे जातक का प्रारंभिक जीवन दु:खी व कष्टपूर्ण होगा।

निशानी–जातक विद्याध्ययन रुक-रुक कर करेगा पर करेगा जरुर।

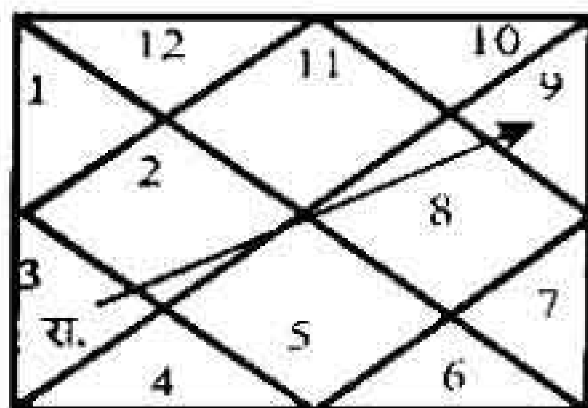
दशा–राहु का दशा अंतर्दशा में संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी। संघर्षों से टकराने के बाद जीवन में मीठा फल मिलेगा। भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक का मन विचलित रहेगा। माता का सुख कमजोर होगा।

2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का आत्मबल कमजोर होगा। पिता का सुख नष्ट होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। जातक उग्र स्वभाव का होगा। भाइयों का सुख कमजोर वाहन से दुर्घटना संभव है।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जडत्व योग'** बनायेगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। विद्या में बाधा आयेगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां चतुर्थ भाव में दोनों ग्रह 'वृष राशि' में होंगे। बृहस्पति शत्रु राशि में तो राहु अपनी उच्च राशि में होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। जातक की माता अल्प आयु में गुजर जाएगी। धन की कमी सदैव बनी रहेगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक व्याभिचारी होगा। **'मालव्य योग'** के कारण धनी-अभिमानी होगा। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व दुराचारी होगा। परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में



कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां पंचम स्थान में मिथुन राशि का मूल त्रिकोणी होकर स्वगृही है। जातक को संतान संबधी चिंता रहेगी। प्रारंभिक विद्या में बाधा आयेगी। परन्तु बाद में विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में विशेष दक्षता प्राप्त करेगा।

दृष्टि–पचंमस्थ राहु की दृष्टि एकादश भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: धंधे में रुकावट महसूस होगी। बड़े भाई से संबंध ठीक नहीं होंगे।

निशानी–ऐसा जातक अच्छा बोलने वाला, चतुर वक्ता एवं तीव्र ग्राही बुद्धि से सम्पन्न व्यक्ति होगा।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी पर विशेष दक्षता से काम लेना पड़ेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का मन चंचल होगा। संतान सुख में बाधा रहेगी। विद्या में बाधा आयेगी।

2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का आत्मबल कमजोर होगा। संतान सुख में बाधा आयेगी।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। जातक उग्र स्वभाव का होगा। भाइयों से नुकसान व संतति का नुकसान संभव है।

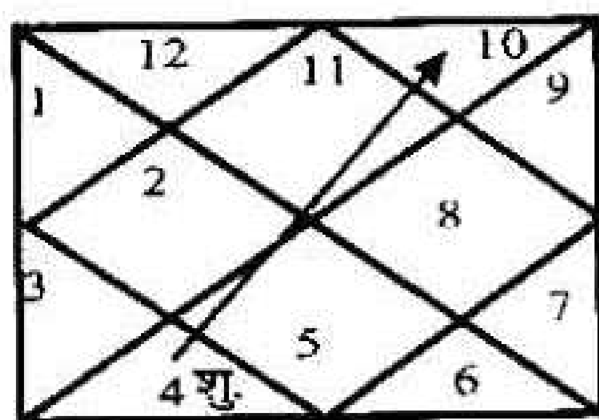
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। विद्या में बाधा संभव है। पुत्र संतति में बाधा।

5. **राहु+गुरु**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह 'मिथुन राशि' में होंगे। बृहस्पति शत्रुक्षेत्री तो राहु यहां मूलत्रिकोणी होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक विद्या में रुकावट प्राप्त करेगा। संतान को लेकर भी चिंता बनी रहेगी।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक व्यभिचारी होगा। पुत्र संतति में बाधा आयेगी।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व दुराचारी होगा। परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। पूर्व जन्म के पुण्य मलिन होंगे।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति षष्टम स्थान में



कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां छठे स्थान में कर्क राशि में होकर शत्रुक्षेत्री होते हुए भी राजयोग प्रदाता है। ऐसा जातक रोगी होगा। शत्रु बहुत होंगे। जातक कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगायेगा। पर अंतिम विजय होगी। मामा का सुख कमजोर।

दृष्टि–षष्टमस्थ राहु की दृष्टि व्ययभाव (मकर राशि) पर होगी। जातक के रोग, ऋण व शत्रुओं का नाश होता है। ऐसा जातक शारीरिक नहीं अपितु बुद्धिबल से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करेगा।

निशानी–ऐसा जातक यदि धैर्य एवं साहस नहीं रखता तो निश्चय ही जीवन में सफल होगा।

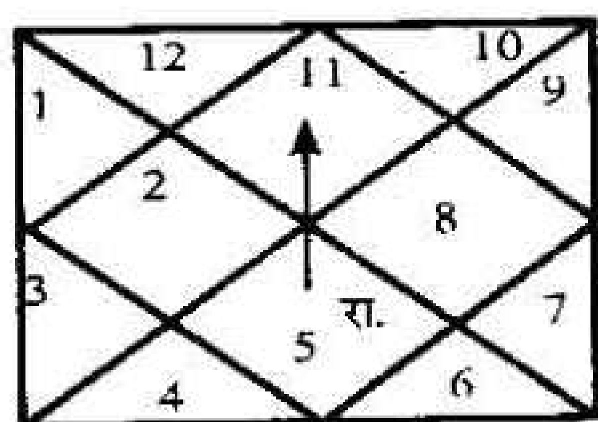
दशा–राहु का दशा शत्रु उत्पन्न करेगी व शत्रुओं का नाश भी करेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनाता है, जातक का मनोबल कमजोर होगा। जातक को मानसिक रोग रहेगा। माता भी रोगीली रहेगी। जातक को जलभय रहेगा।

2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का आत्मबल कमजोर होगा। पिता का सुख कमजोर। जातक पितृदोष या प्रेत बाधा से ग्रसित होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अंगरक योग'** बनाता है। ऐसा जातक क्रूर होगा। भाइयों का सुख कमजोर। जातक के परिजन ही जातक के शत्रु होंगे।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनाता है। ऐसा जातक मन्दबुद्धि वाला होगा। विद्या में निरन्तर बाधाएं आयेगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां षष्टम स्थान में दोनों ग्रह 'कर्क राशि' में होंगे। बृहस्पति यहां उच्च का तो राहु शत्रुक्षेत्री होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक गुप्त रोग व गुप्त शत्रुओं से सदैव परेशान रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनाता है। ऐसा जातक व्यभिचारी होगा। एवं गुप्तेन्द्रि में बीमारी होगी।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनाता है। जातक हठी व दुराचारी होगा। उसे परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में



कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां सप्तम स्थान में सिंह राशि का होकर शत्रुक्षेत्री होगा। जातक की पत्नी बीमार रहेगी। ऐसे जातक को गृहस्थ संचालन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ राहु की दृष्टि लग्नस्थान कुंभ राशि) पर होगी। भागीदारी के धंधे में सफलता नहीं मिलेगी। व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

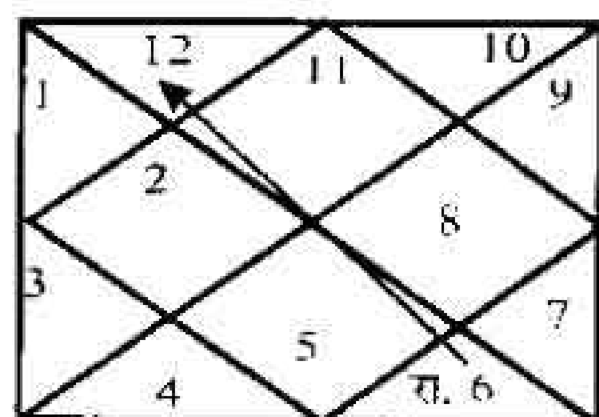
निशानी–विवाह एक से अधिक हो सकते हैं। ऐसा जातक दैहिक बल, मनोबल और स्वाभिमान से युक्त होते हैं। हिम्मत नहीं हाने पर, घरेलु सुख शान्ति मिलेगी।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा कष्टदायक साबित होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनाता है। जातक का मनोबल कमजोर होगा। उसं वैवाहिक सुख में बाधा महसूस होगी।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनाता है जातक का आत्मबल कमजोर होगा। पति-पत्नी में अहम् को लेकर टकराव होता रहेगा। तलाक तक की नौबत आ सकती है।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनाता है। जातक क्रूर स्वभाव होगा। अमानवीय अचारण के कारण पति-पत्नी में नहीं बनेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनाता है। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। पति-पत्नी के बीच आपसी समझ कम होगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह 'सिंह राशि' में होंगे। बृहस्पति अपनी मित्र राशि में तो राहु अपनी शत्रु राशि में स्थित होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को गृहस्थ सुख में कमी रहेगा। परिवार में भारी तकलीफें उठानी पड़ेगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनाता है। जातक व्यभिचारी होगा। इसलिए पति-पत्नी में नहीं बनेगी।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनाता है। जातक हठी व दुराचारी होगा। इसलिए पति-पत्नी में नहीं निभेगी।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में



कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां अष्टम स्थान में कन्याराशि का होकर स्वगृही होगा। ऐसा जातक विभिन्न रोगों से पीड़ित होगा। जातक को पेट के नीचे भाग में विकार रहेगा। जातक लम्बी आयु पाता है पर अनेक बार प्राणों पर संकट आयेगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ राहु की दृष्टि धनभाव (मीन राशि) पर होगी। जातक का धन शरीर रक्षा पर खर्च होगा। आर्थिक विषमताऐं जीवन में बनी रहेगी।

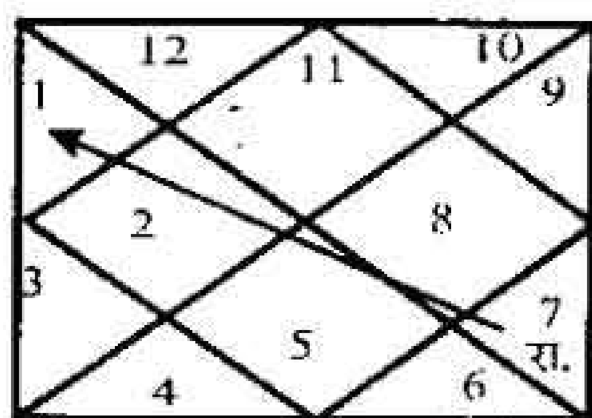
निशानी–जातक की मृत्यु शान्तिपूर्वक नहीं होगी। ऐसे जातक दैहिक मनोबल एवं स्वाभिमान से युक्त होते हैं।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का मनोबल कमजोर होगा। जातक को मानसिक रोग, पितृदोष रहेगा।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य होने पर आजीविका के साधन खराब होंगे। राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक पितृदोष से ग्रसित रहेगा। आत्मबल कमजोर रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल होने से आजीविका के साधन निम्नतर होंगे। राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। जातक क्रूर स्वभाव का होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक मन्द बुद्धि का होगा। विद्या व संतान में बाधा रहेगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह 'कन्या राशि' में होंगे। बृहस्पति शत्रु राशि में तो, राहु स्वगृही होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग से सदैव परेशान रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। ऐसा जातक व्याभिचारी होगा। उसे सैक्स की बीमारी होगी।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। ऐसा जातक हठी व दुराचारी होगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में



कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां नवम स्थान में तुला राशि का होकर मित्रक्षेत्री है। जातक नास्तिक होगा। पिता से संबंध ठीक नहीं होंगे। पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। जातक के भाग्योन्नति में बाधाएं आयेगी। जातक अपने धर्म व कर्त्तव्य का पालन ठीक ढंग से नहीं कर पायेगा।

दृष्टि–नवम भावगत राहु की दृष्टि पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। ऐसे जातक के बल, साहस व पराक्रम की निरन्तर वृद्धि होती रहती है।

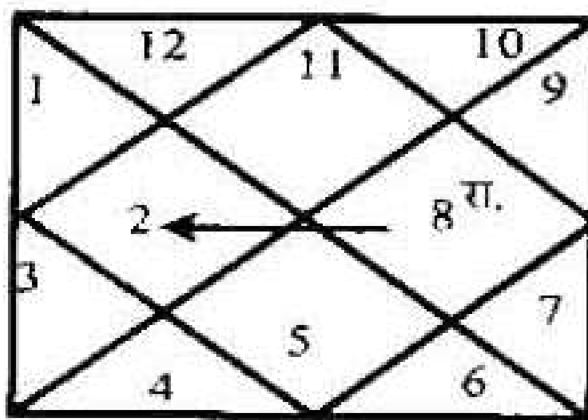
निशानी–जातक परदेश जाकर बसेगा तो सुखी होगा। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों, परिश्रम एव बुद्धि चातुर्य के द्वारा उन्नति मार्ग की ओर बढ़ेगा।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का मनोबल कमजोर होगा। जिसके कारण भाग्योदय में बाधाएं आती रहेंगी।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का आत्मबल कमजोर होगा। जिसके कारण भाग्योदय में रुकावट आयेगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। जातक क्रूर स्वभाव का होगा। जिसके कारण जातक के भाग्योदय में बाधा आयेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। जिसके कारण भाग्योदय में बाधा आयेगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह 'तुला राशि' में होंगे। बृहस्पति शत्रु राशि में तो राहु मित्र राशि में बैठकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को भाग्योदय हेतु काफी दिक्कतें-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनाता है। जातक व्याभिचारी व सैक्सी होगा। जिसके कारण भाग्योदय में बाधा आयेगी।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व दुराचारी होगा। जिसके कारण भाग्योदय में बाधाएं आयेगी।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में



कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां दशम स्थान में वृश्चिक राशि में होकर नीच का होगा। जातक को रोजी-रोजगार, धंधे की प्राप्ति हेतु काफी परिश्रम करना पड़ेगा। ऐसे जातक को पिता पक्ष से कष्ट एवं राज्यपक्ष में परेशानियां विरासत में मिलेंगी।

दृष्टि–दशमस्थ राहु की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृष राशि) पर होगी। ऐसे जातक की माता छोटी उम्र में गुजर जावें अथवा माता के साथ संबंध ठीक नहीं होंगे। जातक के धंधे में लगातार परिवर्तन आता रहेगा।

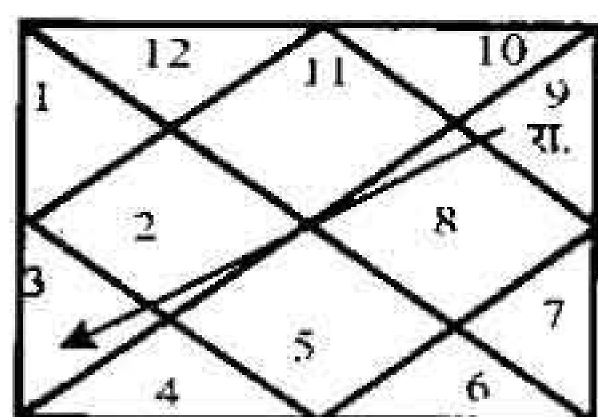
निशानी–जीवन में चिंता, तनाव और संघर्ष की स्थिति निरन्तर बनी रहेगी। व्यापार-व्यवसाय में उन्नति हेतु कठोर परिश्रम का सहारा लेना पड़ेगा।

दशा–राहु का दशा कष्टों की अनुभूति करायेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का मनोबल कमजोर होगा। जातक का राजकीय बाधा का सामना करना पड़ेगा।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का आत्मबल कमजोर होगा। जिसके कारण राजकीय बाधा का सामना करना पड़ेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। ऐसे जातक क्रूर स्वभाव का लड़ाकू होगा। जिसके कारण राजकीय बाधा आयेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। जिसके कारण राजकीय बाधा आयेगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह 'वृश्चिक राशि' में होंगे। बृहस्पति मित्र क्षेत्री है तो राहु नीच का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को रोजी-रोजगार एवं आजीविका के साधन व्यस्थित करने हेतु काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जिसके कारण जातक व्याभिचारी होगा। एवं राजकीय बाधा का सामना करना पड़ेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व दुराचारी होगा। जिसके कारण भाग्योदय में रुकावट आयेगी।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में



कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां एकादश स्थान में धनु राशि का होकर नीच का है फिर भी राजयोग कारक है। धंधा-व्यापार में लाभ मिलेगा। पर आमदनी के मार्ग में लगातार कठिनाइयां आती रहेंगी। ऐसा जातक गुप्त युक्तियां, बुद्धि चातुर्य एवं साहस के माध्यम से व्यापार-व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेगा।

दृष्टि–एकादश भावगत राहु की दृष्टि पंचम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को उच्च शिक्षा मिलेगी।

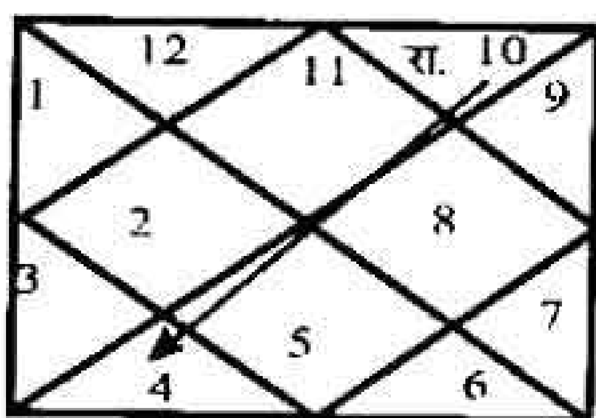
निशानी–जातक के पड़ौसी एवं मित्रों से संबंध ठीक होंगे। भाग्योदय जन्म स्थान छोड़ने पर ही होगा।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगा। परिश्रम का लाभ मिलेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का मनोबल कमजोर होगा। जिसके कारण व्यापार में रुकावट आयेगी।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का आत्मबल कमजोर होगा। जिसके कारण लाभ में रुकावट आयेगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। जातक लड़ाकू व क्रूर स्वभाव का होगा। जिसके कारण व्यापार में रुकावट आयेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। जिसके कारण व्यापार के लाभ में बाधा आयेगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह 'धनु राशि' में होंगे। बृहस्पति यहां स्वगृही तो राहु नीच का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को बड़े भाई का सुख नहीं होगा। राहु की दशा में जातक का चलता उद्योग बन्द हो जायेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक व्यभिचारी होगा। जिसके कारण व्यापारिक हानि होगी।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व दुराचारी होगा। जिसके कारण व्यापार में घाटा होगा।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में



कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां द्वादश स्थान में मकर (सम) राशि का है। जातक का शयन सुख कमजोर, नींद कम आयेगी। अचानक बेकार के खर्च होंगे। ऐसे जातक को अपने दैनिक व घरेलू खर्च के संबंध में कठिनाइयां उठानी पड़ेगी। मानसिक चिंता अधिक रहेगी।

दृष्टि—द्वादश भावगत राहु की दृष्टि छठं भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक के रुपये कोर्ट-कचहरी, दवाखाना में खर्च होंगे।

निशानी—ऐसे जातक कलहकारी एवं षड्यंत्रकारी होगा। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों एवं बाहरी संबंधों का सहारा लेकर, मुसीबत से बाहर निकलने में सफल होगा।

दशा—राहु का दशा-अंतर्दशा प्रतिकूल रहेगी।

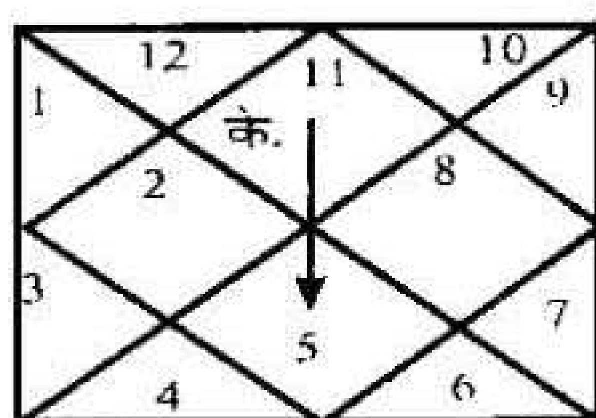
राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनेगा। जातक का मनोबल कमजोर होगा। जातक मानसिक बीमारी से ग्रसित होगा।
2. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का आत्मबल कमजोर होगा। जातक पितृदोष से ग्रसित होगा। आंखें कमजोर होगी।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। ऐसा जातक क्रूर व लड़ाकू स्वभाव का होगा। जातक को परिजनों के विरोध का सामना करना पड़ेगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। जातक को संतान बाधा होगी।
5. **राहु+गुरु**—यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह 'मकर राशि' में होंगे। बृहस्पति यहां नीच का होगा तो राहु मित्र राशि का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक अधिक खर्च के कारण कर्जदार होगा तथा व्यर्थ की यात्राएं करता फिरेगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक व्यभिचारी होगा। जातक गलत कार्यों में रुपया खर्च करेगा। जातक व्यसनी होगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व दुराचारी होगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक ऋणी होगा। दुर्घटना योग बनेगा।

❑❑❑

कुंभलग्न में केतु की स्थिति

कुंभलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में



कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अत: कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां प्रथम स्थान में कुंभ राशि का होकर मित्रक्षेत्री होगा। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, गुप्त शक्ति सम्पन्न, धैर्यवान तथा परिश्रमी होता है। ऐसा जातक अपने आपको स्थापित करने के लिए, अपनी विशिष्ट पहचान बनाने के लिए कठोर प्रयत्न करता है और उसमें सफल होता है। ऐसा जातक समाज में उचित मान-सम्मान व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

दृष्टि—लग्नस्थ केतु की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलत: गृहस्थ जीवन में थोड़ा कलह (विवाद) रहेगा।

निशानी—ऐसे जातक के शरीर व चेहरे पर किसी चोट या घाव का चिह्न होगा। जिससे शारीरिक सौन्दर्य में कमी आयेगी।

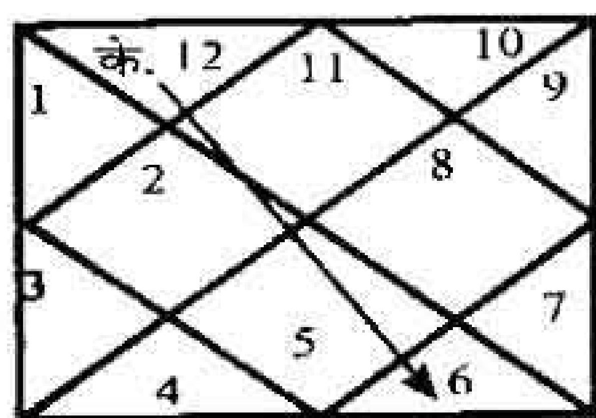
दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक की उन्नति होगी। परिश्रम के माध्यम से जातक आगे बढ़ेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक का मनोबल क्षीण करेगा। जातक किसी निर्णय तक नहीं पहुंचा पायेगा।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक का आत्मबल कमजोर करेगा। जातक को पैतृक दोष रहेगा।

3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को भाइयों एवं भूमि में विवाद से उलझायेगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक की बुद्धि भ्रमित करेगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति जातक को नास्तिक बनायेगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को धूर्त व लम्पट बनायेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि जातक को हठी व जिद्दी बनायेगा।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में



कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अत: कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां द्वितीय स्थान में मीन राशि होकर स्वगृही होगा। ऐसे जातक को धन की कमी का सामना करना पड़ेगा। कुटुम्ब में भी क्लेश व उपद्रव रहता है पर जातक अपने कठोर परिश्रम व न्याय के मार्ग पर चलकर धन प्राप्ति के प्रयत्नों में सफलता प्राप्त करता है। जातक अपनी किस्मत खुद चमकता है।

दृष्टि—द्वितीय भावगत केतु की दृष्टि अष्टम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। ऐसा जातक अपने शत्रुओं को समाप्त करने में सफल होता है।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा थोड़ी आर्थिक कठिनाइयों के साथ जातक को आगे बढ़ायेगी।

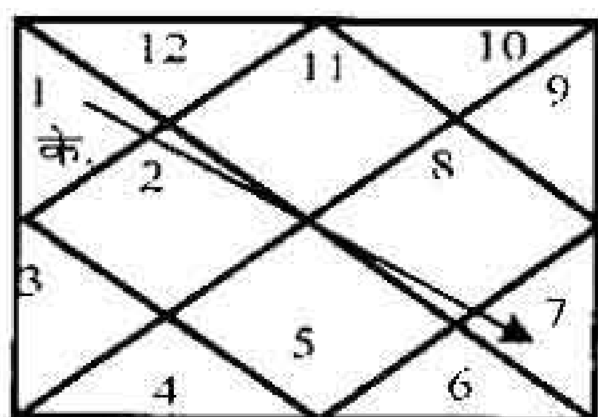
केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा निर्णय शक्ति मनोबल कमजोर करेगा। धन का अकारण खर्च व्यर्थ के काम में होगा।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य आत्मबल कमजोर करेगा। जातक की वाणी अप्रिय होगी।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को लड़ाकू स्वभाव देगा। जिससे शत्रु पैदा होंगे।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक के विद्याध्ययन में बाधक होगा। वाणी में लड़खडाहट होगी।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति जातक को धनी बनायेगा। पर खर्च अधिक होता रहेगा।

6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से जातक महाधनी होगा पर रुपयों के खर्च पर नियंत्रण नहीं होगा।

7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि व्यर्थ के खर्च देगा तथा परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा। ऐसा व्यक्ति परम स्वार्थी होता है।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में



कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अत: कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां तृतीय स्थान में मेषराशिगत होकर मित्रक्षेत्री होगा। जातक को पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होगी। जातक बड़ा पुरुषार्थी, हिम्मतवाला, धैर्यवान् तथा साहसी होगा। पर भाई-बहनों में थोड़ी मनोमालिन्यता रहेगी। ऐसा जातक अनेक युक्तियों से समाज में अपना विशिष्ट स्थान बनाकर, पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान प्राप्त कर यशस्वी होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ केतु की दृष्टि नवमभाव (तुला राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा। गुप्त शक्तियों से सम्पन्न होगा।

निशानी–केतु यहां शुभ फल देगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा। जातक को यश-सम्मान, धन की प्राप्ति होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक को पराक्रमी बनायेगा। यशस्वी बनायेगा।

2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य उच्च का जातक को परम पराक्रमी बनायेगा पर बड़े भाई का सुख नहीं होगा।

3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल स्वगृही होने से जातक के तीन भाई होंगे। जातक कीर्तिवान् होगा।

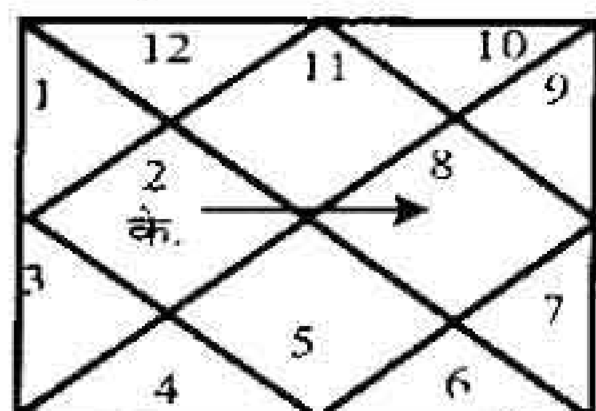
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को मित्रों से लाभ एवं जनसम्पर्क से यश दिलायेगा।

5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति होने से मित्रों व परिजनों से सहयोग मिलता रहेगा।

6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से जातक को स्त्री मित्रों से लाभ रहेगा।

7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि नीच का होने से मित्रों में मनमुटाव एवं दोस्ती स्थाई नहीं होगी।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में



कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अत: कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां चतुर्थ स्थान में वृष राशि का होकर नीच का होगा। ऐसे जातक को माता के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है। मातृ (जन्म) भूमि से वियोग भी होता है। भूमि, मकान, वाहन आदि के सुख में कमी महसूस होती है, परन्तु जातक अपनी गुप्त शक्तियों व युक्तियों से मकान-वाहन, भूमि का सुख प्राप्त करने में सफल होता है।

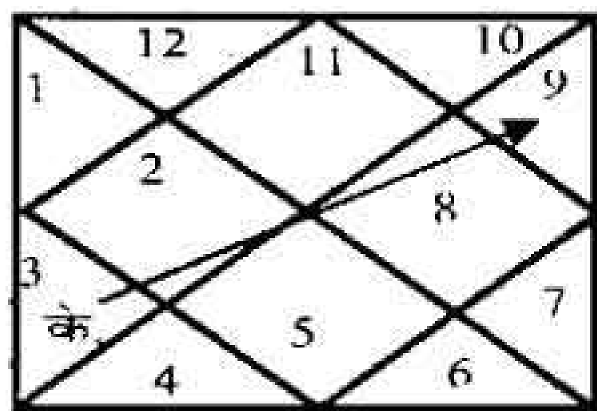
दृष्टि—चतुर्थभावगत केतु की दृष्टि दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: रोजी-रोजगार संबंधी कार्यों में प्रारंभिक परेशानियां आयेगी।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में भौतिक उपलब्धियों व सुखों की प्राप्ति होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ उच्च का चंद्रमा जातक को भौतिक सुख-सुविधाएं देगा। पर माता को टी.बी. होगी।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य पत्नी से मनोमालिन्यता देगा। पिता से विचार नहीं मिलेगे।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल वाहन दुर्घटना दे सकता है।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध रुकावट के साथ विद्या डिग्री मिलेगी।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति धन हानि या धन खर्च भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए करायेगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनायेगा। जातक धनी होगा तथा ऐशो-आराम, मौज-शौक हेतु रुपया खर्च करेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि परिश्रम में रुकावट डालेगा।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में



कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अतः कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां पंचम स्थान में मिथुन राशिगत होकर नीच का होगा। ऐसे जातक को विद्याध्ययन के क्षेत्र में प्रारंभिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। जातक को संतानसुख की प्राप्ति हेतु आयुर्वेद व ईश्वर की कृपा का सहारा लेना पड़ेगा। जातक अपनी विशेष बुद्धि, पुरुषार्थ व धैर्य से पंचम भाव के शुभ फलों का प्राप्त करेगा।

दृष्टि—पंचमस्थ केतु की दृष्टि एकादश भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः बड़े भाई का सुख कमजोर होगा।

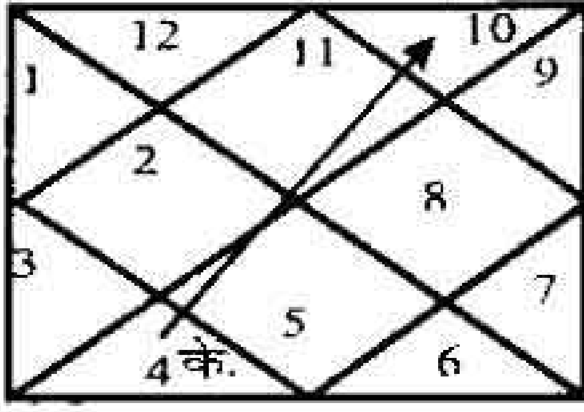
निशानी—जातक की प्रथम संतति शल्यचिकित्सा (Scissorian) होगी। एकाध गर्भपात संभव है।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। नई जानकारियां मिलेंगी। जातक नये अनुसंधान का लाभ उठायेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा विद्या एवं संतान सुख में बाधक है। जातक के अधूरा बच्चा होगा।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य पत्नी एवं संतान सुख में न्यूनता लायेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल गर्भपात करायेगा। बड़े भाई का सुख नहीं होगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक को प्रजावान बनायेगा, परन्तु पुत्र संतति को लेकर चिंता रहेगी।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति जातक को विद्या सुख देगा पर संघर्ष के साथ पुत्र रत्न भी देगा पर उपाय के बाद।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को रसिक मिजाज का बनायेगा। जातक का वीर्य दूषित होगा। पुत्र को लेकर चिंता रहेगी।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि जातक को परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति षष्टम स्थान में



कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अत: कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां छठे स्थान में कर्क राशिगत होकर शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसे जातक को शत्रुपक्ष में अशान्ति रहेगी परन्तु वह उन पर अपना प्रभाव स्थापित करने में एवं विजय प्राप्त करने में विशेष सफलता प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति मनोबल एवं युक्ति बल से शत्रुओं को मात देता है। गुप्त रोग की संभावना रहेगी पर शल्य चिकित्सा द्वारा लाभ होगा।

दृष्टि–षष्टम भावगत केतु की दृष्टि व्ययभाव (मकर राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा एवं व्यर्थ यात्राएं बहुत करेगा।

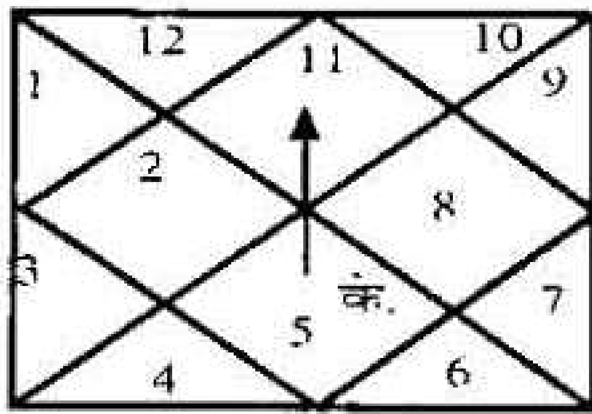
निशानी–केतु यहां शुभ फल देगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में शत्रुओं का नाश होगा। रोग का भी नाश होगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा **'विपरीत राजयोग'** के कारण जातक को धनी तो बनायेगा पर जलभय का खतरा, मानसिक परेशानी सदैव बनी रहेगी।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य पितृदोष देगा। पत्नी से विचार कम मिलेंगे।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल **'पराक्रम भंग'** करेगा। जातक को अच्छा कार्य करते हुए भी रुपया मिलेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध संतान में बाधा। विद्या में रुकावट का संकेत दे रहा है।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति उच्च का जातक को धीमी गति से धन प्राप्ति करायेगा। जातक के निन्दक बहुत होंगे।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र गुप्तेन्द्रि में रोग देगा। वीर्य दूषित होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** के कारण परिश्रम के लाभ देने में बाधक ग्रह का काम करेगा। यद्यपि **'विपरीत राजयोग'** के कारण जातक धनी होगा।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति सप्तम स्थान में



कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अत: कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां सप्तम स्थान में सिंह राशि का होकर मूल त्रिकोणी कहलायेगा। ऐसे जातक को स्त्री-पक्ष व गृहस्थ सुख की प्राप्ति हेतु थोड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। उसे घर की जिम्मेदारी वहन करने में भी कठिनाइयों का मुकाबला करना पड़ेगा। साथ ही जननेंद्रियों में विकार भी संभव है। परन्तु कोई बड़ी मुसीबत नहीं होगी। जातक सफल गृहस्थी होगा।

दृष्टि–सप्तम भावगत केतु की दृष्टि लग्न स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। जातक को व्यापार-व्यवसाय को जमाने में बार-बार परिवर्तन करते हुए अन्त में सफलता प्राप्त करेगा।

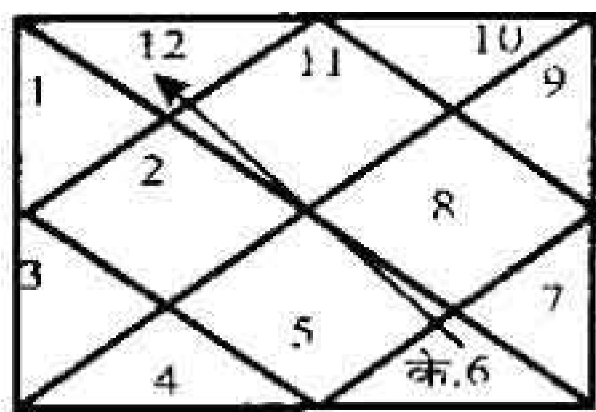
निशानी–जातक का अन्य स्त्रियों से सम्पर्क रहेगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा वैवाहिक सुख में मनोमालिन्यता उत्पन्न करेगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक की पत्नी को धनवान अथवा आत्मनिर्भर बनायेगा। जिससे अहंकार का परस्पर टकराव होता रहेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल होने से जातक क्रूर स्वभाव का एवं अत्यधिक कामी होगा। जिससे पति-पत्नी के मध्य घर्षण होता रहेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से पति-पत्नी के मध्य हल्का-सा बौद्धिक तनाव रहेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति ससुराल से लाभ का संकेत देता है। पत्नी धार्मिक होगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से जातक उच्छृखंल मनोवृत्ति वाला होगा। फिर भी गृहस्थी निभ जायेगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने के कारण जातक को परिश्रम का फल तो मिलेगा परन्तु पति-पत्नी में शत्रुतापूर्ण मानसिकता रहेगी।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में



कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अत: कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां अष्टम स्थान में कन्या राशिगत होकर नीच का होगा। ऐसे जातक की आयु में वृद्धि होती है पर जीवन में अनेक बार मृत्यु तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों के सहारे विषम परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर लेता है।

दृष्टि—अष्टम भावगत केतु की दृष्टि धनभाव (मीन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को धन संग्रह करने में भारी संघर्ष करना पड़ता है। धन की बरकत नहीं होती।

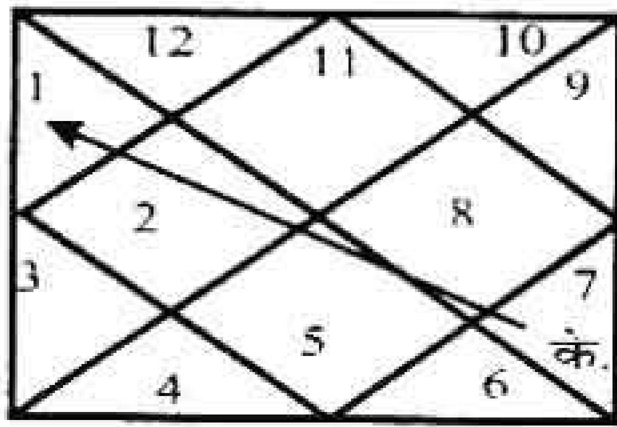
दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक को मानसिक विषमता एवं मातृदोष देगा। जातक की निर्णय शक्ति कमजोर होगी।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक को पितृदोष से ग्रसित करेगा। आत्मबल कमजोर होगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को गुस्सैल बनायेगा। जातक को भाइयों से कम बनेगी।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक को प्रजावान तो बनायेगा, पर पुत्र संतति की चिंता रहेगी।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बना रहा है। जातक आर्थिक रुप से परेशान रहेगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को सैक्स संबंधी रोग देगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा। जातक को जन्म स्थान में भी लाभ नहीं होगा।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति नवम स्थान में

कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अत: कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां



शुभफल देगा। केतु यहां नवम स्थान में केतु तुला राशि में होकर मित्रक्षेत्री होगा। ऐसे जातक के भाग्योदय में सामान्य बाधाएं आती है। परन्तु जातक गुप्त युक्तियों के बल पर उनको काबू कर सफलता प्राप्त करता है। जातक अपने कठिन परिश्रम, बुद्धि चातुर्य एवं धैर्य के द्वारा अपना भाग्योदय खुद करता है।

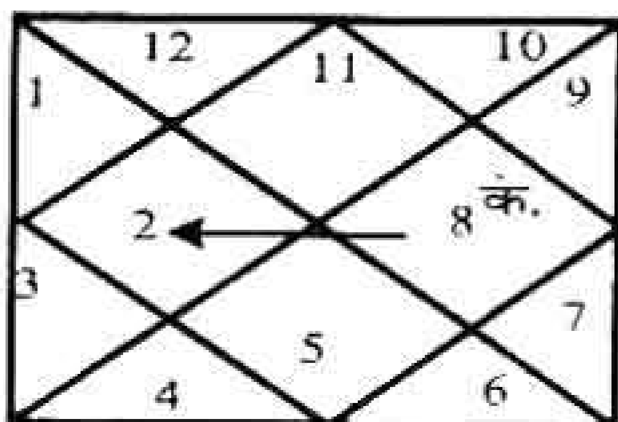
दृष्टि–नवमभावगत केतु की दृष्टि पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। फलत: सगे भाइयों से मनमुटाव रहेगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ता हुआ सफलता प्राप्त करेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक के भाग्योदय में बाधक है। मनोबल क्षीण होगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य नीच का सरकारी नौकरी के योग तोड़ेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल सरकारी ठेके के लाभ को तोड़ेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक के निर्णय गलत करायेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति जातक को धन लाभ देगा परन्तु धीमी गति से।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र स्वगृही जातक का भाग्योदय स्त्री की सहायता से करायेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ उच्च का शनि जातक का भाग्योदय आकस्मिक घटना से करायेगा।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में



कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अत: कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां दशम स्थान में वृश्चिक राशिगत होकर उच्च का होगा। ऐसे जातक

को पितापक्ष से कष्ट की प्राप्ति होगी। जातक को राज्य क्षेत्र में परेशानियां तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। परन्तु धैर्य, साहस व बुद्धिबल से जातक सब पर काबू कर विजय प्राप्त करता है। व्यापार में उन्नति प्राप्त करने में सफल होता है।

दृष्टि–दशमभावगत केतु की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक को माता का सुख नगण्य होगा।

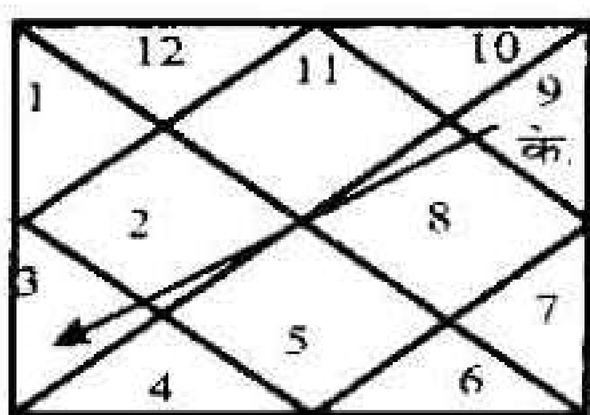
निशानी–केतु यहां शुभ फल देगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में जातक को व्यवसायिक सफलता मिलेगी। जातक धन कमायेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा नीच का जातक को कमजोर मनोबल एवं विकृत सोच देगा। सरकारी नौकरी में बाधा देगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य आत्मबल कमजोर करेगा। सरकारी नौकरी के योग को भंग करेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल **'रुचक योग'** बनायेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। पर सरकारी ठेकेदारी से कमायेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध सरकारी नौकरी के योग को भंग करेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति राजयोग देता पर नौकरी कमजोर होगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक के वाहन से दुर्घटना देगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को धनपति बनायेगा पर धन खर्च होता चला जायेगा।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में



कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अत: कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां एकादश स्थान में धनुराशिगत होकर उच्च का होगा। ऐसे जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होगी। जातक को आकस्मिक धन लाभ भी होगा। जातक कठोर परिश्रम एवं निरन्तर उन्नति हेतु प्रयत्नशील रहने के कारण सुखी जीवन जीयेगा।

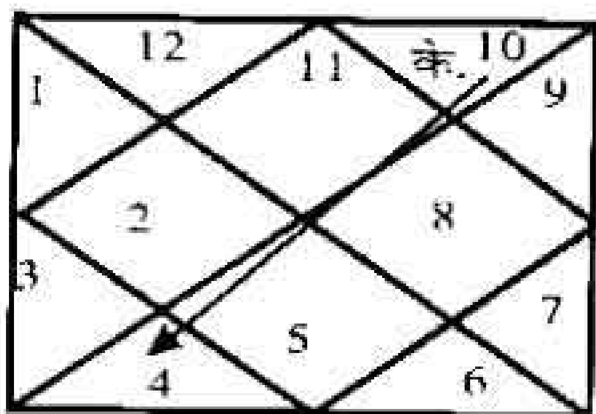
दृष्टि–एकादश भावगत केतु की दृष्टि पंचम स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को संतान संबंधी रुकावट होगी। विद्या में भी रुकावट संभव है। पर उपाय करने पर दोनों अवरोधों से मुक्ति मिलेगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभफलदायक है। व्यापार में लाभ एवं वृद्धि करायेगी। जातक को परिश्रम सार्थक होंगे।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा व्यापार में रुकावट का संकेत देता है। जातक की निर्णय शक्ति कमजोर होगी।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक का आत्मबल कमजोर करेगा। जातक को व्यापार में राजकीय दिक्कतें आयेगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को उद्योगपति बनायेगा पर एक बार चलता उद्योग बन्द होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को पुत्रवान बनायेगा। परन्तु पुत्र संतान की चिंता रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति जातक को बड़े भाई का सुख एवं व्यापार में लाभ देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र व्यापार द्वारा भाग्योदय करायेगा। थोड़े संघर्ष के बाद व्यापार में सफलता मिलेगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को कठोर परिश्रमी बनायेगा। परिश्रम के बाद व्यापार में सफलता है।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति द्वादश भाव में



कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अत: कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां द्वादश स्थान में मकर राशिगत होकर मूलत्रिकोणी होगा, स्वगृही होगा। ऐसे जातक को अधिक खर्च के कारण मानसिक परेशानी रहेगी। परन्तु अपनी गुप्त युक्तियों एवं परिश्रम के बल पर खर्च

चलाने की शक्ति प्राप्त करता है। जातक आध्यात्मिक एवं मोक्षमार्ग का जिज्ञासु होता है। जातक जीवन में निराश नहीं होगा।

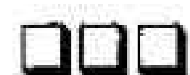
दृष्टि—द्वादश भावगत केतु की दृष्टि छठे स्थान (कर्क राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु होंगे पर स्वत: ही नष्ट हो जायेगें।

निशानी—ऐसा जातक आध्यात्मिक मार्ग का पथिक होगा। जातक को प्रात:काल के समय जो स्वप्न आयेगे। सच हो जायेगें।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक को '**विपरीत राजयोग**' के कारण धनी बनायेगा पर मनोबल कमजोर रहेगा। जातक को बुरे सपने आयेगे।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक का आत्मबल कमजोर करके उसे नेत्र विकार देगा। जातक को पितृदोष रहेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को गुस्सैल बनायेगा। अक्सर उतावलापन के कारण जातक के काम बिगड़ जायेगें।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक को संतान एवं विद्या में रुकावट के बाद सफलता देगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ नीच का बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनायेगा। जातक आर्थिक विषमताओं से त्रस्त रहेगा। नास्तिक होगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र '**सुखहीन योग**' एवं '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को स्त्री के कारण बदनामी मिलेगी। जातक को भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ स्वगृही शनि '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। अधिक खर्च के कारण जातक कर्जदार भी होगा।



शनि पीड़ा निवारणार्थ यंत्र

यदि किसी व्यक्ति के जन्मपत्र में शनि नीच का, अस्त का, नीचास्त का, मूल-त्रिकोण और केन्द्र में पीड़ा कारक पड़ा हो तो जातक को चाहिये कि शनि पीड़ा शमनार्थ 3 रत्ती या 10 रत्ती का निर्दोष नीलम नग, 10 माशे सोने, या स्टील या काले घोड़े के अगले पांव की दाहिनी नाल की अंगूठी बनवाकर अपने दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में सदैव पहने। निम्नांकित यंत्र स्टैन्लैसस्टील में अंकित कराकर उस पर शनिदेव का लोह प्रतिमा स्थापित करें और शनिवार को शुभ नक्षत्र, शुभ मुहूर्त में गंगा जल और काली गाय के कच्चे दूध से उसको स्नान करायें। शनिवार का व्रत अवश्य रखे और रात्रि को इसका जाप प्रारम्भ करें, हवन के लिये शमी की समिधा होनी चाहिए जप के समय धूप, दीप नैवेद्य आदि का प्रबन्ध होना चाहिए। जाप शुक्ल पक्ष में ही आरम्भ करना चाहिए। नवरात्रों का किया गया अनुष्ठान अधिक शुभ फलदायक होता है। उस समय मनुष्य को पूर्ण ब्रह्मचर्य, भूमि शयन तथा उपवासादि का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

शनि यंत्र

12	7	14
13	11	9
8	15	10

शनि कवचम्

नीलाम्बरो नीलवपु: किरीटे गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुज: सूर्यसुत: प्रसन्न: सदा मम स्याद् वरद: प्रशान्त:।।1।।
शृणुध्वमृषय: सर्वे शनिपीड़ाहरं महत्।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम्।।2।।
कवच देवतावासं वज्रपन्जरसंज्ञकम्।
शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम्।।3।।
ॐ श्रीं शनैश्चर: पातु भालं में सूर्यनन्दन:।

नेत्रे छायात्मज: पातु पातु कर्णौ यमानुज:।।4।।
नासां वैवस्वत: पातु मुखं मे भास्कर: सदा।
स्निग्धकण्ठश्च में कण्ठं भुजौ पातु महाभुज:।।5।।
स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रद:।
वक्ष: पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा।।6।।
नाभिं ग्रहपति: पातु मन्द: पातु कटिं तथा।
ऊरू ममान्तक: पातु यमो जानुयुगं तथा।।7।।
पादौ मन्दगति: पातु सर्वांगं पातु पिप्पल:।
अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि रक्षेन् मे सूर्यनन्दन:।।8।।
इत्येतत् कवचं दिव्यं पठेत् सूर्यसुतस्य य:।
न तस्य जायते पीड़ा प्रीतो भवति सूर्यज:।।9।।
व्ययजन्मद्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वार।
कलत्रस्थो गतो वाऽपि, सुपीतस्तु सदा शनि:।।10।।
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे।
कवचं पठते नित्यं न पीड़ा जायते क्वचित्।।11।।
इत्येतत् कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निर्मितं पुरा।
द्वादशाष्टम-जन्मस्थ-दोषान्नाशयते सदा।
जन्मलग्नस्थितान् दोषान् सर्वान्नाशयते प्रभु:।।12।।

शनि स्तुति

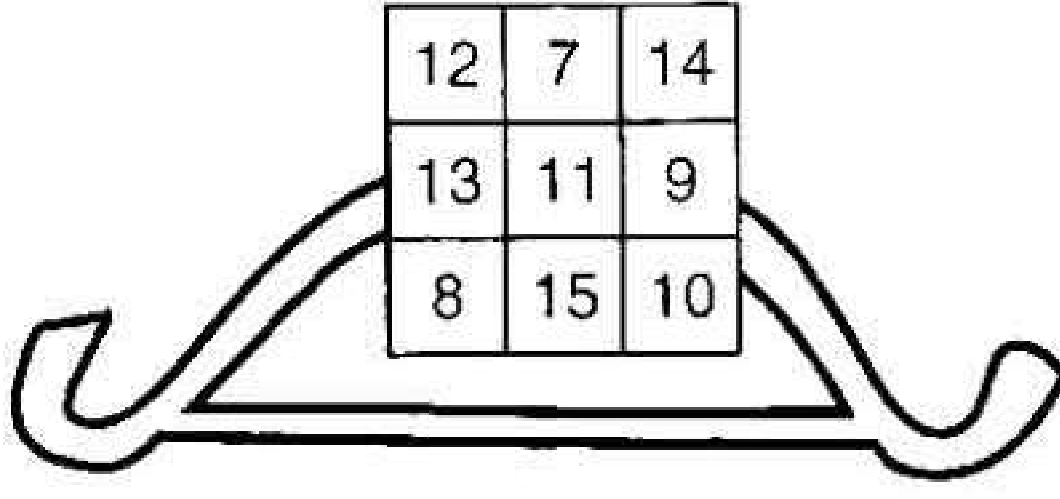
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्ष: शिवप्रिय:।
मन्दचार: प्रसन्नात्मा पीड़ां दहतु मे शनि:।।

विनियोग

शन्नोदेवोइतिमंत्रस्य, दध्यङ्गाथर्वण ऋषि: आपां देवता।

गायत्री छन्द:। शनिमंत्रजपे विनियोग–

सजीव वैदिक मंत्र–ॐ खाँ खों खौं स: ॐ भूर्भुव: स्व: **ॐ शन्नोदेवीर-भीष्टऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु न:।** ॐ स्व: भुव: भू: ॐ स: खौं, खों खाँ शैनश्चराय नम:।



ॐ शन्नोदवीरभिष्टयऽआपो भवन्तुपीतये. शंय्योरभिस्रवन्तुन:।।136/12।।

तांत्रिक मंत्र–ॐ खाँ खीं खौं स: शनैश्चराय नम:

नमस्कार–नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम।
छायामार्तण्डसम्भूतं तन्नमामि शनैश्चरम्।।

एकाक्षरी बीज मंत्र–ॐ शं, शनैश्चराय नम:

तांत्रिक शनि मंत्र–ॐ प्राँ, प्रीं प्रौं स: शनये नम:।

जप संख्या–23000, तेबीस सहस्र (तेबीस हजार)

आह्वान–महातेज नामाग्नि समिधा-(खजेड़ो) शमी फल-नारियल



हिमकुंदमृणालाभं दैत्यानां परमं बृहस्पतिम्।
सर्वशास्त्र-प्रवक्त्कारं भार्गवं प्राणमाम्यहम्।।
कृष्णाङ्गोकृष्णवर्णश्च कृष्णाजिनंधररस्तथा।
शौरोमंदगतिश्चैव शनिमावह-याम्यहम्।।1।।
अहो सौराष्ट्रसंजात छायापुत्रश्चतुर्भुज:।
कृष्णवर्णार्क गोत्रेय बाणहस्ते धनुर्धर:।।2।।
त्रिशूली च समागच्छ वरदो में ग्रधवाहन:
प्रजापत्येति संपूज्यो समवत् पश्चिमे दले।।3।।

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिताबभूव यत् कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तत्व समुष्य-पितसावस्य-पिता वय ठं. स्यामपतयो रयिणा ठं. स्वाहा।।10/20।।

शनि अनिष्ट फल शमनार्थ दानपदार्था:

शनि प्रति दान–नीलम, सोना, लोहा, उर्द, कुल्थ, तेल, सरसों, काला कपड़ा, काले फूल, कस्तूरी, काली सवत्सा गाय, काली भैंस, काले जूते, कृष्ण फल।

शनि दान के समय उपर्युक्त वस्तुओं के लिए भार कम से कम सवा तीन रत्ती 3¼ होना चाहिये और अधिक से अधिक के लिये साढे तीन, सात, दस रत्ती, तोला, सेर आदि जितनी भी सामर्थ हो दान वित्त समान कर देना चाहिये अपनी शक्ति सामर्थ से अधिक दिया हुआ दान किया हुआ काम दुखदायी ही रहता है, इसमें तुला दान का बहुत ही महात्मय लिखा है साथ ही तिलपात्र घृत छाया दान भी अवश्य करने चाहिये। यज्ञान्त में ब्राह्मण भोज शक्ति भर अवश्य करना चाहिये। एक लोह प्रतिमा शनि दान में अवश्य ही करनी चाहिये। शनि शक्ति का प्रतीक है। दीर्घसूत्री तथा उदासीन है इसलिये इसका प्रसन्न करने के लिए अवश्य ही प्रयत्न करना चाहिए, जीव हिंसा निषेध है। बीछू जड़ी पास रखना लाभदायक है। बीछू पौदे की जड़े (शिशणा) के पास रखकर उसकी पूजा करने से तथा धारण करने से शनि का दूषित फल शान्त रहता है।

शनि मंगल स्तोत्र

मन्दः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः काश्यपः,
स्वामी नक्रभकुम्भयोर्बुध-सितौ मित्रे समश्चाङ्गिराः।।
स्थान पश्चिमदिक् प्रजापति-यमौ दैवौ धनुष्यासनः,
षटत्रिस्थः शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

❑❑❑

शनि चालीसा

बंशीधर को नमन कर, कर गणेश का ध्यान।
शनि चालीसा जो पढ़े, उसका हो कल्याण।

चौपाई

जय श्री शनिदेव महाराजा। जय कृष्ण सौरी सिरताजा।।
सूरत सुत छाया के नन्दन। महाबली तुम असुर निकन्दन।।
पिंगलमंद, रौद्र शनि नामा। करहुनाथ मम पूरण कामा।।
श्याम वरण है अंग तुम्हारा। क्रूर दृष्टि तन क्रोध अपारा।।
क्रीट मुकुट कुण्डल छवि साजे। गल मुक्तन की माल विराजे।।
चक्र त्रिशूल चतुर्भुज धारें। हाथ कटार दुष्ट को मारें।।
पर्वत को कर देते राई। निर्धन के सर छत्र धराई।।
जो जन तेरा ध्यान लगावें। मन वांछित फल जल्दी पावें।।
जापर कृपा आपकी होई। जो चाहे फल मिलता सोई।।
जिन पर कोप कठिन तुम ताना। उन का जग में नहीं ठिकाना।।
सांचे देव, शनि तुम स्वामी। घट घट वासी अन्तर्यामी।।
जब राजा दशरथ पर आये। बनवासी श्री राम कहाये।।
रावण हाथ सिंया हरवाई। लक्ष्मण जी पर शक्ति चलाई।।
बहुत बड़ा दु:ख राम को दीना। नाश लंकापति कुल का कीना।।
चेटक तुमने सबहि दिखाये। बली भूप तक चोर बनाये।।
जिसने छोटा तुम्हें बताया। राजपाट सब धूल मिलाया।।
हाथ पांव तुम दिये कटाई। कोहलू तेली को हंकवाई।।
फिर सुमिरण जब आपकी कीना। हाथ पैर राजी कर दीना।।
ब्याह युगल उसके करवायें। मंगल गान नगर सब गायें।।
जो जन तुमको बुरा बतावें। वह जन सुख अपने नहि पावें।।

दशा आपकी सब पर आवे। फल शुभ अशुभ शीघ्र दिखालावे।।
तीन लोक तुम्हें सर नावें। ब्रह्मा हरिहर तुम्हें मनावें।।
लीला अद्‌भुत नाथ तुम्हारी। निशिदिन ध्यान धरती नर-नारी।।
कहां तक तेरी करूं बढ़ाई। लंका छिन में भस्म कराई।।
जिन सुमरं तिन फल शुभ पाया। सब पर रहे तुम्हारी दाया।।
द्रवित होत ही करहु निहाला। टेहड़ी दृष्टि कठिन कराला।।
नौ वाहन हैं नाथ तुम्हारे। गधा अश्व और हाथी प्यारे।।
मेघ सिंह जुम्बक मन माना। कागा हिरण मोर पहिचाना।।
गधा सवारी कर जब आवो। मान भंग उसका करवावो।।
चढ़ घोड़े पर जब तुम आवो। उस जन को धन लाभ करावो।।
हाथी पर जब करो सवारी। पावे सिद्धि नर और नारी।।
मेढ़े की जब करो सवारी। प्राणी के तन लगे बिमारी।।
जब जम्बुक पर करो सवारी। झगड़े बाज बने संसारी।।
सिंह सवारी कर तुम आवो। सारे दुश्मन मार मिटावो।।
काग सवारी जिस घर डेरा। उसका प्राण काल ने घेरा।।
हिरण सवारी जब मन भावे। उस प्राणी को खूब घुमावे।।
मोर सवारी कर तुम आवो। धन वभैव सम्मान बढ़ावो।।
जय जय जय शनिदेव दयालु। करो कृपा शनिदेव कृपालु।।
यह दस बार पढ़े जो कोई। कष्ट कटें सुख निशदिन होई।।
शनि चालीसा पढ़ों हमेशा। तन में तनिक न रहे क्लेश।।
जय जय जय रविपूत को। हरो सकल भव-शूल।।
सेव को सुख दीजिए। रहो नाथ अनुकूल।।
हर हर मन्दिर में रहो, रहे जहां हनुमान।
परमानन्द की प्रार्थना, हो सब का कल्याण।।

शनि चालीस नं. 2

शनि चालीसा

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल।
दीनन के दूख दूर करि, कीजै नाथ निहाल।।
जय हय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनयम महाराज।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज।
जयति जयति शनिदेव दयाला।
करत सदा भक्तन प्रतिपाला।।

चारि भुजा, तनु श्याम विराजै।
माथै रतन मुकुट छवि छाजै।।

परम विशाल मनोहर भाला।
टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला।।

कुण्डल श्रवण चमाचल चमकें।
हियें माल मुक्तन मणि दमकैं।।

कर में गदा त्रिशूल कुठारा।
पल बिल करैं अरिहि संहारा।

पिंगल, कृष्णो, छाया, नन्दन।
यम, कोणस्थ, रौद्र, दुख, भंजन।।

सौरी, मन्द शनि, दश नामा।
भानु पुत्र पुजहिं सब कामा।।

जापर प्रभु प्रसन्न हवैं जाही।
रंकहुं राव करैं क्षण माही।।

पर्वतहू तृण होई निहारत।
तृणहू को पर्वत करि हारत।।

राज मिलत बन रामहिं दिन्हयो।
कैकेइहू की मति हर लीन्हयो।।

बनहू में मृग कपट दिखाई।
मातु जानकी गई चुराई।

लषणहि शक्ति विकल करिडारा।
मचिगा दल में हाहाकार।।

रावण की गति-मति बौराई।
राम चन्द्र सों बैर बढ़ाई।।

दियो कीट करि कंचन लंका।
बजि बजरंगी बीर की डंका।

नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा।
चित्र मजूर निगलि गै हारा।

हार नौलख लागे चोरी।
हाथ पैर डरवायो तोरी।

भारी दशा निकृष्ट दिखायो।
तेलहिं घर कोल्हू चलवायो।।

विनय राग दीपक महं कीन्हयों।
तब प्रसन्न प्रभु हवै सुख दीन्हयों।

हरिश्चन्द्रहूँ नृप नारि बिकानी।
आपहुं भरे डोम घर पानी।

जैसे नल पर दशा सिरानी।
भूंजी-मीन कूद गई पानी।

श्री शंकरहि गह्यो जब जाई।
पारवती को सती कराई।

तनिक विलोकत ही करि रीसा।
नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा।

पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी।
बची द्रौपदी होति उघारी।।

कौरव के भी गति मति मारयो।
युद्ध महाभारत करि डारयो।।

रवि कहं मुख में धरि तत्काला।
लेकर कूदि परयो पाताला।।

शेष देव-लखि विनती लाई।
रवि को मुख ते दियो छुड़ाई।।

वाहन प्रभु के सात सुजाना।
जग दिग्गज गर्दन मृग स्वाना।।

जम्बुक सिंह आदि नख धारी।
सो फल ज्योतिष कहत पुकारी।

गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं।
हय ते सुख सम्पत्ति उपजावैं।।

गर्दभ हानि करैं बहु काजा।
सिंह सिद्धकर राज समाजा।।

जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै।
मृग दे कष्ट प्राण संहारै।।

जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी।
चोरी आदि होय डर भारी।

तैसहि चारि चरण यह नामा।
स्वर्ण लौह चांदी अरु तामा।।

लौह चरण पर प्रभु जब आवैं।।
जन धन सम्पत्ति नष्ट करावैं।

समता ताम्र रजत शुभकारी।
स्वर्ण सर्व सुख मंगल भारी।

जो यह शनि चरित्र नित गावै।
कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै।

अद्भुत नाथ दिखावैं लीला।
करैं शत्रु के नशि बलि ढीला।।

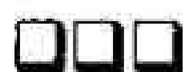
जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई।
विधिवत शनि ग्रह शांति कराई।।

पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत।
दीप दान दै बहु सुख पावत।।

कहत राम सुन्दर प्रभु दासा।
शनि सुमिरत सुख होत प्रकाशा।

दोहा

पाठशनैश्चर देव को, कीन्हों विमल तैयार।
करत पाठ चालीस दिन, हो भव सागर के पार।



शनिवार व्रत कथा

शनिदेव साधना तथा पूजा अर्चना से सहज की प्रसन्न होते हैं तथा अपने भक्तों की सर्वमनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। शनिदेव जब किसी पर क्रोधित होते हैं तो उसका सब कुछ नष्ट हो जाता है किन्तु यदि किसी पर शनिदेव की कृपा हो जाए तो वह भिखारी से राजा हो जाता है। शनिवार का व्रत शनिदेव को प्रसन्न करने व मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए किया जाता है।

शनि का तांत्रिक मंत्र–ॐ शं शैनश्चराय नमः।

विधि विधान–शनिवार के पीपल के नीचे अथवा भैरव मंदिर में बैठकर पूजन करना चाहिए। पूजन के लिए शनिदेव की टिन की मूर्ति रखकर, काली वस्तुओं, सरसों का तेल, मिट्टी का दीपक तथा लोहे के पाशों का प्रयोग करें। तांत्रिक मंत्र द्वारा शनिदेव का पूजन करें, व्रत कथा पढ़ें, तत्पश्चात पीपल को अर्ध्य दें। भोजन एक ही समय करें तथा उड़द और तिल का प्रयोग अवश्य करें।

व्रत कथा–एक समय सूर्य चंद्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एवं केतु आदि ग्रहों में परस्पर विवाद हो गया कि हम सब में बड़ा कौन है। सभी ग्रह अपने आपको बड़ा कहते हैं।

जब काफी समय तक निर्णय न हो सका तो सब झगड़ते हुए इंद्रराज के पास गए और कहने लगे कि आप देवताओं के राजा हैं इसलिये ये न्याय करके बताइये कि हम नव ग्रहों में कौन बड़ा है। देवराज इन्द्र ग्रहों का यह प्रश्न सुनकर भयभीत हो गए तथा कहने लगे कि मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि मैं किसी को छोटा बतला सकूं।

इस समय पृथ्वी पर राजा विक्रमादित्य हैं। वे सबकी समस्याओं का समाधान अत्यंत बुद्धिमानी से करते हैं। अतः आप सभी उनके पास जाएं। राजा विक्रमादित्य आपके विवाद का समाधान करेंगे।

सभी ग्रह देवता भू लोक से चलकर विक्रमादित्य की सभा में पंहुचे तथा अपना प्रश्न राजा के सामने रखा। राजा विक्रमादित्य ग्रहों की सुनकर चिंतित हो गए तथा

सोचने लगे कि मैं अपने मुख से किस ग्रह को छोटा अथवा बड़ा बताऊं। जिसे छोटा बताऊंगा वही क्रोध करेगा। उसका विवाद निपटाने के लिये उन्होंने एक उपाय सोचा। राजा ने सोना, चांदी, कांसा, पीतल, सीसा, रांगा, जस्ता, अभ्रक तथा लोहा आदि नौ धातुओं के नौ आसन बनवाए तथा सभी आसनों को उनके मूल्य के अनुसार बिछाया गया।

इसके पश्चात् राजा ने नवग्रहों से कहा आप सब अपना-अपना आसन ग्रहण करें। जिसका आसन सबसे आगे वह सबसे बड़ा तथा जिसका आसन सबसे पीछे वह सबसे छोटा जानिये। क्योंकि लोहा सबसे पीछे तथा शनिदेव का आसन था इसलिये शनिदेव ने सोचा कि राजा ने मुझे सबसे छोटा बना दिया है।

राजा के इस निर्णय पर शनिदेव को बहुत क्रोध आया। उन्होंने कहा कि राजा तू मेरे पराक्रम को नहीं जानता। सूर्य एक राशि पर एक महीना, चंद्रमा सवा दो दिन दो महीना, मंगल डेढ़ महीना। बुध और शुक्र एक महीना और बृहस्पति तेरह महीने विचरण करते हैं परन्तु मैं एक राशि पर ढाई वर्ष से लेकर साढ़े सात वर्ष तक रहता हूं। बड़े-बड़े देवताओं को भी मैंने भीषण दु:ख दिया है। सुनो राजन–रामचंद्र जी को साढ़े साती आई तो उन्हें बनवास हो गया। रावण पर आई तो राम ने वानरों सहित उसकी लंका पर चढ़ाई कर उसके कुल का सर्वनाश कर दिया। हे राजन! तुमने मुझे अपमानित किया है। अत: अब तुम सावधान रहना।

राजा विक्रमादित्य ने कहा–जो कुछ भाग्य में होगा देखा जाएगा। ऐसा सुनकर सभी ग्रह प्रसन्नतापूर्वक अपने-अपने स्थान को चले गए किंतु शनिदेव जी अत्यंत क्रोध में वहां से सिधारे।

कुछ काल व्यतीत होने पर जब विक्रमादित्य पर साढ़े साती की दशा आई तो शनिदेव घोड़ों का सौदागर बनकर सुन्दर घोड़ों के साथ राजा विक्रमादित्य की राजधानी में आए। जब राजा ने घोड़ों का सौदागर के आने की खबर सुनी तो उन्होंने अपने अश्वपाल को अच्छी-अच्छी नस्ल के घोड़े खरीदने की सलाह दी।

अश्वपाल इतने अच्छे घोड़े देखकर तथा उनका मूल्य सुनकर चकित हो गया तथा तुरन्त ही राजा को सूचना दी। राजा विक्रमादित्य ने उन घोड़ों को देखा तथा उन घोड़ों में से एक अच्छे नस्ल के घोड़े को चुनकर सवारी के लिए उस पर चढ़े।

राजा के पीठ पर चढ़ते ही घोड़ा तेजी से भागा। घोड़ा बहुत दूर एक घने जंगल में जाकर राजा को छोड़कर अंतर्ध्यान हो गया। इसके पश्चात राजा विक्रमादित्य अकेले जंगल में भटकते फिरते रहे। भूख प्यास से व्याकुल राजा ने एक ग्वाले को देखा। ग्वाले ने राजा को पानी पिलाया। राजा ने प्रसन्न होकर अपनी अंगुली से एक अंगूठी निकालकर ग्वाले को दी तथा स्वयं शहर की ओर चल दिये। राजा शहर में

जाकर एक सेठ की दुकान पर जाकर बैठ गए तथा उन्होंने उसे अपना नाम वीका बताया।

सेठ ने उसे एक कुलीन व्यक्ति समझकर जलादि पिलाया। भाग्यवश उस दिन सेठ की दुकान पर बहुत बिक्री हुई। सेठ उसे भाग्यवान पुरुष समझकर अपने घर भोजन के लिए ले गया।

भोजन करते समय राजा ने एक आश्चर्यजनक घटना देखी, जिस खूंटी पर हार लटक रहा था वह खूंटी हार को निगल रही थी। भोजन के पश्चात जब सेठ कमरे में आया तो उसे खूटी पर हार नहीं मिला। उसने सोचा कि वीका के अतिरिक्त कमरे में कोई नहीं आया अत: उसने ही हार चोरी किया है। परन्तु वीका ने हार की चोरी से मना कर दिया। तब कुछ व्यक्ति उसे पकड़ कर नगर फौजदार के पास ले गए।

फौजदार ने उसे राजा के सामने उपस्थित किया तथा कहा कि यह व्यक्ति भला प्रतीत होता है किंतु सेठ इस पर चोरी का आरोप लगा रहा है। राजा ने आज्ञा दी कि इसके हाथ-पैर कटवाकर चौरंगिया किया जाए।

राजा की आज्ञा का तुरन्त पालन हुआ तथा वीका के हाथ-पैर काट दिये गए। कुछ काल व्यतीत होने पर एक तेली ने राजा को देखा तथा दयावश वह उसे अपने घर ले गया। तेली ने उसे कोल्हू पर बैठा दिया।

वीका उस पर बैठा हुआ अपनी जबान से बैलों को हांकता रहता था। इस काल में राजा की शनि की दशा समाप्त हो गई। वर्षा ऋतु के समय चौरंगिया राजा विक्रमादित्य मल्हार राग गाने लगा। यह राग सुनकर शहर के राजा की प्रिय पुत्री मन भावनी उसकी वाणी पर मुग्ध हो गई।

राज कन्या ने अपनी दासी से मल्हार राग गाने वाले की खबर लाने के लिये भेज दिया। दासी सारे शहर में घूमती रही। जब वह तेली के घर के पास से निकली तो उसने देखा कि राजा चौरंगिया मल्हार राग गा रहा है।

दासी ने लौटकर राजकुमारी को सब वृतान्त कह सुनाया। उसी समय राजकुमारी मनभावनी ने अपने मन में यह प्रण कर लिया कि चाहे कुछ भी हो, मैं इसी चौरंगिया के साथ विवाह करूंगी। प्रात:काल होते ही दासी ने जब राजकुमारी मनभावनी को जगाया तो वह अनशन व्रत लेकर बिस्तर पर पड़ी रही। राजकुमारी की अनशन की बात दासी ने जाकर रानी को बताई रानी ऐसा सुनकर राजकुमारी के पास आई और पुत्री से कारण पूछा। राजकुमारी बोली—माता मैंने यह प्रण लिया है कि तेल के घर जो चौरंगिया है मैं उससे विवाह करूंगी। माता ने सुनकर आश्चर्य व्यक्त किया और कहा कि क्या तू पागल हुई है? तेरा विवाह तो किसी बड़े राजा से होगा। राजकुमारी

बोली–हे माता, ये मेरा अटल प्रण है जिसे मैं नहीं तोड़ूंगी। चिंतित हो राजा ने यह बात रानी को बताई। राजा ने पुत्री को समझाया–हे पुत्री, ये कैसी जिद है तुम्हारी? तुम्हारा विवाह तो किसी बड़े राजा से होगा। तुम्हें ऐसी बात नहीं सोचनी चाहिए। परन्तु राजकुमारी भी अपने प्रण पर अडिग थी। उसने कहा–पिताजी प्राण दे सकती हूं पर अपना प्रण नहीं तोड़ सकती। यह सुनकर राजा ने कहा–यदि तेरे भाग्य में ऐसा लिखा है तो यही सही। राजा ने तेली को बुलाकर कहा कि तेरे घर जो चौरंगिया रहता है मैं अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ करूंगा।

तेली न आश्चर्य से कहा–महाराज आप ये क्या कह रहे हैं? कहां राजकुमारी और कहां एक चौरंगिया। राजा ने कहा–ये सब भाग्य का खेल है। तुम जाकर विवाह की तैयारियां करो। राजा ने शुभ मुहूर्त देखकर राजकुमारी का विवाह चौरंगिया के साथ कर दिया। रात को जब विक्रमादित्य महल में सो रहे थे तो शनिदेव ने विक्रमादित्य को स्वप्न में दर्शन दिए और कहा–हे राजा! मुझे छोटा बतलाकर तुमने कितने कष्ट उठाए। राजा ने शनिदेव से कहा–प्रभु मेरे अपराध के लिए मुझे क्षमा कर दो। शनिदेव राजा से प्रसन्न हो गए तथा उन्होंने राजा को क्षमा कर दिया और राजा को उसके हाथ-पैर वापिस कर दिया।

तब राजा ने हाथ जोड़कर शनिदेव से विनय की–हे शनिदेव! मेरी आपसे विनती है कि आपने जैसे कष्ट मुझे दिए ऐसे किसी को कभी नहीं देना।

शनिदेव ने प्रसन्न होकर कहा–राजन तुम्हारी विनती मुझे स्वीकार है। जो व्यक्ति नित्य प्रति मेरा ध्यान करेगा, मेरी कथा सुनेगा, कहेगा उसे मेरी दशा में कभी कोई दुख नहीं होगा तथा जो भी मनुष्य प्रतिदिन मेरा ध्यान कर चींटियों को आटा डालेगा उसके सभी मनोरथ पूर्ण होंगे। यह कहकर शनिदेव अन्ध्यान हो गए।

सवेरे जब राजकुमारी मनभावानी की आंख खुली तो उसने चौरंगिया को हाथ-पैर सहित देखा तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। उसने विक्रमादित्य को जगाया और उसके इसका कारण पूछा। तब राजा ने अपना सारा वृतांत राजकुमारी को कह सुनाया।

यह सुनकर राजकुमारी अति प्रसन्न हुई। प्रात: काल मनभावनी की सखियों ने पिछली रात्रि का हाल-चाल पूछा तो उसने रात्रि की घटना का तथा उसके हाथ-पैर सही हो जाने का सारा वृतांत कह सुनाया। जब उस सेठ को यह घटना पता चली तो वह विक्रमादित्य के पास आया और उसने राजा से क्षमा मांगी और कहा–हे महाराज! मैंने आप पर चोरी का झूठा आरोप लगाया। मुझे क्षमा कर दीजिये। राजा ने कहा–यह सब मेरे भाग्य के तथा शनिदेव जी के कोप के कारण हुआ, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं था।

तब सेठ ने कहा–हे महाराज्! यदि आपने वास्तव में मुझे क्षमा कर दिया तो फिर मेरे घर चलकर भोजन ग्रहण करें, तभी मुझे शांति प्राप्त होगी। राजा ने कहा–जैसा आप उचित समझा करें।

घर जाकर सेठ ने नाना प्रकार के व्यंजन बनवाए और राजा विक्रमादित्य को आमंत्रित किया। जब राजा विक्रमादित्य तथा राजकुमारी भोजन कर रहे थे तो सबने एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना देखी। जो खूंटी पहले हार निगल चुकी थी वही खूंटी हार उगल रही थी। भोजन की समाप्ति पर सेठ ने हाथ जोड़कर राजा से कहा–महाराज मेरी श्रीकंवरी नाम की एक कन्या है। आप उसे पत्नी के रूप में वरण करें। राजा विक्रमादित्य ने सेठ की बात स्वीकार कर ली और सेठ ने अपनी कन्या का विवाह राजा से कर दिया और बहुत-सी भेंट राजा को दी, इस प्रकार आनन्दपूर्वक कुछ समय तक सेठ के राज्य में रहने के पश्चात् राजा विक्रमादित्य अपने श्वसुर राजा से कहा कि अब मेरी उज्जैन जाने की इच्छा है।

कुछ दिन बाद विदा लेकर राजकुमारी मनभावनी, सेठ की कन्या श्रीकंवरी तथा दोनों जगह से दहेज में प्राप्त अनेक दास-दासी, रथ और पालकियों सहित राजा विक्रमादित्य उज्जैन की तरफ चले। जब वे शहर के निकट पहुंचे और उज्जैनवासियों ने राजा के आने का समाचार सुना तो उज्जैन की समस्त प्रजा अगवानी के लिए आई। प्रसन्नता से राजा अपने महल में पधारे। सारे नगर में भारी उत्सव मनाया गया और रात्रि को दीपमाला की गई। दूसरे दिन राजा ने अपने पूरे राज्य में घोषणा करवाई कि शनि देवता सब ग्रहों में सर्वोपरि हैं। मैंने इनको छोटा बतलाया इसी से मुझको यह दु:ख प्राप्त हुआ।

इस प्रकार सारे राज्य में सदा शनिदेव की पूजा और कथा होने लगी। राजा और प्रजा अनेक प्रकार के सुख भोगती रही। जो कोई शनिदेव की इस कथा को पढ़ता या सुनता है, शनिदेव की कृपा से उसके सब दु:ख दूर हो जाते हैं। व्रत के लिए शनिदेव की कथा को अवश्य पढ़ना चाहिए।

ओ३म् शान्ति:। ओ३म् शान्ति:!! ओ३म् शान्ति:!!!

शनिवार की आरती

जय-जय रविनन्द जय दु:ख भंजन।

जय-जय शनि हरे ।।टेक।।

जय भुजचारी, धारणकारी, दुष्ट दलन।।1।।

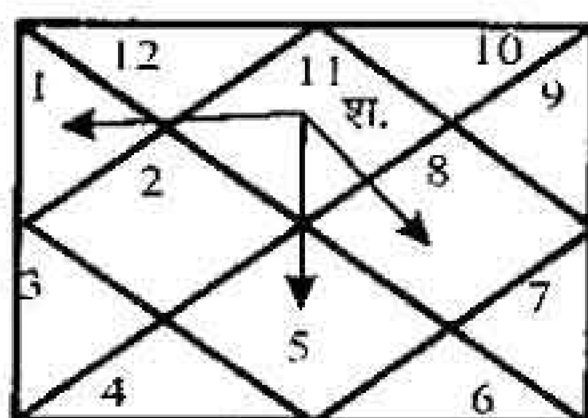
तुम होत कुपित, नित करत दुखी, धनी को निर्धन।।2।।

तुम धर अनुप यम का स्वरूप हो. करत बंधन।।3।।
तब नाम जो दस तोहित करता सो बस. जो करे रटन।।4।।
महिमा अपार जग में तुम्हारे. जपते देवतन।।5।।
सब नैन कठिन नित बरे अग्नि, भैंसा वाहन।।6।।
प्रभु तेज तुम्हारा अतिहिं करारा, जानत सब जन।।7।।
प्रभु शनि दान से तुम महान. होते तो मगन।।8।।
प्रभु उदित नारायण शीश. नवायन धरे चरण
जय-जय शनि हरे।

❑❑❑

कुंभलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

1. **माणिक्य**–कुंभलग्न के सूर्य इस भाव का स्वामी होता है। जो भाव विशेष रूप से मारक स्थान हैं और क्योंकि सूर्य मारकेश और लग्नेश का शत्रु है। अत: कुंभलग्न के जातकों को माणिक्य से दूर रहना लाभप्रद रहेगा।



2. **मोती**–कुंभलग्न में चंद्र षष्ठ भाव का स्वामी होता है। चंद्र लग्नेश शनि का शत्रु भी है अत: इस लग्न के जातक को मोती धारण नहीं करना चाहिए।
3. **मूंगा**–कुंभलग्न में मंगल तृतीय तथा दशम स्वराशि में हो तो मंगल की महादशा से इसके धारण करने से राज्य-कृपा व्यवसाय उन्नति होती है। इसके जातक को मूंगा धारण नहीं करना चाहिए।
4. **पन्ना**–कुंभलग्न के लिए बुध पंचम त्रिकोण और अष्टम भाव का स्वामी है। त्रिकोण का स्वामी होने के कारण यह इसके लिए शुभ माना गया है। यदि पन्ने को हीरे के साथ धारण किया जाये तो वह अत्यन्त शुभ लाभदायक बन जायेगा क्योंकि शुक्र इस लग्न के लिए चतुर्थ और नवम का स्वामी होने के कारण योग कारक ग्रह है। पन्ना लग्नेश शनि के रत्न व नीलम के साथ धारण करने से शुभ फल देगा।
5. **पुखराज**–कुंभलग्न के लिए बृहस्पति द्वितीय (धनाभाव) और एकादश (लाभ) भावों का स्वामी होता है। लग्नेश शनि बृहस्पति का शत्रु है तब भी बृहस्पति की दशा में पुखराज धारण करने से धन की प्राप्ति, समृद्धि से वृद्धि संतान सुख, विद्या में उन्नति नया बुद्धि बल प्राप्त होता है। परंतु बृहस्पति द्वितीय का स्वामी होने के कारण मारकेश भी है।

6. **हीरा**–कुंभलग्न के लिए चतुर्थ एवं नवम का स्वामी होने के कारण शुक्र अत्यन्त शुभ और योगकारक ग्रह माना गया है। शुक्र की महादशा में हीरा अवश्य धारण करना चाहिए। हीरा यदि नीलम के साथ धारण किया जाये तो उत्तम फलदायक होगा।

7. **नीलम**–कुंभलग्न के शनि द्वादश का स्वामी होते हुए भी लग्नेश है। उसकी मूल त्रिकोण राशि लग्न में पड़ती है। अत: कुंभ लग्न के जातक को नीलम शुभ फल देता है। यह आपका जीवन रत्न है।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**–पन्ना सवा चार रत्ती, नीलम सवा चार रत्ती त्रिलोह में।
2. **भाग्योदय हेतु**–हीरा सवा चार रत्ती, मूंगा सवा चार रत्ती चांदी में।
3. **आरोग्य हेतु**–नीलम अकेला सवा छ: रत्ती त्रिलोह में।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**–पुखराज-नीलम-मूंगा सवा चार-चार रत्ती स्वर्ण में।

❑❑❑

प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव फलादेश करते समय कृपया ध्यान रखें

1. फलादेश करते समय कृपया जल्दबाजी न करें। फलादेश करते समय अपने खुद के साथ जोर-जबरदस्ती न करें। यथा आपका ध्यान अन्य कार्य में है। आपके पास समय का अभाव है, परन्तु सामने वाला पृच्छक आप पर दबाव डाल रहा है कि मेरी तो ट्रेन जा रही है, बस जा रही है, प्लेन जा रहा है, अभी के अभी बताओ क्या होने वाला है? जो फलादेश आवेश व जल्दीबाजी में होगा वो फलादेश गलत हो जायेगा। क्योंकि फलादेश करते समय चित्त शान्त होना चाहिए।

2. जन्म कुण्डली का अध्ययन एकान्त में करें। गम्भीरतापूर्वक करें। आलतू-फालतू लोगों को पास न बैठायें। जहां तक हो सके दैवज्ञ विद्वान् के पास अकेला पृच्छक (जिज्ञासु) ही होना चाहिए।

3. दैवज्ञ को फलादेश करने के पूर्व सरस्वती अथवा अपने इष्ट देव का स्मरण करना चाहिए।

   रिक्त पाणि न पश्येत् राजानां दैवतां गुरुः।

4. फलादेश प्रारम्भ करने के पूर्व जिज्ञासु सज्जन से फल-पुष्प दक्षिणा भेंट इत्यादि स्वीकार करके, उसे प्रभु चरणों में समर्पित करके ही आगे प्रवृत होना चाहिए।

5. यह शास्त्र वचन है कि जो दैवज्ञ ज्योतिषी के समीप और ईश्वर के दरबार में खाली हाथ जाता है, वह खाली हाथ ही वापस लौटता है।

6. आगन्तुक पृच्छक से हमेशा प्रश्न लिखित में लिखकर लें और प्रत्युत्तर हमेशा हस्ताक्षर, तारीख और समय के साथ लिखित में लिखकर देने का साहस रखें, तभी आत्मविश्वास एवं साधना दोनों बढ़ेंगे।

7. घटना घटित होने के बाद उसकी सफलता एवं असफलता के कारणों की पुष्टि ज्योतिषीय सिद्धान्तों के आधार पर निरन्तर करते रहना चाहिए। फलित सत्य होने पर, स्व प्रशंसा न करें, ज्यादा फूले नहीं? क्योंकि यह सत्यखोजी ऋषियों की कृपा से हुआ है तथा फलित असत्य होने पर निराश या हताश नहीं होना चाहिए क्योंकि गलती हमेशा व्यक्तिगत ही होती है। **'मनुष्य मात्र भूल का पात्र'** गलती हममें है, ऋषियों की वाणी में नहीं, ऐस विश्वास रखना चाहिए।

8. जन्मपत्रिका को लग्न के अनुसार देखना सीखें।

शास्त्र कहते हैं–

9. **फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिण।**
को वक्तां तारतम्यस्य तमेकं वेधसं विना॥

ग्रहों की स्थिति पर से जानकार दैवज्ञ ज्योतिषी शुभ-अशुभ फलों की सूचना करते हैं, परन्तु (फलों के) कम अथवा अधिक प्रमाण तो एक मात्र जगत्सृष्टा ब्रह्मा के सिवाय कौन कह सकेगा? फिर भी ईश्वर के पश्चात् ज्योतिषी वह पहला व्यक्ति है, जो निश्चयपूर्वक आपके भूत, भविष्य एवं वर्तमान बताने का सामर्थ्य रखता है।

10. **पापत्वे सति नीचत्वे ऊच्चत्वे वापि किं फलम्।**
ते योगाः कि करिष्यन्ति स्वदशानामनागमे।

ग्रहों का अशुभत्व, नीचत्व अथवा उच्चत्व इनका योग होने पर भी यदि उनकी दशा नहीं आती हो तो उनके फल कहां से प्राप्त होंगे? और क्यों मिलना चाहिये? दशाओं में ग्रहों के शुभ-अशुभ फल प्राप्त होते हैं। इस जगह **'दशा'** शब्द से **'महादशा'** और **'अंतर्दशा'** इन दोनों का बोध होता है। दशा में विशेष फल मिलता है।

11. **मित्रशत्रुसमायोगे फलं मिश्रं शुभं विदुः।**
केन्द्रत्रिकोणेष्युच्चत्वे मित्रग्रहसमन्विते॥

मित्र और शत्रु ग्रहों का योग हो तो मिश्रफल जानना चाहिए। केन्द्र त्रिकोण अथवा उच्च, स्थानों में मित्र ग्रहों से युक्त ग्रह हों तो शुभ फल जानना चाहिये।

12. **मित्रराशिगते वापि मन्त्रिणा यदि वीक्षिते।**
मित्रयुक्ते बलवपि राजतुल्यो भवेन्नरः॥

मित्र ग्रहों के स्थान में स्थित, मित्रग्रह से युक्त और दिग्बली एवं अशों में बलवान ऐसा ग्रह यदि बृहस्पति से दृष्ट हो तो मनुष्य उस समय राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

13. कोई ग्रह यदि राहु के साथ बैठा है। जब ऐसे ग्रह की दशा हो तो उस दशा में अरिष्ट होता है।

14. जब लग्नेश अष्टम स्थान में हो तो उस दशा में बहुत दुःख, कष्ट एवं परेशानी होती है।

15. जब ग्रह '**दिग्बल**' से युक्त हो तो उसकी दशा में बड़ी प्रतिष्ठा उसी दिशा (Direction) में मिलती है, जिस दिशा का वह ग्रह स्वामी हो।

16. जब पाप ग्रह (शनि, राहु, केतु या दु:स्थान के स्वामी) की महादशा हो, और उसमें शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो, तो आरंभ में कष्ट होता है और अंत में सुख होता है।

17. जब शुभ ग्रह की (चंद्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र) महादशा हो, और उसमें पाप ग्रह की अंतर्दशा हो तो आरंभ में सुख होता है और अंत में भय होता है।

18. जब क्रूर (सूर्य या मंगल) ग्रह की महादशा हो, उसमें क्रूर ग्रह की अंतर्दशा, यदि वे दोनों आपस में शत्रु हों तो मृत्यु होती है, परन्तु जब वे आपस में मित्र हों तो जीवन में संदेह होता है।

19. जब दो ग्रह एक दूसरे से छठे अथवा आठवें स्थान में स्थित हों तो उनकी अंतर्दशा में बड़ा भय होता है।

20. जब मंगल (मारकेश) की महादशा में शनि (अन्य मारकेश) की अंतर्दशा हो तो मनुष्य की मृत्यु संभव है।

21. जब पाप ग्रह, क्रूर या शत्रु राशि में स्थित छठे अथवा आठवें स्थान में हों, शुक्र अथवा सूर्य की उस पर दृष्टि हो, तो अपनी दशा में मृत्यु करता है।

22. जब लग्नेश की दशा में, लग्नेश के शत्रु की अंतर्दशा हो तो अकस्मात् मृत्यु हो जाती है। ऐसा सत्याचार्य कहते हैं।

23. जिस ग्रह की महादशा हो उससे 6, 8, 12 स्थानों में स्थित ग्रह की अंतर्दशा शुभ नहीं होती है। शेष स्थानों में स्थित शुभ ग्रह की महादशा तथा पाप ग्रह की अंतर्दशा कष्ट देने वाली होती है।

24. जब दशम लग्न, लाभ, पराक्रम, सुख तथा त्रिकोण (पंचम, नवम) स्थित शुभ ग्रह हो और वह स्वगृही हो अथवा उच्च का हो, अथवा मित्र घर का हो, अथवा मित्र नवांश का हो तो उस ग्रह की दशा शुभ होती है। परन्तु जो ग्रह 8-12, 6-7-2 स्थानों में अथवा अष्टमेश में हो अथवा शत्रु के घर का हो पाप ग्रह हो, अथवा नीच का हो अथवा अस्तगत हो उसकी दशा शुभ नहीं होती है।

25. जब मित्र ग्रह की महादशा में, मित्र ग्रह की अंतर्दशा हो, अथवा शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो तो वह शुभ होती है। परन्तु जब शत्रु ग्रह की महादशा में शत्रु ग्रह की अंतर्दशा हो, अथवा पाप ग्रह की महादशा में, पाप ग्रह की अंतर्दशा हो तो शुभ नहीं होती है। यदि शुभ तथा पाप ग्रह अथवा शत्रु तथा मित्र ग्रहों की दशा और अंतर्दशा मिश्रित हो तो मिश्रित फल प्राप्त होता है।

26. उक्त दशाओं के साथ-साथ गोचर में चलायमान ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव जन्मकुण्डली पर अवश्य पड़ता है। इस तथ्य को घटित करके देखना चाहिए तथा बाद में अन्तिम निर्णय पर पहुंचना चाहिए।

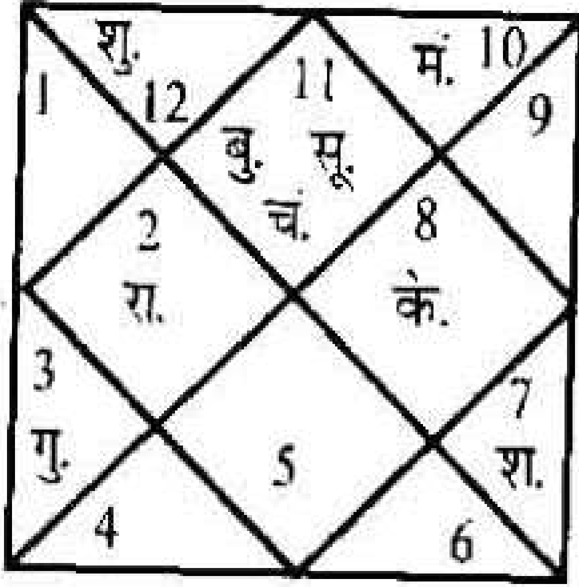
27. पृच्छक जब आपके पास आता है। उस समय शकुन क्या कहते हैं? प्रकृति की रहस्यमय घटनाओं का सूक्ष्म अध्ययन भी मन-मस्तिष्क में रखना चाहिए। वे तत्काल फल चमत्कारी रूप में देते हैं। मान लीजिए कोई आपसे प्रश्न पूछने आया और बिजली चली गई। कोई बर्तन अचानक गिर कर टूट गया? पास में रोने की, झगड़े का कलह की आवाजें आ गई तो जातक का कार्य हर्गिज नहीं होगा। जिज्ञासु सज्जन के आते ही कहीं से कोई फल-मिठाई पुष्प लेकर आ गया। अचानक रोशनी आ गई। टेलीफोन से अचानक शुभ समाचार मिल गये। बैन्ड-बाजे, नगाड़े की आवाज आ गई तो निश्चित ही आगन्तुक सज्जन का कार्य होगा। ज्योतिषशास्त्र के विद्वान् को शुभाशुभ शकुन शास्त्र का भी पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

A. अवतार, संत-महात्मा एवं विद्वान्

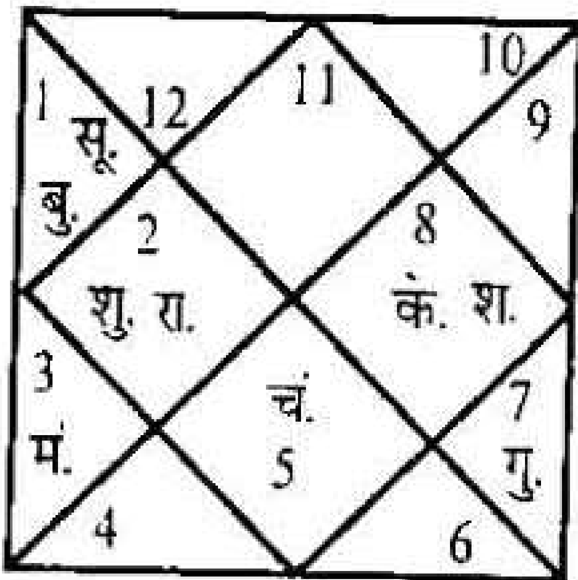
श्री रामकृष्ण परमहंस





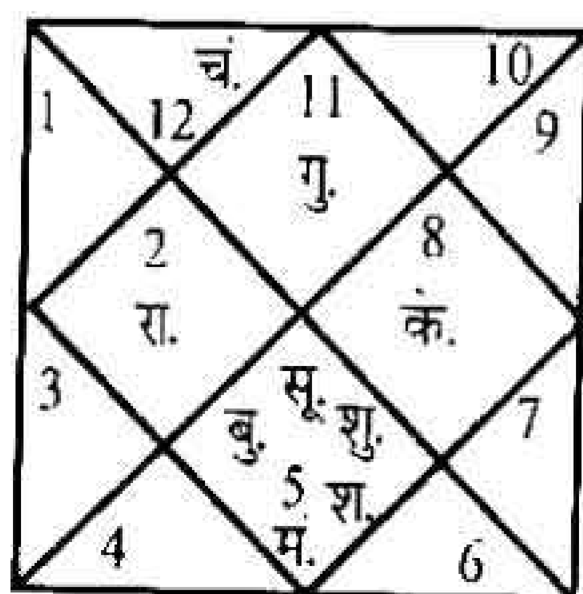
जन्म तिथि-18.2.1836, जन्म समय-6.23 बजे, जन्म स्थान-हुंगली (पं० बंगाल)। पंचम में स्थित बृहस्पति की स्थिति श्री रामकृष्ण परमहंस की कुण्डली के पूर्व जन्म के संचति पुण्य कर्मों को बताता है। बृहस्पति उच्चाभिलाषी हैं। वही शुक्र उच्च का है। शनि उच्च का है। मंगल उच्च का है तथा सूर्य लग्नस्थान में **''बुधादित्य योग'** करके बैठा है। निश्चय ही यह एक देवपुरुष की कुण्डली है जिसके चमत्कार सारे संसार को मालूम है।

पैगम्बर मोहम्मद



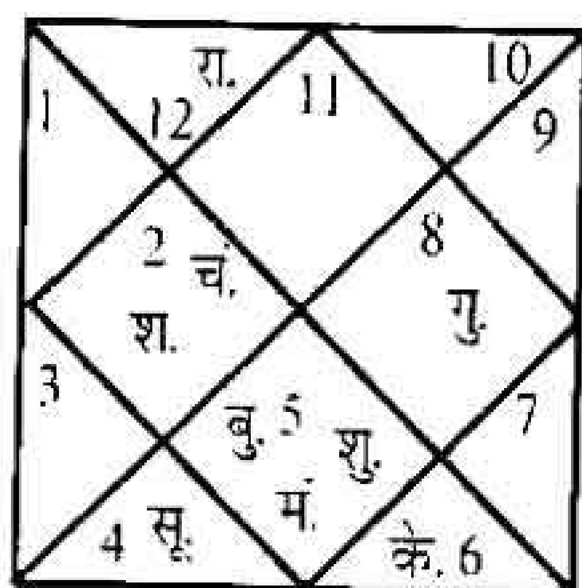
जन्म तिथि-22.4.0571, जन्म समय-1.40 बजे रात्रि, जन्म स्थान-मक्का। मुस्लिम धर्म के संस्थापक पैगम्बर मोहम्मद का जन्म मक्का में मुसलमानी 12 तारीख को हुआ। इनको मक्का में मदीना ईस्वी सन् 622 में ले जाया गया, क्योंकि मक्का में लोगों ने इनकी शिक्षा को स्वीकार नहीं किया। इनकी 11 औरतें थी। इनकी बड़ी लड़की का नाम फातमा था। इनके दो लड़के थे जो 8 वर्ष की उम्र मे मारे गये। ईस्वी सन् 630 में इन्होंने मक्का जीता तथा हिजरी सन् (मुस्लिम सन्) का शुभारम्भ किया।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री



जन्म समय-19.30, जन्मतिथि-22.8.1891। द्वितीय भाव (लेखनी एवं वाणी) का स्वामी बृहस्पति लग्न में होने से, चारों केन्द्र भरे हुए होने से **'आसमुद्रात् नामक राजयोग'** बना। आचार्य चतुरसेन यशस्वी लेखनी की कीर्ति चारों दिशाओं में फैली। **'बुधादित्य योग'** एवं **'पंचग्रह युति'** के कारण आचार्य चतुरसेन शास्त्री भारतीय संस्कृति के अनमोल हस्ताक्षर है।

डॉ. बी.वी. रमन



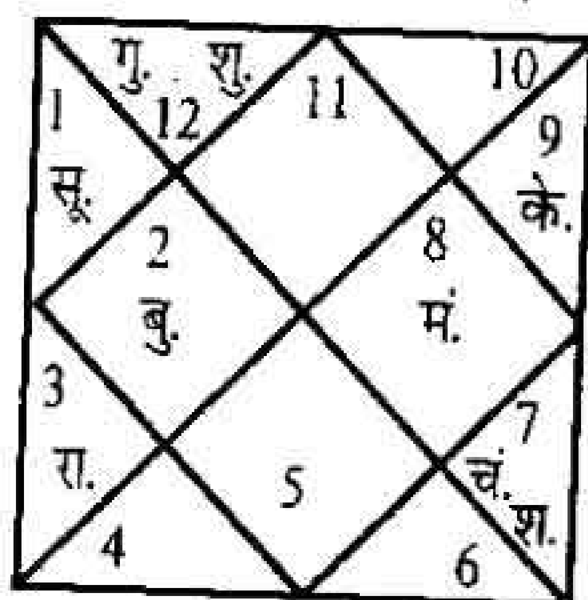


सम्पादक-ऐस्ट्रोलॉजिकल मैगजीन। जन्म स्थान-बैंगलोर, जन्म समय-19.40, जन्मतिथि-8.8.1912। डॉ. बी.वी. रमन को ज्योतिष की दुनियां में सोने का सिक्का

माना गया है। इनका मुख्य कारण वे राजनेताओं व राजनीति में अनर्गल भविष्यवाणियों से बचते रहे। केन्द्र में उच्चस्थ चंद्रमा ने उनका मानसिक स्तर, सोच उच्च को बनाये रखा। **'यामिननाथ योग'**, **'केसरी योग'**, **'कुलदीपक योग'**, **'पद्मसिंहासन योग'** ने उनकी कुण्डली को निखार दिया।

B. राजा, राजपुरुष व राजनेता

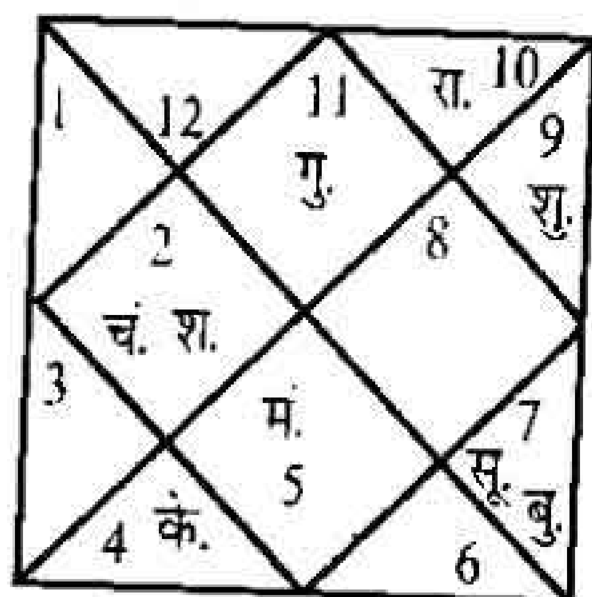
लंकेश्वर रावण





यह प्रचलित कुण्डली लंकेश्वर रावण की ही है। इनका कोई पक्का प्रमाण हमारे पास नहीं है क्योंकि जब तक जन्म तारीख हमारे पास सही नहीं हो। कुण्डली में स्थिति ग्रहों को सत्यता की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता। फिर भी प्रबुद्ध पाठकों के संग्रह व ज्ञान को बढ़ाने की दृष्टि से यह कुण्डली यहां दी जा रही है।

बादशाह औरंगजेब

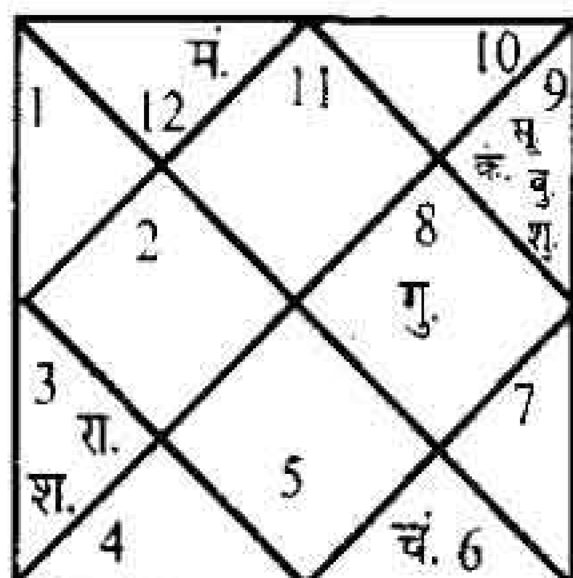




जन्म समय-14.05, जन्मतिथि-3.11.1618, जन्म स्थान-दोहद (गुजरात)। मुगल बादशाहों कट्टरपंथी औरंगजेब में (1659-1707) के मध्य हिन्दुस्तान पर शासन खून की नदियां बहाकर किया। वह शक्की दिमाग का एक ऐसा बदनसीब व्यक्ति था। जिसने अपने पुत्र, पिता एवं पत्नी तक की हत्या कर दी। औरंगजेब के

कारण मुगल सल्तनत हिन्दुस्तान से उठ गई क्योंकि इसने हिन्दू और गैर मुस्लिम लोगों पर बहुत जुल्म ढ़ाएं।

बादशाह शाहजहां (औरंगजेब का पिता)





जन्म स्थान-लाहौर (पाकिस्तान), जन्म समय-14.38, जन्मतिथि-5.1.1592। शाहजहां एक बदनसीब बादशाह था। आंशिक कालसर्पयोग ने उन्हें संतान सुख नहीं दिया। पंचम भाव में शनि व राहु ने क्रूर व कपूत संतान की पिता बनाया। इससे बढ़ियां फलित ज्योतिष की सत्यता का और प्रमाण क्या हो सकता है।

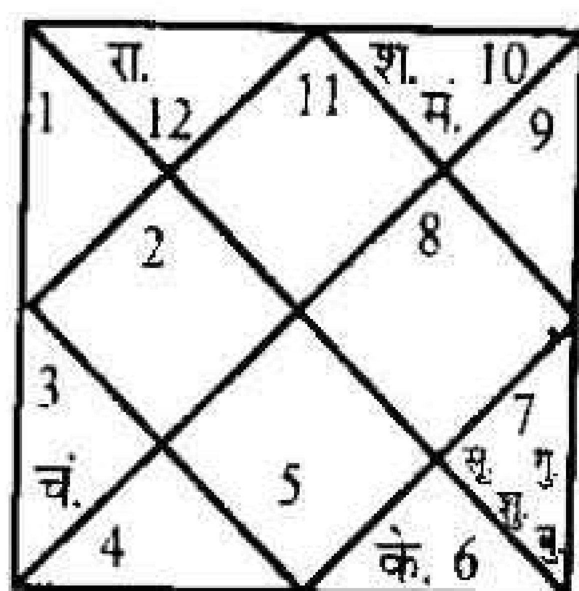
शाहजहां को जहां एक ओर शनि की दशा में ही तमाम शुभ फल मिलें वहीं दूसरी ओर शनि की ही दिशा में उसके पुत्र औरंगजेब ने उसे बंदी बनाकर कालकोठरी में डलवा दिया। इतना ही नहीं शनि की ही दशा में उसकी मृत्यु भी हुई...

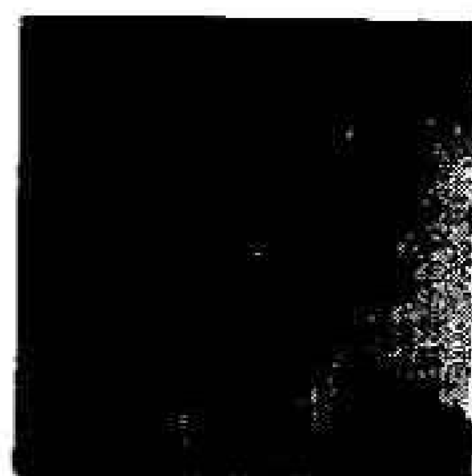
शाहजहां के पिता जहांगीर के समय में कुछ कट्टरवादी नीतियों का सूत्रपात हुआ था। शाहजहां नामा में ज्योतिष से संबधित जो बातें लिखी गई हैं, उसमें यह भी आता है कि 22 फरवरी 1633 की रात को राजकुमार शाहशूजा (शाहजहां) का विवाह ज्योतिषीय मुहूर्त देखकर ही किया गया था और जिस त्योतिषी ने यह मुहूर्त निकाला था, उसका नाम मकरात खां था इतना ही नहीं शाहजहां जब 60 साल का हो गया, तो उसकी 'षष्टि पूर्ति' भी हिंदू परंपराओं के अनुसार ही मनाई गई थी। शाहजहां की उपलब्ध कुंडली में पंचम का शनि, राहु से युत है और मंगल वक्री शुक्र, बुध और सूर्य से दृष्ट हैं, जो राज्याभिषेक के समय को तो दर्शाता ही है, साथ ही उसके जीवन के अंतिम दुखद वर्षों की कहानी भी कहता है। शाहजहां की कुंडली में नवमेश (पिता), तृतीयेश (भाई) और पंचमेश (संतान) उसके जीवन की ऊंचाइयों और दुखों में अंतर्निहित क़हानियां बयान करते हैं। इसका एक महत्त्वपूर्ण कारण शायद यह भी है कि मुगलों में उत्तराधिकार का नियम अनिश्चित था। इस मामलें में अगर यह तय होता कि ज्येष्ठ पुत्र ही सम्राट का उत्तराधिकारी होगा, तो शाहजहां

को ही गद्दी मिलती। ऐसा नहीं होने के वजह से उसके भाइयों ने उसके खिलाफ षड्यंत्र किया और नूरजहां ने भी इसी त्रुटि का लाभ उठाते हुए अपने दामाद शहरयार को जहांगीर का उत्तराधिकारी बनाने का असफल प्रयास किया।

इसके खिलाफ जब शाहजहां ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया उस समय (1620-1628) वह राहु में अष्टमस्थ चंद्र और तृतीयेश मंगल की अंतर्दशा में चल रहा था। भाग्यस्थ तथा दशमस्थ बृहस्पति की दशा आते ही शाहजहां को जहांगीर का उत्तराधिकार मिल गया। इसके लिए उसे अपने भाइयों की हत्या भी करवानी पड़ी। शाहजहां को अच्छी दशाओं और अच्छे ज्योतिषीय योगों का फल शनि की दशा में मंगल की अंतर्दशा तक ही मिला, लेकिन शनि-राहु के पंचम होते ही स्थिति पलट गई और इस दशा में उसके पुत्र औरंगजेब ने न सिर्फ अपने भाइयों द्वारा, शूजा और मुराद की धोखे से हत्या करवा दी, बल्कि अपने पिता को बंदी भी बना लिया। इतना ही नहीं उसने खुद को सम्राट भी घोषित कर दिया। चाहे जो भी हो, मगर संपूर्ण विश्व शाहजहां को ताजमहल के लिए आज भी याद करता है, जिसे उसने अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में बनवाया था। शाहजहां की मृत्यु 1658 में शनि की महादशा और द्वितीयेश बृहस्पति की अंतर्दशा में हुई, जबकि शनि की महादशा और राहु की अंतर्दशा में उसे गिरफ्तार कर कारावास में डाला गया था। यह काम किसी और ने नहीं, बल्कि उसके पुत्र ने ही किया था।

मोहम्मद अली जिन्ना, कायदे आजम पाकिस्तान





जन्म स्थान-करांची (पाकिस्तान), जन्म समय-14.30, जन्मतिथि-20.10.1875। केन्द्र खाली, चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होने से सोच नकारात्मक थी। यही एक व्यक्ति था। जिसने हिन्दुस्तान पाकिस्तान के टुकड़े द्वेष भावना से कराये। सूर्य+शुक्र की युति **'नीचभंग राजयोग'** भाग्यस्थान में एवं शनि+मंगल की युति **'किम्बहुना योग'** ने इन्हें पाकिस्तान का कायदे आजम बना दिया।

अब्राहम लिंकन (अमेरिकी राष्ट्रपति)

गु. शु. 12 11 चं. 10 9
1 सू. बु. 8
कें. 2 श.
3 7 मं. रा.
4 5 6



जन्म समय-7.45 बजे सुबह, जन्म तिथि-12.2.1809, जन्म स्थान-केंदुकी (अमेरीका)। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की एक अलग (1809-65) पहचान है। उन्होंने अमेरीका को गुलामी से मुक्त कराया। वे सन् 1864 में पुन: राष्ट्रपति पद पर चुन लिये गये। सन् 1865 में उनकी गोली मार कर हत्या कर दी गई। जन्मकुण्डली में प्रदर्शित 'पूर्णकालसर्प योग' षष्टेश चंद्रमा के द्वादश में जाना ही इनके अकाल मृत्यु का कारण बना।

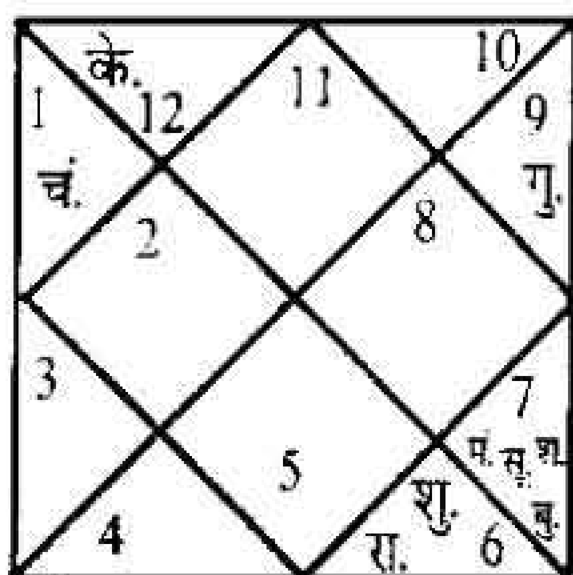
श्री नारायण दत्त तिवारी (मुख्यमंत्री उत्तरांचल)

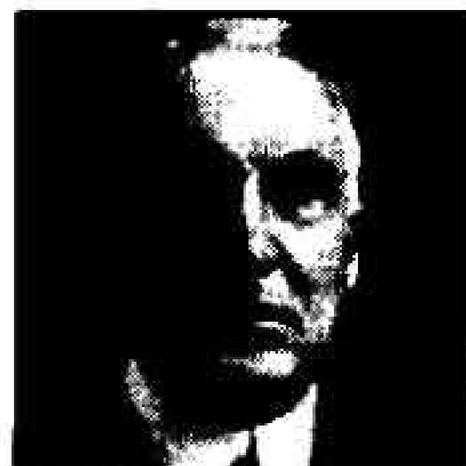
1 12 11 कें. 10 9
2 8 गु.
शु.
3 7 बु. सू. चं. श.
4 रा. 5 मं. 6



जन्म तिथि-18.10.1952, जन्मसमय-16.00, जन्म स्थान-नैनीताल। श्री नारायणदत्त तिवारी एक मृदुभाषी गंभीर स्वभाव के राजनेता रहे क्योंकि वाणी का अधिपति बृहस्पति इनकी कुण्डली में स्वगृही का अधिपति बृहस्पति इनकी कुण्डली में स्वगृही है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं पुन: उत्तरांचल के मुख्यमंत्री पद पर इनको सूर्य+शनि की युति ने पहुंचाया। **'नीचभंग राजयोग'** एवं चतुष्ग्रह युति ने इनके किस्मत को चारों ओर से चमकाया। केन्द्रस्थ शुक्र ने **'कुलदीपक योग'** बनाकर इन्हें आगे बढ़ाया। परन्तु **'महापद्मनामक कालसर्प योग'** के कारण से अपने गुप्त शत्रुओं से सदा परेशान रहेंगे।

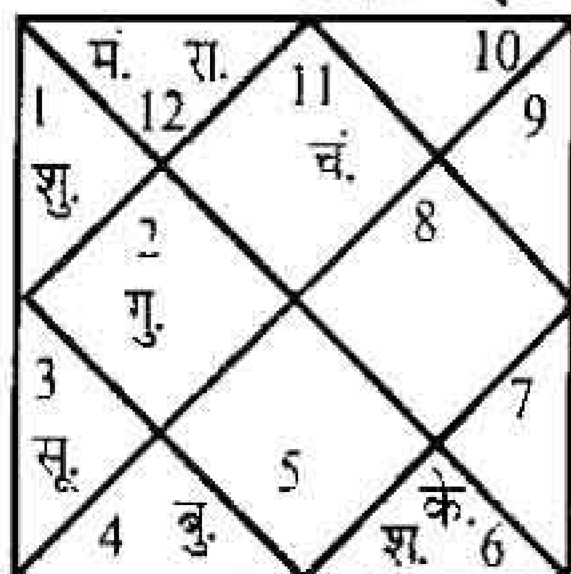
अमेरिका के पूर्व प्रधानमंत्री जी. हार्डिंग

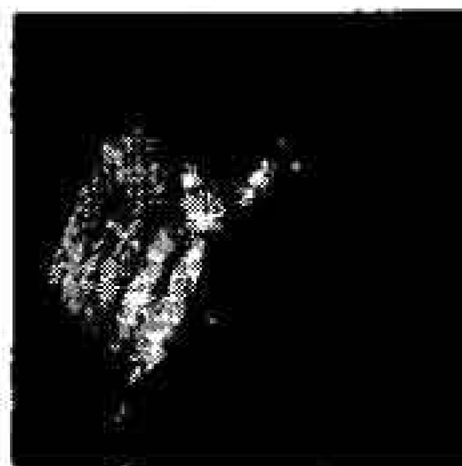




जन्म तिथि–2.11.1865, जन्मसमय–14.30। अमेरीका के प्रमुख जी. हार्डिंग की कुण्डली में भाग्यस्थान में सूर्य+शुक्र की युति से बना। **'नीचभंग राजयोग'** ने इनकी किस्मत बदल दी। 'चतुष्ग्रह युति' ने चारों ओर से आगे बढ़ने में मदद की। धनेश बृहस्पति स्वगृही से वे करोड़पति बने रहे। शनि व राहु ने अष्टम में जाकर **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** बनाया।

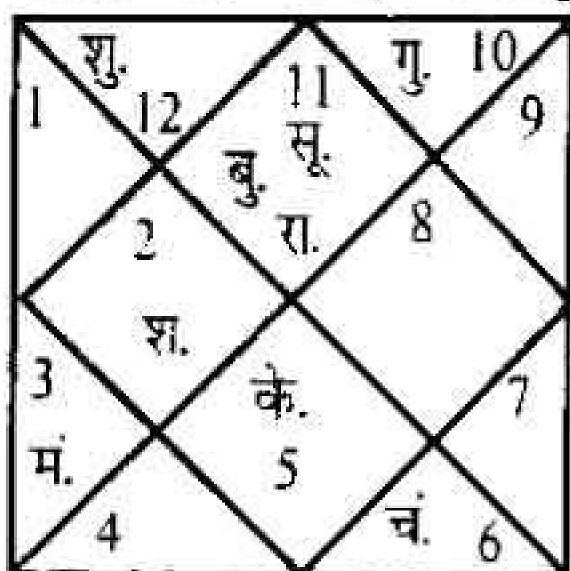
सम्राट एडवर्ड अष्टम





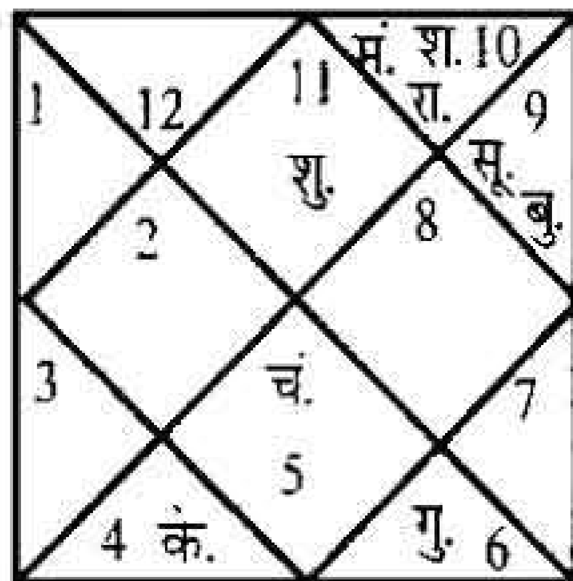
धनेश बृहस्पति केन्द्र में तथा शनि अष्टम में जाने से **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** बना। सम्राट एडवर्ड अष्टम का जन्म ही उच्च घराने में हुआ। जैसे शेर का बच्चा जन्म से ही शेर कहलाता है। वैसे ही वे सम्राट कहलाये।

श्री वाई. वी. चव्हाण (पूर्व गृहमंत्री, भारत सरकार)



श्री वाई.वी. चव्हाण जमीन से जुड़े हुए कठोर परिश्रम से आगे बढ़ने वाले राजनेताओं की श्रेणी में अग्रगण्य है। लग्न में **'बुधादित्य योग'** ने इन्हें राजगद्दी दी। **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** ने इन्हें सत्ता सौंपी। उच्च के शुक्र ने इनका भाग्य चमकाया। परन्तु **'कालसर्प योग'** की छाया ने इन्हें 'वंश वृद्धि' नहीं की।

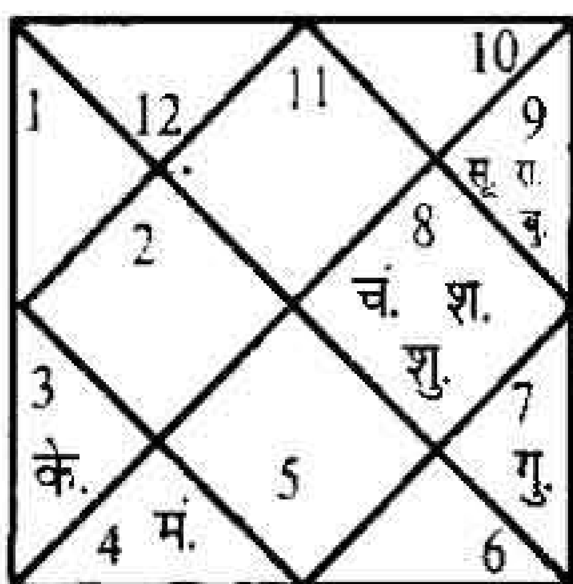
डॉ. मुरलीमनोहर जोशी





जन्म तिथि-5.1.1934, जन्मसमय-10.20 बजे सुबह, जन्म स्थान-दिल्ली। भारतीय राजनीति के अनमोल हस्ताक्षर डॉ. मुरली मनोहर जोशी की कुण्डली में **'किम्बहुनानामक राजयोग'** बना। **'बुधादित्य योग'** ने इन्हें राजनीति में उच्च पद दिया। लग्नस्थ शुक्र ने भाग्य को चमकाया। परमराजयोग कारक शुक्र ने परम राजयोग दिया।

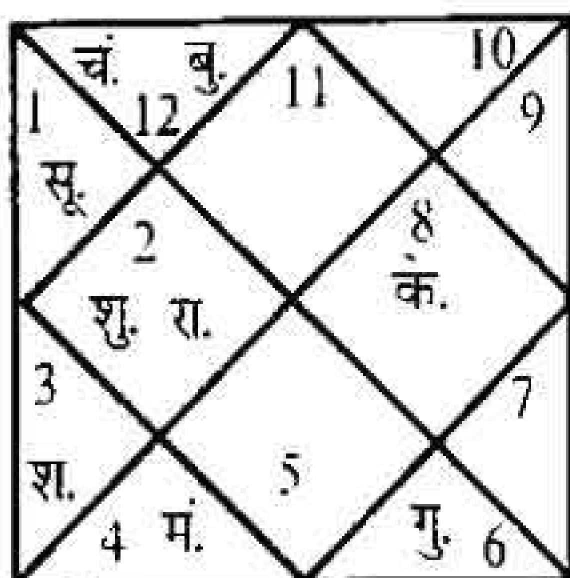
श्रीमती भंडारनायक, (प्रधानमंत्री लंका)





जन्म तिथि-8.1.1899, जन्मसमय-10.00, जन्म स्थान-श्रीलंका। श्रीमति भण्डार नायके के कुण्डली में केन्द्रस्थ शुक्र व शनि ने उन्हें प्रधानमंत्री की कुर्सी पर पहुंचाया। **'बुधादित्य योग'** ने राजपद दिया। चंद्र एवं मंगल ने परस्पर **'राशि परिवर्तन'** करके, इनके राजनैतिक शत्रुओं का नाश किया।

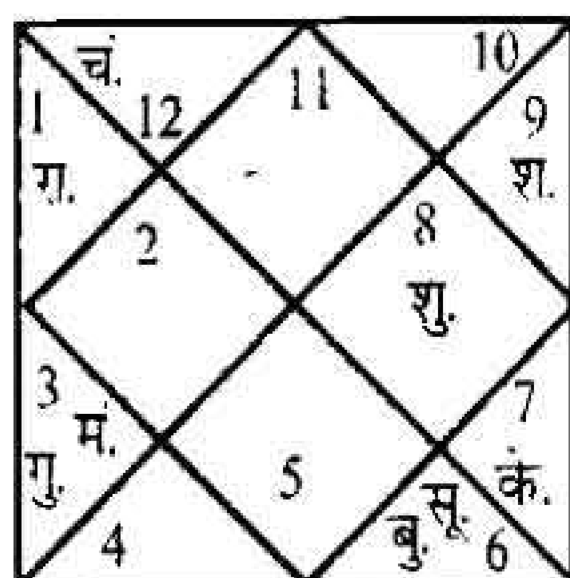
अजीत जोगी (पूर्व मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़)





जन्म तिथि-29.4.1940, जन्म समय-2.30, जन्म स्थान-पेंढ़रा (म. प्रदेश)। श्री अजीत जोगी की कुण्डली में पड़ा **'मालव्य योग'** ने इन्हें एक जिलाधीश, प्रशासक एवं मुख्यमंत्री के उच्च पद तक पहुंचाया। परन्तु नीच का बुध षष्टेश चंद्रमा के साथ होने से ये षड्यंत्रकारी योजनाओं के पुरोधा भी रहे हैं। हमने इनके पराभाव की घोषणा इस योग के चलते बहुत पहले कर दी थी।

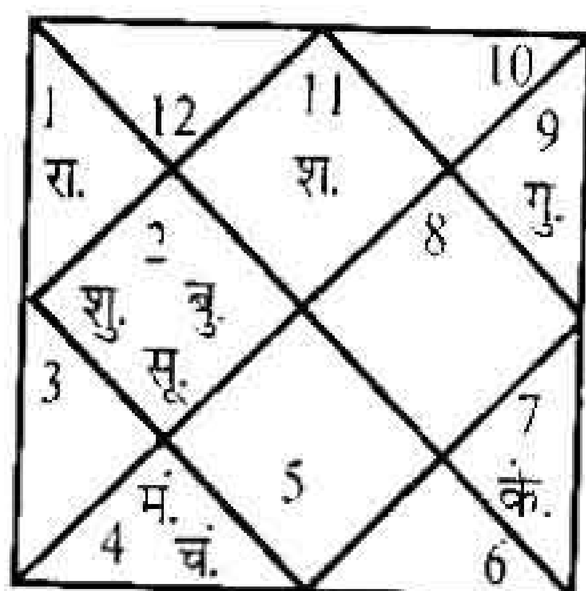
श्री भजनलाल





जन्म तिथि-6.10.1936, जन्म समय-17.15, जन्म स्थान-भावलपुर (पाकिस्तान)। 'आयाराम गयारामा' राजनीति के प्रणेता श्री भजन लाल केन्द्रीय स्तर के राष्ट्रीय राजनेताओं में प्रमुख व अग्रगण्य है। भाग्येश शुक्र केन्द्र में होने से **'कुलदीपक योग'** के कारण वे भाग्यशाली रहे। मंगल के कारण **'पद्मसिंहासन योग'** ने उन्हें मुख्यमंत्री पद दिलाया। बुधादित्य योग ने उन्हें राजा बनाया। लग्नेश शनि ने भाग्य स्थान में जाकर उन्हें कूटनीतिज्ञ (डिप्लोमेट) राजनेता बनाया।

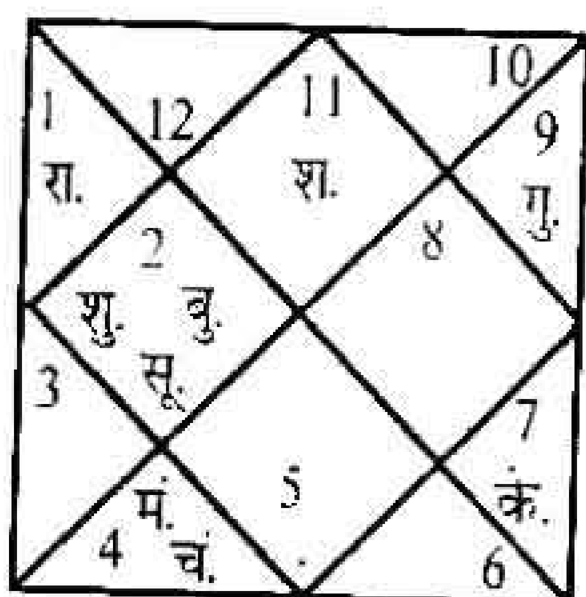
काल मार्क्स





जन्म तिथि-5.5.1818 जन्म समय-02.30, जन्म स्थान-त्रिरोर (पश्चिमी जर्मनी)। काल मार्क्स की कुण्डली में भी अजीत जोगी की तरह **'मालव्य योग'** है पर शनि के कारण **'शश योग'** एवं केन्द्र में **'बुधादित्य योग'** ने इनकी कुण्डली को विशेष चमक दी। धनेश बृहस्पति स्वगृही, चंद्र+मंगल **'लक्ष्मी योग'** ने इन्हें आजीवन धन की कमी नहीं होने दी।

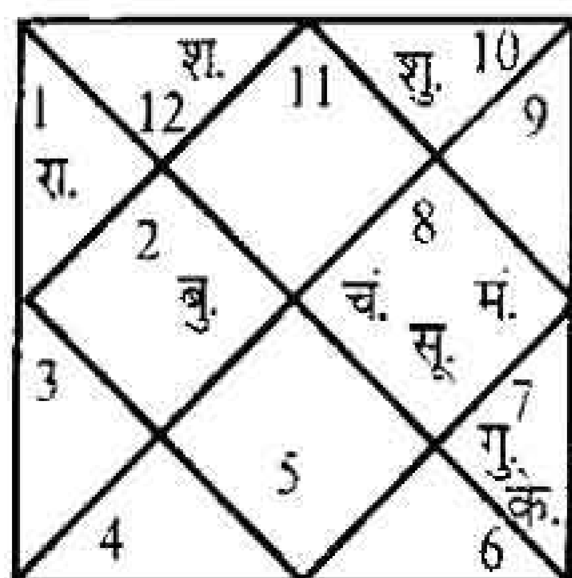
एम. जी. रामचंद्रन





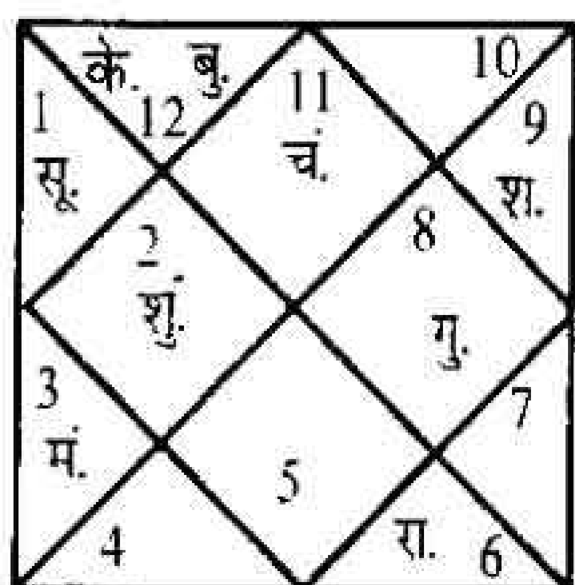
जन्म तिथि-17.1.1917 जन्म समय-9.15, जन्म स्थान-कोलम्बो। इस कुण्डली में मंगल उच्च का **'रुचक योग'** बना रहा है। साथ ही **'बुधादित्य योग'** भी है। केन्द्र चारों खाली है। राजनीति में कोई उल्लेखनीय सफलता मिले। ऐसा योग कम दिखलाई देता है।

श्री अमरसिंह राठौड़



जन्म समय-12.12.1613, जन्म समय-12.00, जन्म स्थान-नागौर (राजस्थान)। श्री गजसिंह प्रथम के पुत्र। मारवाड रिसायत के राजा, औरंगजेब के जमाने में औरंगजेब के नाक में दम करने वाले जोधपुर महाराजा की रियासत नागौर के एक छोटे से सेवक ने भारत के इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया। इसका श्रेय केन्द्रस्थ मंगल **'रुचक योग'**, **'पद्मसिंहासन योग'**, **'कुलदीपक योग'**, **'लक्ष्मी योग'** को जाता है।

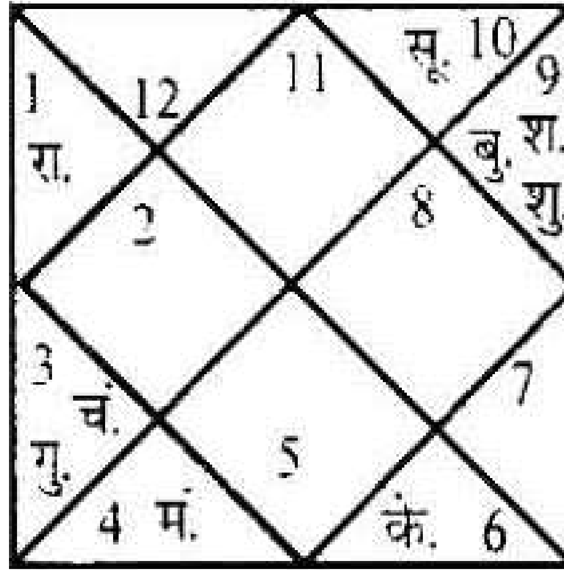
सुश्री उमाभारती (मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश)

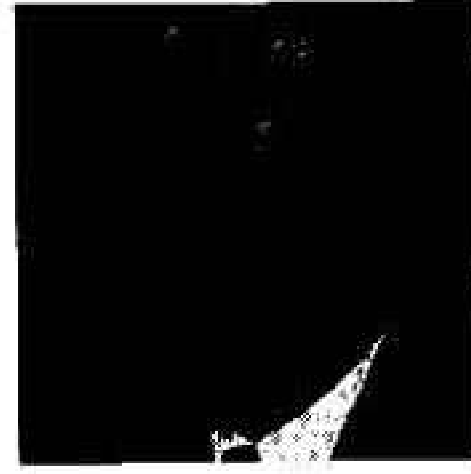




जन्म समय-3.6.1959, जन्म समय-03.00, जन्म स्थान-टीकमगढ़। इस कुण्डली में केन्द्रस्थ शुक्र ने **'मालव्य योग'** बनाया है। **मालव्य योग** ने ही सुश्री उमाभारती को मध्य प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया। केन्द्रस्थ बृहस्पति **'कुलदीपक योग'** एवं **'केसरी योग'** बना रहा है। पराक्रम स्थान में उच्च का सूर्य पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि कर रहा है।

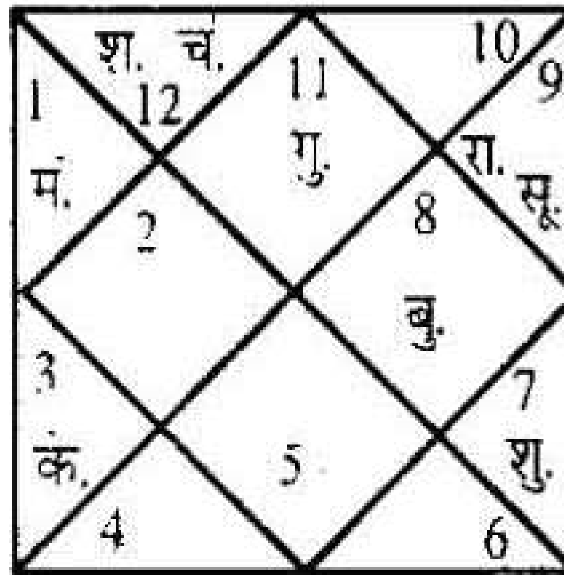
बोरिस येल्तसिन (रुस)





जन्म समय-1.2.1931, जन्म समय-7.50, जन्म स्थान-स्वरदलोस्क (रुस)। यहां भी केन्द्र के 1, 4, 7 व 10 सभी स्थान खाली है। पंचम भाव में बृहस्पति के साथ चंद्रमा **'गजकेसरी योग'** बना रहा है।

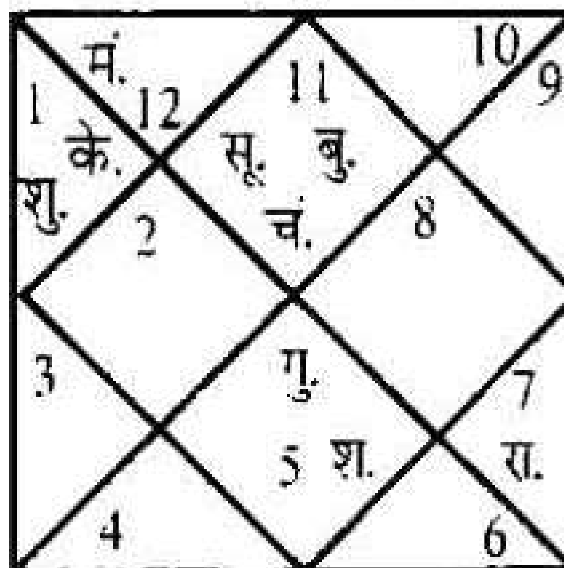
स्तालिन





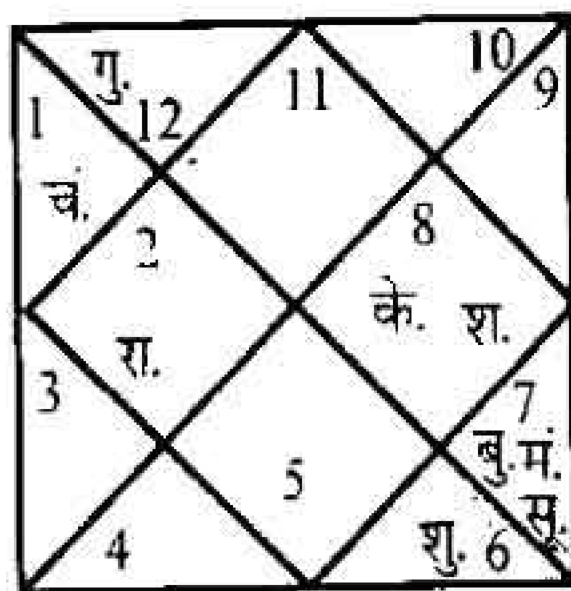
जन्म समय-21.12.1879, जन्म समय-10.45, जन्म स्थान-गोरया। रुस के राष्ट्रपति स्तालिन की कुण्डली में लग्नस्थ बृहस्पति राजयोग दे रहा है। बुध केन्द्र में **'कुलदीपक योग'** एवं शुक्र स्वगृही भाग्य स्थान में जातक के मध्य में अद्वितीय वृद्धि कर रहा है। पराक्रम स्थान में मंगल को जबरदस्त पराक्रमी बनाया।

श्री मथुरादास माथुर (पूर्व मंत्री)



जोधपुर शहर के प्रमुख राजनेता मथुरदास माथुर लग्नस्थ सूर्य, बुध की युति **'बुधादित्य योग'** के कारण जनप्रिय राजनेता रहे। केतु पराक्रम स्थान में होने से इनका पराक्रम तेज रहा है।

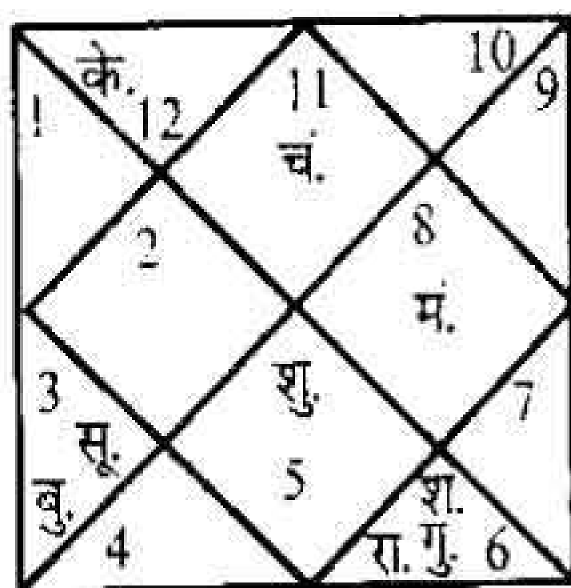
श्री लालकृष्ण आडवाणी (उपप्रधानमंत्री)





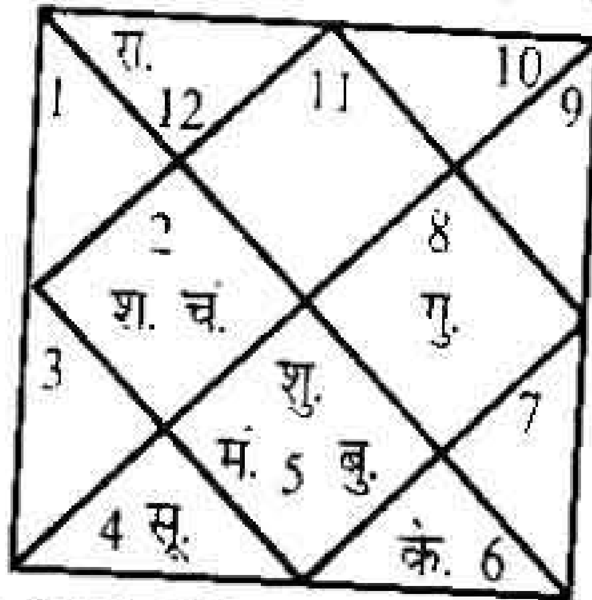
जन्म समय-8.11.1927, जन्म समय-14.30, जन्म स्थान-हैदराबाद (पाकिस्तान)। यहां दशमस्थ शनि ने श्री आडवाणी को ज़बरदस्त राजयोग दिया। सूर्य बुध की युति भाग्यभवन में बना **'बुधादित्य योग'** ने इन्हें उपप्रधानमंत्री का उच्च पद दिया। बृहस्पति स्वगृही होने से इनकी वाणी संयमित व सारगर्भित है।

जूनागढ़ महाराज



जन्म स्थान-भोपाल, जन्म तिथि-13.7.1922, जन्म समय-21.00। दशम स्थान में मंगल ने **'रुचक योग'** बनाकर इन्हें राज दिया। पंचम स्थान में स्वगृही बुध व सूर्य से **'बुधादित्य योग'** ने अथाह सम्पत्ति दी। केन्द्रस्थ शुक्र **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि कर रहा है। शनि अष्टम में **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है।

श्रीमती विजयराजे सिंधिया (ग्वालियर राजमाता)

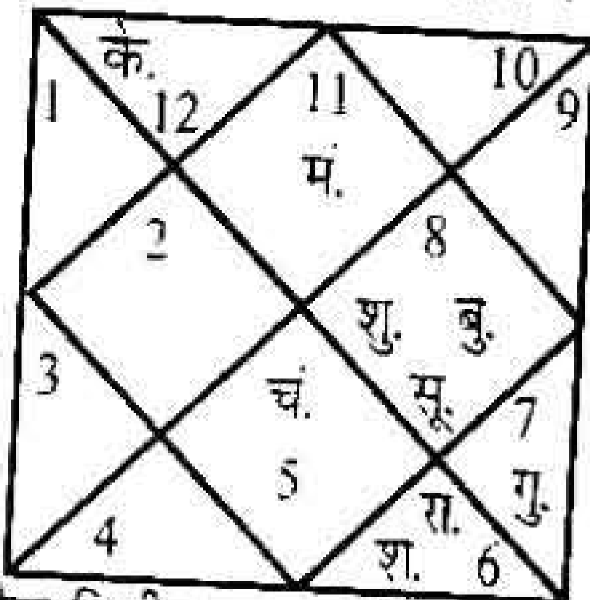




जन्म समय-8.8.1912, जन्म समय-19.15, जन्म स्थान-बैंगलोर। श्रीमति विजयराजे सिंधिया का जन्म ही उच्च शाही परिवार में हुआ। केन्द्रस्थ बृहस्पति ने उन्हें भाजपा का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद दिया। केन्द्रस्थ शुक्र एवं बुध के कारण वे सांसद भी निर्वाचित हुई।

C. अभिनेता

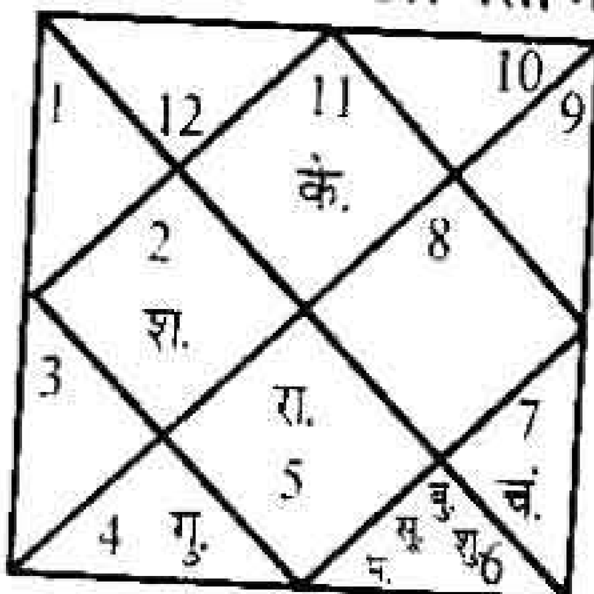
दिलीप कुमार





अभिनेता दिलीप कुमार की कुण्डली में केन्द्रस्थ शुक्र ने उन्हें श्रेष्ठ अभिनेता बनाया। सूर्य, बुध की युति से बना **'बुधादित्य योग'** ऊंची कीर्ति व प्रतिष्ठा दी। परन्तु 'आंशिक कालसर्प योग' ने वंश वृद्धि में रुकावट दी।

अभिताभ बच्चन





अभिताभ बच्चन मनोरंजन की दुनिया का बादशाह है। सितारों में धुमकेतू की तरह फिल्मी आकाश में जगमगाने वाले अभिताभ बच्चों, युवा और बड़ों सभी के दिलों पर राज करते हैं। पिछले साल अक्तूबर माह में ही उन्होंने जीवन के साठ वसंत पूरे किए।

अभिताभ बच्चन का जन्म कवि हरिवंशराय बच्चन के यहां 11 अक्तूबर 1942 को इलाहाबाद में कुंभ लग्न के तुला नवामांश में हुआ। लग्नेश शनि उनकी कुण्डली का सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रह है, जो कि लाभ स्थान और अग्नि राशि में है। उन्होंने अपनी फिल्मी दुनिया की शुरुआत 'सात हिन्दुस्तानी' फिल्म से प्रारंभ की जो बॉक्स ऑफिस पर पिट गई। 'जंजीर' फिल्म से वे 'एंग्री यंग मैन' के रूप में उभरे। राहु की महादशा में शनि के अन्तर से उन्हें पहला फिल्मफेयर पुरस्कार (श्रेष्ठ अभिनेता) 1977 में 'अमर अकबर एन्थनी' पर मिला। इसके बाद 'डॉन' (1978) तथा 'नमकहराम' के लिए भी (1973) में सम्मान मिले। श्रेष्ठ अभिनेता के रूप में उन्हें 1990 में 'अग्निपथ' पर राष्ट्रीय पुरस्कार मिला, जब इन्हें बृहस्पति में शनि का अन्तर चल रहा था।

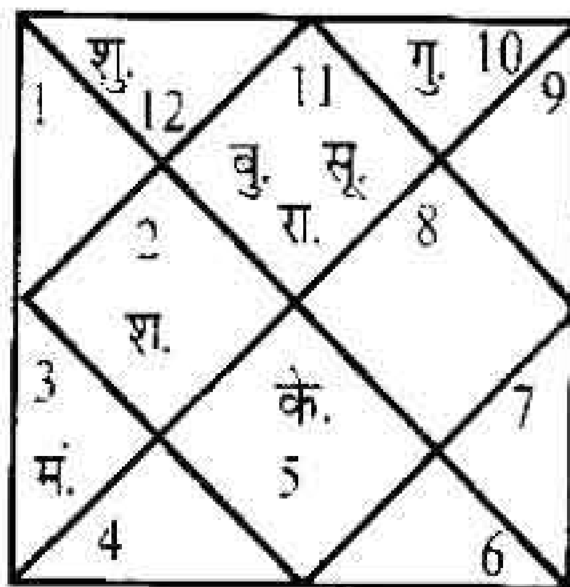
बृहस्पति छठे भाव में उच्च राशि का है तथा शुक्र अष्टम भाव में नीच का है। फिल्मी कैरियर में दोनों ग्रहों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शनि भी उत्तम स्थिति में हैं। वे धनी और दीर्घायु होंगे क्योंकि उनका 'बुधादित्य योग' ठीक दादा मुनि अशोक कुमार की ही तरह अष्टम स्थान में मुखरित है। अष्टमेश का अष्टम स्थान में स्वगृही होने से '**सरल योग**' शुभकारी है। अभिताभ के सुपर स्टार के योग शनि की महादशा में बने। यह महादशा अक्तूबर 1971 से 1990 तक रही। वृषभ में गोचरीय शनि ने उन्हें टी.वी. पर भी लोकप्रियता दिलाई। 'कौन बनेगा करोड़पति' की अपार लोकप्रियता वृषभ में गोचरीय शनि में ही हुई।

अभिनय का संबंध पंचम भाव से होता है। अभिताभ की कुण्डली में बुध पंचम का स्वामी है, अपनी उच्च राशि में स्थित है। बुध की महादशा 10 नवम्बर 2007 तक है, समय श्रेष्ठ है। केतु, रवि तथा चंद्र की अंतर्दशा ने उन्हें असफलता भी दी। आर्थिक हितों को भी आघात लगा। लेकिन अप्रैल, 1999 के बाद मंगल की अंतर्दशा ने उबार लिया। टी.वी. गेम शो से पुनः वे सुपर स्टार बन गए।

शनि, राहु तथा बृहस्पति उत्तम गोचरीय स्थिति में है। महादशा भी 2007 तक उत्तम है। मिथुन में शनि 2003 और 2004 में उन्हें सम्मान दिलाएगा। वे लेखन के क्षेत्र में प्रवेश करेंगे और प्रसिद्धि पाएंगे। अभी उन्हें बुध की महादशा चल रही है। बुध जो योग कारक होकर खड्डे में पड़ा है, उच्च का है। **नीचभंग राजयोग** करके बैठा है। यह जीवन की सर्वश्रेष्ठ दशा है। इस दशा का प्रभाव वैसे तो 10.11.2007

तक रहेगा। परन्तु बुध में बृहस्पति का अन्तर जो कि 25.11.2002 को लगा है तथा 2 मार्च 2005 तक चलेगा, अत्यन्त समृद्धिदायक, धनदायक और सफलतादायक रहेगा। बृहस्पति जन्म कुण्डली में उच्च का है। इस अंतर्दशा के लगते ही अमिताभ के सितारे शिखर छूने लगे।

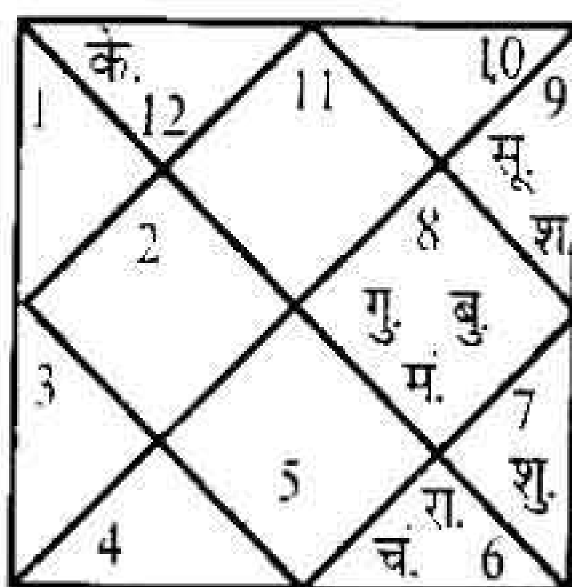
अभिनेता शिवाजी गणेशन





उच्च का शुक्र एवं केन्द्रस्थ बुध ने इन्हें सुन्दर चेहरा-मोहरा दिया। **'बुधादित्य योग'** के कारण इन्हें अपार कीर्ति मिली।

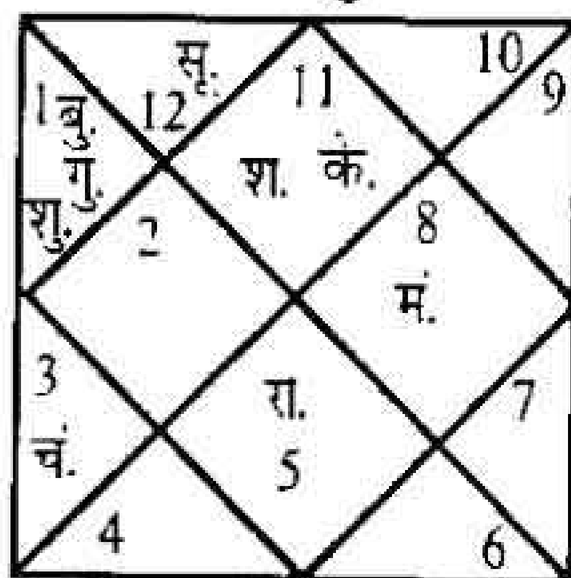
अनिल कपूर





जन्म समय-24.12.1959, जन्म समय-12.00 दोपहर, जन्म स्थान -चेम्बूर। अनिल कपूर की कुण्डली में भाग्य स्थान में स्वगृही शुक्र उन्हें भाग्यशाली बनाया। अभिनय में सफलता दी। स्वगृही मंगल केन्द्र में होने से **'रुचक योग'** बना, जिससे इनको राजातुल्य ऐश्वर्य एवं पराक्रम की प्राप्ति हुई। चंद्रमा जहां **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है। वहां **'कालसर्प योग'** के कारण इनके जीवन में गुप्त शत्रुओं का खतरा है।

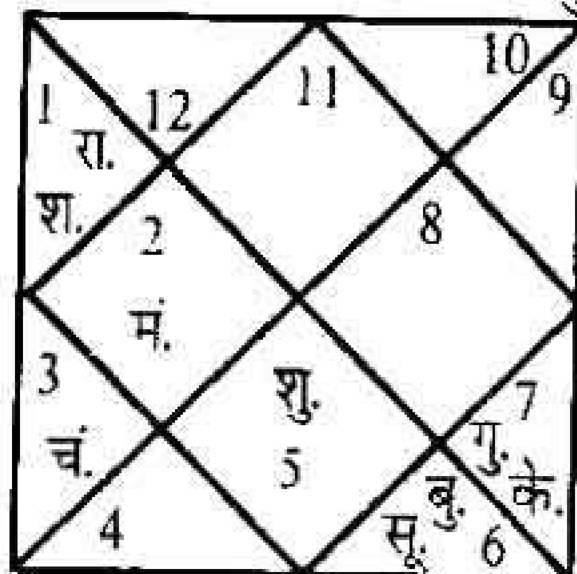
कुन्दनलाल सहगल





जन्म तिथि-11.4.1905, जन्म समय-05.21, जन्म स्थान-जालन्धर। श्री कुन्दन लाल सहगल के कुण्डली में लग्नस्थ शनि के कारण **'शश योग'** बना। मंगल के कारण **'रुचक योग'** बना ऐसा जातक परम पराक्रमी एवं भाग्यशाली होता है।

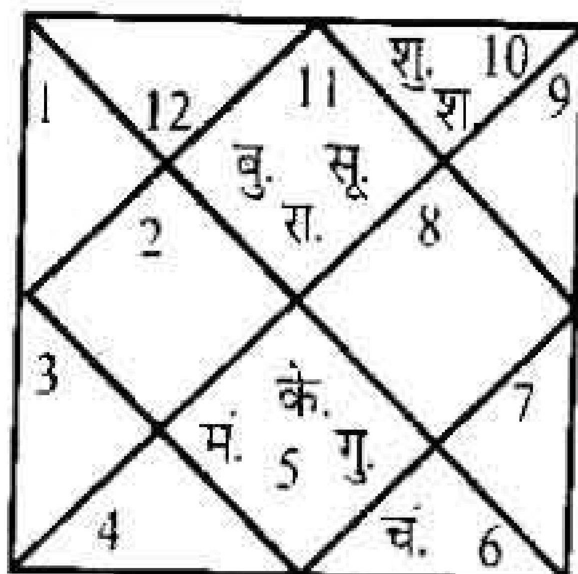
अभिनेता अशोक कुमार (दादा मुनि)





जन्म तिथि-13.11.1911, जन्म समय-14.55 सुबह, जन्म स्थान-भागलपुर (बिहार)। अशोक कुमार फिल्मी दुनियां में दादमुनि के नाम से विख्यात हुए। ये फिल्मी दुनियां में सबसे धनी व्यक्ति माने जाते थे और शायद सबसे लम्बी उम्र के व्यक्ति भी थे। इसका कारण धनेश बृहस्पति का भाग्य में होना। केन्द्रस्थ मंगल का होना भी है।

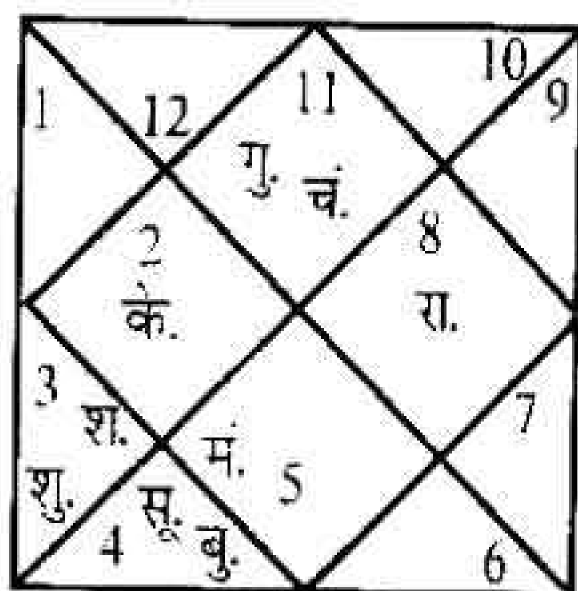
अभिनेत्री मधुबाला





जन्म तिथि-14.2.1933 जन्म समय-5.30, जन्म स्थान-दिल्ली। मधुबाला अपने जमाने की मशहूर हिरोइन रही। वृहस्पति केन्द्र में मंगल केन्द्र में **'कुलदीपक योग'**, **'केसरी योग'** बना रहा है। सूर्य, बुध युति के कारण **'बुधादित्य योग'** बना। शनि स्वगृही द्वादश में होने से **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** भी बना।

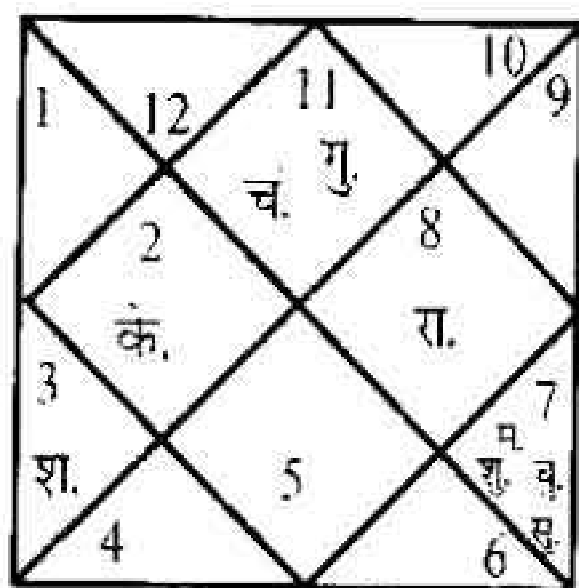
फिल्म अभिनेत्री काजोल





जन्म तिथि-5.8.1974, जन्म स्थान-मुम्बई। लग्न में **'गजकेसरी योग'** के कारण भाग्योदय हुआ। किस्मत चमकी। पंचमस्थ शुक्र ने काजोल को अभिनय के क्षेत्र में सफलता दी।

अभिनेत्री रवीना टण्डन

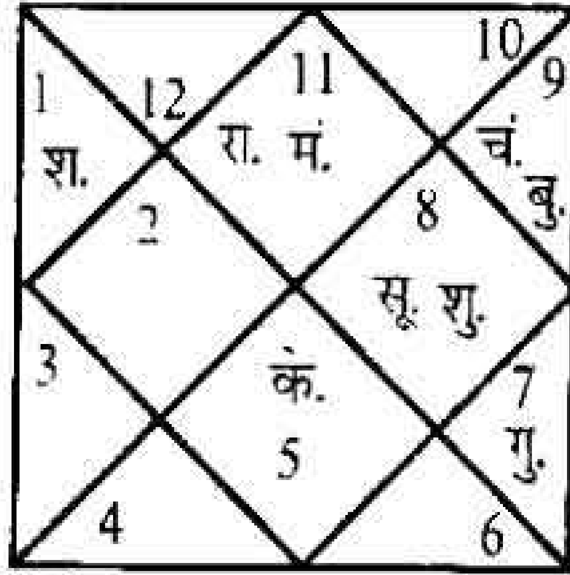




जन्म तिथि-27.10.1974, जन्म स्थान-मुम्बई। लग्न में **'गजकेसरी योग'** काजोल एवं रवीना टण्डन का एक समान है। जिसके कारण रवीना फिल्म लाईन में चमकी। भाग्य में **'नीचभंग राजयोग'** एवं **'चतुर्ग्रह युति'** ने रवीना के किस्मत का पलड़ा बहुत भारी है।

D. चर्चित व्यक्तित्व

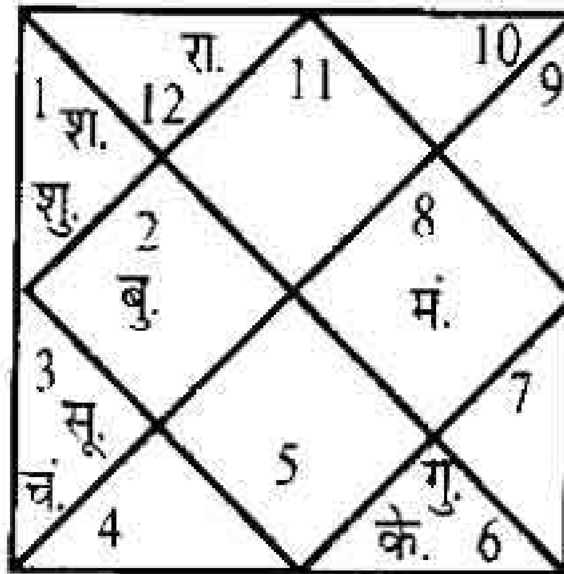
विश्वनाथ आनन्द

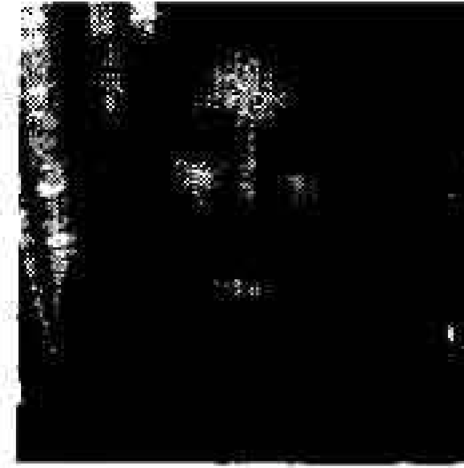




जन्म तिथि-11.12.1969, जन्म समय-12.00, जन्म स्थान-चेन्नई। लग्न में मंगल के कारण इनकी प्रतिभा चमकी। धनेश भाग्य स्थान में लग्नेश शनि पराक्रम स्थान में शनि एवं बृहस्पति का परस्पर दृष्टि संबंध ने इन्हें उच्च पद पर पहुंचाया।

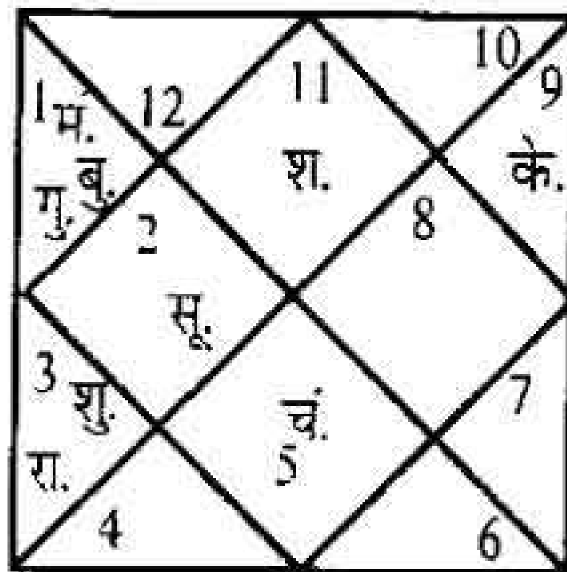
स्टेफी ग्राफ (टेनिस की रानी)





जन्म तिथि-14.6.1969 जन्म समय-22.50, जन्म स्थान-बर्लिन (प. जर्मनी)। यहां मंगल के कारण **'रुचक योग'** बना। **'कुलदीपक योग'** बना। जिससे ये खेल की दुनिया में चमकी। राजयोग कारक शुक्र ने पराक्रम स्थान में जाकर स्टेफी ग्राफ का पराक्रम बढ़ाया। जनसम्पर्क बढ़ाया।

पी.टी. ऊषा (उडन परी) प्रसिद्ध धावक





जन्म तिथि-20.5.1964, जन्म समय-01.00, जन्म स्थान-कालीकट। दशमेश मंगल पराक्रम स्थान में स्वगृही होने से पराक्रम बढ़ा। जनसम्पर्क बढ़ा। लग्न में स्थित स्वगृही शनि ने '**शश योग**' बनाकर इन्हें ओलम्पिक व एशिया खेलों में स्वर्ण पदक दिलाया।

श्री के. एन. अग्रवाल (उद्योगपति, इजिप्ट)

च. रा. 12 11 गु. 10 9
1 2 8
3 मं. श. 5 7
बु. 4 शु. सू. के. 6

जन्म तिथि-17.7.1945, जन्म समय-22. 11, जन्म स्थान-जयपुर। शनि केन्द्रस्थ होकर लग्न को देखने से '**लग्नाधिपति योग**' बना। पंचम भाव में मंगल, बुध उत्तम संतति योग बना रहा है। बृहस्पति द्वादश स्थान में विदेश से धन अर्जित के योग बना रहा है।

धेवरचन्द्र कानूगा (उद्योगपति)

मं. 12 11 बु. शु. 10 9
1 चं. सू. श. रा. गु.
2 8
3 के. 5 7
4 6

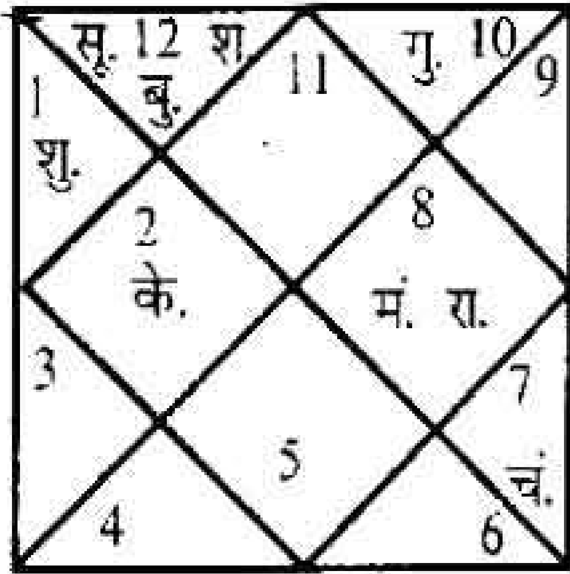
शनिलग्न में होने से '**शश योग**' बना रहा है। धनेश बृहस्पति स्वगृही होने से उद्योग में जबरदस्त लाभ देगा। जातक अरबपति है।

डॉ. मोहनलाल आसदेव

1 12 11 10 9 गु.
रा. 2 8 चं.
मं.
3 शु. 7
5 श. बु.
4 सू. 6 के.

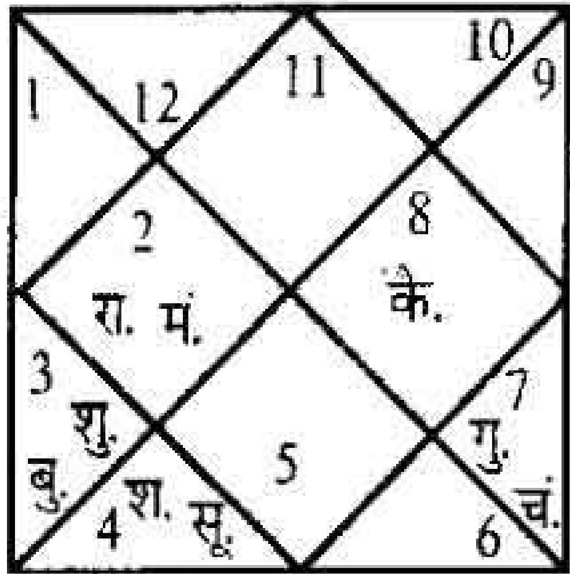
जन्म तिथि-8.10.1948, जन्म समय-16.00, जन्म स्थान-फलौदी। यहां सप्तमेश सूर्य आठवें होने से जातक को विवाह सुख नहीं मिला। सप्तम भाव में शनि व शुक्र ने दो विवाह के योग बनाता है। पर किसी से सुख नहीं। मंगल दशम स्थान में '**रुचक नामक राजयोग**' दे रहा है। जातक उच्च सरकारी पद पर कार्यरत है। '**गजकेसरी योग**' भी लाभस्था में सुखद है।

श्रीमती सुलोचना भारती



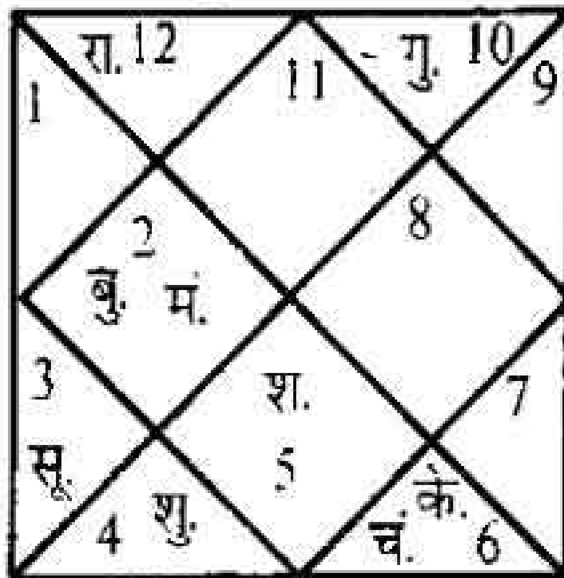
जन्म तिथि-29.3.1937, जन्म समय-5.10, जन्म स्थान-जोधपुर। धन स्थान में **'बुधादित्य योग'** होने से पिता का घर शक्तिशाली एवं प्रभावशाली। धनेश बृहस्पति बारहवें होने से व्यक्तिगत जीवन में धन हेतु संघर्ष रहेगा। मंगल केन्द्र में **'रुचक योग'** बना रहा है। फलत: बड़ी भू-सम्पत्ति का योग बनाता है। मंगल साथ राहु होने से भू-सम्पत्ति के उपयोग में विवाद रहेगा।

पुष्पेन्द्र व्यास (मजिस्ट्रेट)



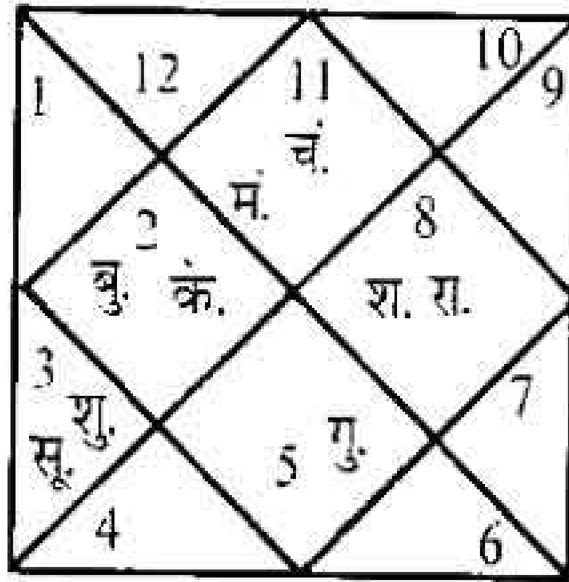
जन्म तिथि-24.7.1947, जन्म समय-20.45, जन्म स्थान-सोजत। बृहस्पति, चंद्र की युति में **'गजकेसरी योग'** बना। सूर्य+शनि की युति से पिता की मृत्यु के बाद जातक का भाग्योदय हुआ।

पुरुषोत्तम मिर्धा (सेशन जज)



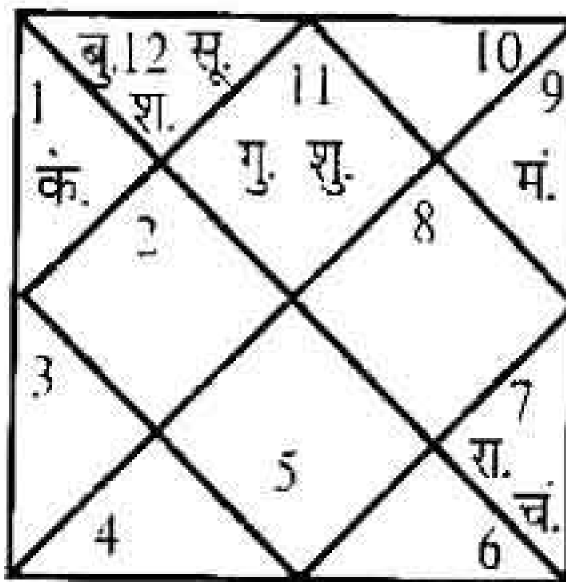
जन्म तिथि-3.7.1949, जन्म समय-22.0, जन्म स्थान-जोधपुर। केन्द्रस्थ मंगल ने राजयोग दिया। धनेश बृहस्पति बारहवें होने से धन प्राप्ति हेतु संघर्ष रहा। चंद्रमा ने **'हर्ष नामक विपरीत राजयोग'** बनाकर जातक को सेश जज का पद व प्रतिष्ठा दी।

सर्वेश्वर भारती



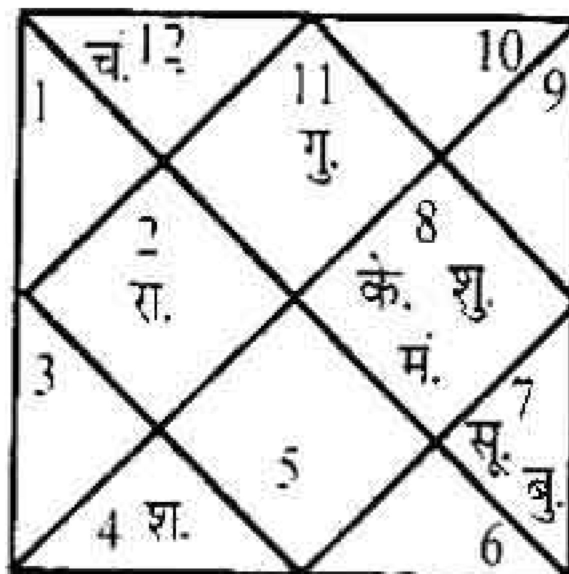
जन्म तिथि-29.6.1956, जन्म समय-23.28, जन्म स्थान-जोधपुर। सप्तमेश सूर्य शत्रुग्रह शुक्र के साथ होने से जातक को वैवाहिक सुख नहीं है। पंचम भाव में परस्पर शत्रुग्रहों की युति विद्या में बाधक रही। चंद्रमा केन्द्र में, बृहस्पति केन्द्र में माता-पिता का पूर्ण सुख दे रहा है।

कैलाशचन्द्र श्रीमाली (सहायक कमिश्नर आयकर)



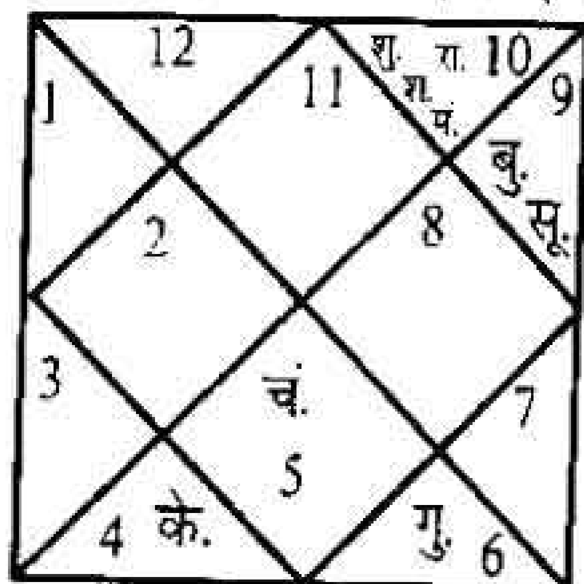
जन्म तिथि-7.4.1939, जन्म समय-04.00, जन्म स्थान-उदयपुर। लग्नस्थ शुक्र व बृहस्पति ने इस कुण्डली को शानदार राजयोग दिया। धनस्थान में सूर्य+बुध की युति ने '**बुधादित्य योग**' बनाया। जातक को विपुल धन दिया, प्रतिष्ठा दी।

श्री माधवकान्त मिश्र (पत्रकार, साधना चैनल)



केन्द्र में मंगल '**रुचक योग**' बना रहा है। जिसके जातक सदैव प्रभावशाली पद पर रहा। लग्न में बृहस्पति बुद्धि धार्मिक बना रहा है। द्वितीय स्थान में चंद्रमा जातक को मीठी व मधुर वाणी दे रहा है। लग्नेश शनि छठे होने से आर्थिक विषमताओं से संघर्ष दे रहा है।

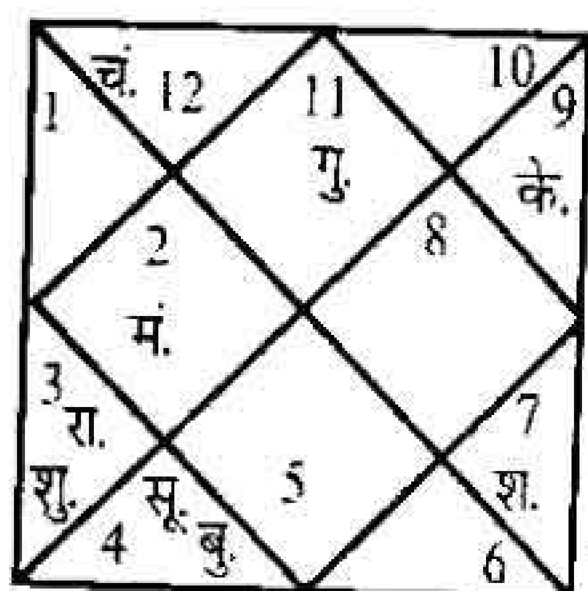
श्री मनोहरश्याम जोशी (पत्रकार स. साप्ताहिक हिन्दुस्तान)





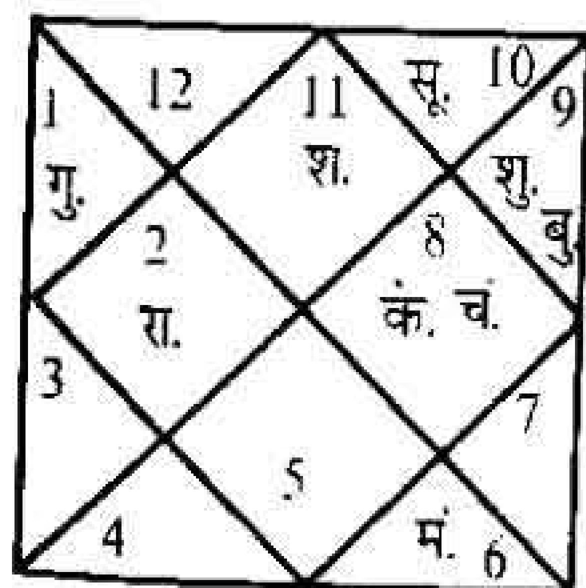
जन्म तिथि-5.1.1934, जन्म समय-10.30, जन्म स्थान-दिल्ली। द्वादश स्थान में मंगल व शनि के कारण '**नीचभंग राजयोग**' बना। '**बुधादित्य योग**' लाभ स्थान में होने के कारण पत्रकार जगत में कीर्ति मिलेगी।

वीर जुगराज बोहरा



जन्म तिथि-30.7.1926, जन्म समय-21.00, जन्म स्थान-जोधपुर। लग्न में 'बृहस्पति' ने सुन्दर शरीर दिया। लग्नेश शनि भाग्यभवन में उच्च का होने से पुष्ट, गठीला व निरोगी शरीर दिया। सप्तमेश सूर्य छठे होने से जातक आजीवक कुंवारा रहा। सूर्य+बुध की युति से बुधादित्य योग के कारण जातक पार्षद पद पर चुना गया।

श्रीमती इन्दिरा विश्नोई



जन्म तिथि-26.1.1965, जन्म समय-9.15, जन्म स्थान-जोधपुर। लग्न में शनि स्वगृही होने से 'शशयोग' बना। सप्तमेश सूर्य बारहवें होने से विवाहसुख मध्यम। पंचमेश बुध की दृष्टि पंचम भाव पर होने से पुत्र व कन्या संतति का पूर्ण सुख है।

श्री जबरदत्त बोहरा (पार्षद)

जन्म तिथि-12.11.1930, जन्म समय-13.45, जन्म स्थान-जोधपुर। केन्द्रस्थ शुक्र ने **'कुलदीपक योग'** बनाकर इन्हें पार्षद पद पर विजयी बनाया। सूर्य, बुध की युति से **'बुधादित्य योग'** बना। मंगल+चंद्र ने **'लक्ष्मीयोग'** पूर्ण बनाया।

अनिल कुमार सक्सेना (सेशन जज)

जन्म तिथि-4.3.1950, जन्म समय-5.30, जन्म स्थान-नसीराबाद (अजमेर)। सूर्य+बुध की युति से बने **'बुधादित्य योग'** ने इन्हें राजयोग दिया व सेसन जज बनाया।

श्री एम.सी. भण्डारी (अध्यक्ष भारत निर्माण)

जन्म तिथि-19.11.1935, जन्म समय-12.54, जन्म स्थान-खाटू (जोधपुर)। बृहस्पति केन्द्र में होने से **'कुलदीपक योग'** बना। **'केसरी योग'** बना। शनि लग्नस्थ होने के कारण **'शश योग'** बना। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होता है। श्री एम.सी. भण्डारी ऐसे ही पराक्रमी व्यक्ति थे। उन्होंने ज्योतिष के क्षेत्र में 'भारत निर्माण' संस्था के मध्यम से बहुत कार्य किया।

❑❑❑